ओ३म्

युद्ध ज्वर विख्यात

इनफ्लूएन्ज़ा प्रातिश्यायिक ज्वर

उसका

सविस्तर वर्णन, लक्षण, प्रतिबन्धकोपाय और चिकित्सा विधि, अनुभूत योगादि

जिसको

कविविनोद वैद्यभूषण श्रीमान् पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य आविष्कारकर्त्ता अमृतधारा

उर्दू हिन्दी देशोपकारक व वैद्यामृत नामक ३ वैद्यक पत्रों के सम्पादक, व विविध वैद्यक पुस्तकों के रचियता ने पबलिक के उपकारार्थ लिखा

और

देशोपकारक कार्य्यालय के कार्य्य कर्त्ताओं

ने

पुस्तक द्वारा प्रेस लाहौर में तथा केवल टाईटल अमृत प्रेस से छपवाकर प्रकाशित किया

प्रथम वार २०००] [मूल्य प्रति जिल्द ॥)

युद्धज्वर

या

इनफ्लूइनज़ा से तबाही ॥

२० जून सन १९१८ के लगभग हम ने सुना कि बम्बई में एक नया रोग आरम्भ हुआ है, एक दम बहुत बड़ा भाग बम्बई का इस रोग में ग्रस्त हो गया है, कई कारखाने बन्द होगए, ट्राम चलती नहीं है, परन्तु हर्ष की बात है, कि मृत्यु इस से नहीं होती है, रोगी निर्बल हो जाता है, और कई दिन काम करने योग्य नहीं होता है, इस ज्वर को पहिले पहिल "जंगी बुखार" के नाम से पुकारा गया, किसी ने पुरइसरार बीमारी (रहस्य पूर्ण रोग) किसी ने खंदकी ज्वर कहा, इस के पश्चात् शीघ्र २ यह समाचार सुनने में आए कि ऐसा ही ज्वर मद्रास, कोलम्बू, कलकत्ता, रंगून, इत्यादि में हुआ है। जिस से समझा गया, कि पहिले यह ज्वर बन्दरगाहों में आया है, अवश्य यह युद्ध से वापिस आने वाले मनुष्यों के कारण से हुआ है, और इस वास्ते इसका असल कारण युद्ध है, युद्ध में मुरदों आदि की सड़ांध से एक प्रकार की दुर्गन्ध फैली है, और वह ज्वर का हेतु है। बाज़े अदूरदर्शी लोगों ने तो यह भी कहा कि कदाचित शत्रू ने कोई गैसें छोड़ी हैं। बन्दरगाहों के पीछे यह देश के भीतर फैलने लगा, आज एक स्थान से इस ज्वर के आक्रमण की खबर आती थी, तो कल दूसरे स्थान से आती थी, परन्तु सब जगह से यह बात भी साथ ही सुनी जाती थी कि थोड़ा समय रोग कोप करके वहां से हट जाता है, और यद्यपि बहुत से लोगों को रोगी कर जाता है, दुर्बल बना जाता है, परन्तु लोग मारते नहीं हैं। इसी बीच एक खबर यह आई कि यह रोग सिरहद्द में भी फैला है, और प्राणनाशक प्रमाणित हो रहा है, इस के पश्चात् अन्य स्थानों से भी इस के प्राण हारक होने के समाचार आने लगे, और यह पता लगा कि

यद्यपि यह ज्वर स्वयम् प्राणनाशक नहीं है; परन्तु इस के साथ निमोनिया आदि अन्य रोग खड़े हो जाते हैं, और वह मृत्यु का कारण बनते हैं, सितम्बर के अन्त में इस रोग के पुनः आक्रमण के समाचार आने लगे, और अक्तूबर में प्रति दिन इस की तबाही के समाचार पढ़ रहे हैं, और ऐसा मालूम होता है कि

प्लेग विषूचिकादि सब इस ने पीछे डाल दिए हैं॥

अक्तूबर के प्रारम्भ से ही बम्बई से समाचार आने आरम्भ हुए कि रोग का दूसरा आक्रमण हुआ है, और बड़ा भयानक है, प्रति दिन मृत्यु संख्या बढ़ रही है। यहां तक कि एक दिन में ७६८ तक अवस्था पहुंच गई यद्यपि अब जब कि २६ अक्तूबर की रात को यह निबन्ध लिख रहा हूं, वह मृत्यु संख्या लगभग १५० के रह गई है, परन्तु बाज़ डाक्टरों का अब यह विचार है,कि संभव है इस का तीसरा आक्रमण हो। क्योंकि इस रोग के प्रथम इतिहास से भी पता लगता है, कि जहां यह रोग फैला है, इस के दो या तीन आक्रमण हुए हैं, परन्तु कई डाक्टरों का यह विचार भी है; कि यह आवश्यक नहीं है, और हम को कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए, ईश्वर करे कि पिछली सम्मति सत्य हो। केवल बम्बई ही नहीं, जिधर से खबर आती है, यही आरही है,; सब जगह स्कूल, कालेज, बन्द हो रहे हैं। कचहरियों तक को कुछ समय के वास्ते बन्द किया जा रहा है। उत्सव बदल गए हैं। ७६८ बड़ी संख्या मालूम होती है, और प्लेग का जिन दिनों वहां बड़ा कोप था, तब भी वहां इतनी मौतें नहीं हुई थीं, परन्तु यह रोग जो तबाही अन्य शहरों में कर रहा है, उस के विचार से बम्बई कइयों से अच्छा रहा है। बम्बई की बस्ती ९७९४४५ है, परन्तु कानपुर जिस की जन संख्या १७८५५७ है उस में ४०० मौतें एक दिन में होने की खबर आचुकी है, पीछे ९०० की खबर आचुकी है देहली में ३५० दैनिक, गूजरांवाला जैसे छोटे कसबा में ८० के लग भग मौतें होती हैं, लाहौर कमेटी की रिपोर्ट इस समय मेरे सन्मुख है, २५ अक्तूबर १९१८ को लाहौर में २४६ मौतें हुईं ७७ हिन्दू, १५५ मुसलमान, और १४ अन्य जातियों के लोग मरे, लाहौर की जन

संख्या २२८६८७ है, जिस के अर्थ यह हैं, कि मृत्यु संख्या लाहौर में बम्बई से बहुत बढ़ गई है। अमृतसर में २५ अक्तूबर को १६० जन मरे। और उसकी बस्ती लाहौर से भी बहुत कम है। लाहौर व अमृतसर में प्रबल प्लेग के दिनों में भी इतनी मौतें कभी नहीं हुई हैं। इस रिपोर्ट को पढ़ कर सब से प्रथम विचार जो मेरे मन में उत्पन्न हुआ वह यह था. कि इस के विषय में आवश्यक ज्ञान जितना शीघ्र हो सके पबलिक को पहुंचाना चाहिए, लाहौर में समस्त अक्तूबर मास में इस रोग का कोप रहा है, कई रोगियों की चिकित्सा करने का अवसर हुआ, स्वयम भी इस रोग में ग्रस्त हुए, घर में औरों को हुआ, इसी प्रकार शहर में अपने मित्र वैद्यों व हकीमों को तजरुबे हुए, उन से भी वार्तालाप होता रहता है, पुस्तकें भी देखीं, वृत्तान्त भी पढ़े, अब हम इस योग्य हैं, कि पबलिक की इस विषय में कुछ सेवा कर सकें, चारों ओर से देशोपकारक के ग्राहक यह लिख रहे हैं, कि हम को इस विषय में मालूम नहीं है। कृपया इस पर सविस्तार लिखो, जो कोई मनुष्य मिलता है, वह इस के विषय में कई प्रश्न करता है, इस वास्ते हम ने अपना कर्तव्य जाना, कि इस समय तक जितना इस रोग सम्बन्धी ज्ञान है, वह पबलिक तक पहुंचाया जावे, न केवल चिकित्सक वरन् साधारण जन भी इस से लाभ उठावें, इस रोग ने तो गजब कर दिया है, एक दिन के भीतर २४६ मौत श्मशान के हाते की दीवारें तोड़ दी गई हैं, दग्ध करने को स्थान नहीं मिलता है, कबरें खोदने को स्थान नहीं है। बाज़ समय तो इक दम बीसियों अर्थियां एक दूसरे के पश्चात् जाती दिखाई देती हैं। जिन को देख कर गम्भीर से गम्भीर हृदय मनुष्य कांप जाता है। कई अनाथ लोथें उस समय तक पड़ी रहती हैं, जब तक शहर की सेवक मंडलियों में से कोई आकर उनको नहीं ले जाता है। शहर में सेवक मण्डलियां बराबर कामकर रही हैं, औषधी देती हैं, सेवा करती हैं, मुरदे ले जाकर दाह करती हैं। कमेटी की ओर से ४ सफरी हस्पताल शहर के भीतर घूमकर गरीबों को देखते और उसी जगह उनको मुफ्त दवाई देते हैं। गरीबों को दूध मुफ्त दिया जाता है, आर्य्य समाजों की ओर से सेवा कार्य्य हो रहा है,

हिन्दू सरविंग कलब आदि के सभासद सब काम कर रहे हैं, तन, मन, धन, जिस से भी कोई कर सके उसको बराबर इस समय करनी चाहिए। ऐसा रोग कम से कम हमारे देखने में तो नहीं आया है ! इतनी मौतें भी कभी नहीं देखीं, ज्वर की यह दशा है, कि कदाचित ही कोई घर होगा जिस में इस समय तक कोई रोगी न हुआ हो। बाज़ घरों में कोई पानी देने वाला नहीं है। सब बीमार पड़े हैं, जब एक को यह रोग हो जाता है, तो बारी २ सब को होने लगता है, बाल वृद्ध, स्त्री पुरुष कोई भी इस के पंजे से नहीं बचता, कोई मित्र मिल जावे कुशल पूछने पर कोई नहीं कहता है कि उस के हां सर्वथा कुशल है, शहर को छोड़ कर बाहिर से भी ऐसी ही खबरें आ रही हैं, जिस नातेदार का पत्र आता है, यही होता है, कि घर के सब मनुष्य रोगी पड़े हैं, छोटे २ ग्रामों में जहां वर्ष भर में १—२ मौतें हुआ करती हैं, वहां दैनिक १—२ मौतें हो रही हैं, और रोगियों से तो कोई घर खाली नहीं है। अखबार में पढने से यह मालूम होता है, कि भारतवर्ष का कोई भाग भी इस समय इनफ्लूएनज़ा से बचा हुआ नहीं है, किसी जगह कम किसी जगह अधिक परन्तु मौजूद सब जगह है, कभी एक शहर से अधिक मृत्यु होने की खबर आ जाती है, कभी दूसरे शहर से, आश्चर्य तो यह है कि

कोठी और झोपड़ी

कोई इस से पंजे के बचा नहीं है, लोग विचार करते थे, कि शुद्ध वायु और कोठियों में रहने वाले मनुष्यों पर संसर्गिक रोग का प्रभाव नहीं होता, परन्तु यह नियम भी इस के आगे शिथिल हो गया है, राजे, नव्वाब, बड़े २ डाक्टर, वकील, बैरिस्टर, सेठ, साहूकार, कोई इस से नहीं बचा है, लाहौर में तो हम देख रहे हैं, कि जैसे शहर में तंग घर रोगियों के लिए चारपाइयां बिछी हैं, वैसे ही खुली कोठी वालों का हाल है; उच्च पदस्थ लोगों में मौतें कम हों तो हों, परन्तु बचे हुए नहीं हैं, स्वयम राय बहादुर डाक्टर बालकृष्ण साहिब कौल जिनकी कोठी खूब खुली हवादार नगर से बाहर है उनका प्रिय पुत्र इसी रोग में ग्रस्त होकर स्वर्ग वास हो गया, दयालसिंह कालेज का एक प्रोफ़ेसर उस की स्त्री,

और वह स्वयम एक और प्रोफ़ेसर की स्त्री, डाक्टर मीर हिदायत उल्लाह प्रोफ़ेसर के भाई जो बाहिर रहते थे इस समय तक इस भयानक रोग के शिकार होचुके हैं बीसियों और बड़े नाम लिए जासकते हैं। बाहिर से भी सोढ़ी निहालसिंह लुधियाना, ला० मेलाराम खन्ना सेक्रेटरी म्यूनसिपिल कमेटी जालन्धर, ग्रा करीम जूनियर सक्रेटरी गवर्नमेंट पंजाब, ला० शंकरदास बी० ए० मुन्सिफ भक्खर, पं० गुलाबचन्द प्लीडर रावलपिण्डी, शेख हबीबुल्लाह इन्स्पैक्टर पुलीस अमृतसर, इत्यादि सैकड़ों श्रीमानों की मृत्यु की खबरें आरही हैं, नित्य अखबार में नए से नए नाम पढ़े जाते हैं, और कोठियों वालों को अब पता लगा है कि हम शहर से बाहिर जाकर अवश्यमेव बीमारियों से सुरक्षित नहीं हो गए हैं, जब राजाओं के महलों को नही छोड़ा और कल के अखबार में एक राजा की मृत्यु की खबर पढ़ चुके हैं, तो हमारी कोठिया उन के सन्मुख क्या वस्तु हैं॥

एक बात अवश्य सन्तोष जनक है, कि रोग का प्लेगादि की भांति

घोर भय

अभी नहीं हुआ है, और लोग यह नहीं समझते कि जहां ज्वर हुआ हम मर जावेंगे। नहीं तो न जानें क्या दशा होती, मुरदे भी उठाकर ले जाने वाले मिलते या नहीं। यदि प्लेग से इतनी मौतें होतीं तो शहर इस समय तक अर्द्ध से अधिक इधर उधर भाग गया होता, रोगियों को कोई आश्रय न मिलता॥

पिछले दिनों लाहौर में प्लेग का इतना भय था, मानों प्रत्येक को मृत्यु दिखाई देती है। परन्तु इस समय प्लेग से १२ गुणा अधिक मृत्युएं होतीं हैं, आज २५० मनुष्य एक दिन में हमारे भीतर से निकल गए हैं, शोक है, दुःख है, पश्चाताप है, परन्तु वह भय नहीं है, कि लोग अपने सम्बधियों को छोड़ २ भागें। इस का कारण यह है, कि यह प्लेग व विषूचिका की भांति प्राण हारक नहीं है, प्लेग में सौ मनुष्य ग्रस्त हो जावें, तो ८८—९० तक का बचना कठिन होता है। परन्तु यदि इनफ्लूइनज़ा से सौ मनुष्य

बीमार हों, तो ९० से अधिक बच रहते हैं। ५—१० चल बसते हैं, २४६ मौतें होने का यह मतलब है कि सहस्रों रोगी हैं, डाक्टर टरनर बम्बई के हेल्थ अफ़ीसर ने डाक्टरों के एक जलसा में वर्णन किया कि १२ से २२ सितम्बर १९१८ तक बम्बई में २४००० मनुष्य रोगी हुए, जिन में से १३२७७ मरे, मानों प्रति सैकड़ा लगभग ५ मरे, जिन दिनों अधिक मृत्युयें होती थीं, उन दिनों सम्भव है अधिक मरे हों, यदि द्विगुणी संख्या भी कर दें तो १० प्रति सैकड़ा मृत्यु हुई होंगी। इस का मतलब यह है कि प्लेग व विषूचिका की भांति जिस को यह रोग हो जावे, वह जीवन से निराश नहीं हो जाता है। न यह सार्वजनिक विचार है, कि इस रोग के हो जाने से प्राण नहीं बच सकेंगे, इस वास्ते वह घोर भय नहीं है। लाहौर में कई परिवार मुझे मालूम हैं; जिन के बहुत से मनुष्य इस रोग में ग्रस्त हो चुके हैं। परन्तु अब सब स्वस्थ हैं। कुछ हो इस समय भारतवर्ष में यह रोग तबाही कर रहा है, कई काम बन्द हैं, असंख्य मनुष्य मर रहे हैं, जो बच रहे हैं, वह इतने निर्बल हुए हैं, कि बाजे तो महीनों अभी पिछली दशा पर न आ सकेंगे। शोक निर्बल भारतवर्ष अधिक निर्बल हो रहा है। ओहो! देश के कैसे बुरे दिन हैं। युद्ध है, दुर्भिक्ष है, प्लेग ने पीछा नहीं छोड़ा है, और अब यह इनफ्लूइनज़ा दम नहीं लेने देता है, इसी पर भरोसा है:—

"दयानिधि पल में करत निहाल"

नाम ॥

जिस समय यह रोग पहिले ही पहिल बम्बई में आरम्भ हुआ, तो इस का नाम "वार फीवर", या "युद्ध ज्वर" रक्खा गया। कई लोगों ने इस को "पुरइसरार बीमारी" के नाम से पुकारा, परन्तु जिस समय यह भली भांति फैल गया तो प्रतिष्ठित डाक्टरों ने प्रगट किया यह नाम वास्तविक मिथ्या थे, और यह "इनफ्लूइनज़ा" Influenza है, जो कि कई बार यूरुप में आगे फैल चुका है। भारतवर्ष में भी यह सन १८८९ में फैला हुआ था, और अब फिर जगत में फैला है। इस का असल नाम मालूम हो जाने पर

भी "पुरइसरार बीमारी" गुह्य रोग नाम उचित ही मालूम होता है, सचमुच इस के भीतर ऐसे २ गुप्त भेद वर्तमान हैं कि बुद्धि दंग रह जाती है। यथा आज तक यह पता नहीं लगा है कि यह रोग फैलता कैसे है। तत्ववेता कहते हैं, कि रोगी के मुख या नाक की वायु से दूसरे मनुष्य पर इस का प्रभाव होता है, परन्तु इस प्रकार तो और कई रोग भी फैलते हैं, फिर इस का एक देश ही नहीं, वरन् एक समय में सम्पूर्ण जगत पर कैसे प्रभाव हो जाता है, आज बम्बई से खबर आती है, रोग फैल रहा है, कल मद्रास से, परसों कलकत्ता से, चौथे दिन प्रयाग से, ५ वें दिन हैदराबाद से, और इसी प्रकार बढ़ते २ इस ने समस्त भारत वर्ष पर अधिकार कर लिया, कोई प्रांत कोई नगर, कोई कसबा, कोई ग्राम, इस से बचा हुआ दिखाई नहीं देता है। यदि यह कारण मान लेवें, कि रेल में मुसाफिर एक स्थान से दूसेर स्थान में आते ही रहते हैं, तो फिर यह समाचार क्यों आते हैं कि मास डेढ मास इस का वेग रह कर झट आगे चला जाता है क्या उस समय लोग नाक मुख से श्वास लेना बन्द कर देते हैं? बम्बई में इतना वेग अक्तूबर के आरम्भ में हुआ अन्त में तुरन्त मिट गया लाहौर में इतना वेग है, कि २५ तारीख को २५० मृत्यु हुई हैं, परन्तु अब तत्ववेताओं की यह सम्मति है, कि तुरन्त यह कम होना आरम्भ होगी, क्योंकि एक मास हो गया है, और ६ सप्ताह इस के वेग की अवधि है। अब यह जाता रहेगा यह सम्भव है, कि फिर इस का प्रभाव हो जावे। जब यह इस प्रकार एक जगह होता वहां से झट दूसरी जगह चला जाता, तो ऐसा ज्ञात होता, था, कि कोई गुह्य रोग है जो देश में भ्रमण करने के वास्ते निकला है। और देखिए प्लेग विषूचिका आदि मरी रोगों में यह समझा जाता है, कि स्थान त्याग बड़ा भारी उपाय उस से बचने का है, लोग मकानों को छोड़ कर खुले मैदानों में चले जाते हैं पृथक् स्थानों मे रहते हैं, परन्तु यहां एकान्त निवास का भी कोई प्रश्न नहीं, भीतर बाहिर सब जगह यह रोग वर्तमान है। पहाड़ों को भी इस ने नहीं छोड़ा, राय बहादुर कुंजबिहारी थापड़ साहिब की पुत्री का देहान्त सोलन पहाड़ पर हुआ था, पिछले दिनों जब हम डैलहौज़ी में थे तो यह ज्वर वहां पर्य्याप्त रूप से फैला हुआ था,

आज कल शिमला में इस के होने की खबरें आ रही हैं। एक बात और भी विचित्र है, कि एक आक्रमण दूसरे को रोक नहीं सकता है। शीतला किसी को एक बार हो जावे तो चिरकाल तक वह अपने आप को उस से सुरक्षित समझता है, प्लेग भी जिन को एक बार हो गई, बहुत कुछ सुरक्षित हो जाते हैं। परन्तु इसका विचित्र हाल है, ऐसे केस हम ने देखे हैं, कि एक आक्रमण अभी समाप्त हुआ अभी २—४ दिन भी नहीं बीते कि पुनः आक्रमण हो गया, किसी को तीसरा आक्रमण भी हुआ, इस वास्ते यह रोग में ठीक नहीं है, कि एक आक्रमण दूसरे से बचा सकता है, और देखिए बम्बई के डाक्टररौ (Rcw) साहिब ने जब यह रोग फैला तो इस के फैलाने वाले कीटाणुओं को जानने का उद्योग किया, डाक्टरों में स्वीकार किया जा चुका है, कि रोग वायु सम्बन्धी नहीं, केवल प्रबल संसर्गिक है, और इस का विष बहुत शीघ्र फैल जाता है, और एक से दूसरे को लगता है। तब इस के कीटाणु अवश्य होने चाहियें। अतः डाक्टर साहिब ने नाक व मुख का कफ जो रोगी त्याग करते थे, लेकर उसकी परीक्षा की, परन्तु उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही, जब कि ज्ञात हुआ, कि कीटाणु तो बहुत प्रकार के मिलते हैं, परन्तु सब इस भांति के जैसे जुकाम, निमोनिया, इत्यादि। कई छाती के रोग भी पाए जाते हैं। ऐसा कोई कीटाणु नहीं मिला जिस को वह केवल इस रोग का कीटाणु कह सकें, और प्रथमाक्रमण बीत भी गया, जब पुनः आक्रमण हुआ तो फिर उन्हों ने अनुसन्धान आरम्भ किया, और उनको ज्ञात हुआ कि रोग के कठिन वेगों में रोगियों के मूत्र मे बहुत सा अलब्यूमन (albumen) (ओज) निकलना आरम्भ होता है, देखिए उनको इस अलब्यूमन से कुछ मिलता है या नहीं, अनुसन्धान से ज्ञात हुआ कि उस के भीतर एक विशेष प्रकार का कीटाणु है जो पहिले कभी नहीं देखा गया है। और डाक्टर साहिब ने निश्चय किया कि इस प्रकार के कीटाणु रोग के हेतु हैं, अभी अनुसन्धान हो रहे हैं, और अन्तिम क्या निश्चय होगा कहा नहीं जा सकता है। इस में कुछ संदेह नहीं कि ईश्वर सृष्टि में

नियम और सिद्धान्तों से बंधे हुए काम हो रहे हैं, और मनुष्य का कर्तव्य है कि जो आपदा आवे उसकी निवृत्ति के उपाय सोचे, ईश्वर ने मस्तिष्क इसी वास्ते प्रदान किया है, परन्तु इस बात को भूलना नहीं चाहिए कि—

हमारे ज्ञान व विद्या से परे कोई और ज्ञान है।

हम आज कल अनात्मीय काल में ईश्वर पर बहुत कम विश्वास रखते हैं। अपनी विद्या बुद्धि को सब कुछ करा सकने वाली समझते हैं, परन्तु सब कुछ नियमानुसार होते हुए भी बहुत से ऐसे नियम हो सकते हैं, जो हमारी समझ में न आवें, हम अज्ञानता के कारण ऊपरी दृष्टि से देखते हैं, परन्तु इनके कई अध्यात्मिक कारण भी हो सकते हैं॥

आयुर्वेदिक ग्रन्थों में सदैव इस बात का ध्यान रक्खा गया है. वैद्यक ग्रन्थ लिखते हैं कि वैद्य का कार्य्य जीवन देना नहीं है वरन् स्वास्थ्य देना है। आयु का स्वामी अन्तर्य्यामी ईश्वर है। और जीवन मरण उस के हाथ में है जनोपदोदध्वंस (ऐसे रोग जिन से बहुत से मनुष्य इक दम मर जाते हैं) ईश्वरी कोप के रूप में आते हैं और सहस्रों मनुष्यों को ले जाते हैं। यहां पहुंच कर हमारे सारे सिद्धान्त रह जाते हैं। एक रोगी पर बड़े से बड़े डाक्टर व वैद्य लगे होने पर वह बच नहीं सकता, दूसरे को कोई पानी देने वाला नहीं वह बच जाता है, कई वैद्यों व हकीमों का यह दावा है; कि उन की औषधि से ज्वर एक दिन के भीतर उतर जाता है, निमोनिया कदापि नहीं होता है, यदि यह सत्य है तो फिर २५० मनुष्य श्मशान और कबरों की ओर कन्धों पर लदे हुए क्यों जा रहे हैं, मान लो कि उन का कथन सच भी हो, तो भी उन की औषधि केवल उन लोगों तक पहुंच सकती है जिन की आयु बाकी है। दूसरों को वह औषधि सेवन करने का ध्यान भी न आवेगा। औषधि करना हमारा कर्तव्य है, रोगी के कष्ट को दूर करना वैद्य का काम है, परन्तु हमारा इस विषय में दृढ़ विश्वास है, कि सब कुछ करते हुए यदि आयु समाप्त हो चुकी है तो कोई औषधि सहायक नहीं हो सकती है। बहुत से लोग इस

बात को नहीं मानते हैं, उनकी इच्छा । हमरा जो विचार है वह हमने लिखा है, चरकसंहिता में जनपदोदध्वंस अध्याय में ऋषि कहते हैं; कि इस प्रकार के रोगों का मुख्य कारण अधर्म है । जब हमारे कर्म्म खोटे हो जाते हैं, तो ईश्वर कोप हमारे ऊपर पड़ता है । रक्षाविधि सब अंकित है, परन्तु मुख्य कारण इस का अधर्म बतलाया है गौण कारण पीछे आते हैं । और हम लोग गौण कारणों का ही सदा ध्यान रखते हैं । वहां से कुछ उद्धृत करना मनोरंजनता से खाली न होगा ॥

चरक संहिता में

अग्निवेश भगवान् आत्रेय से पूछते हैं, कि हे महाराज ! वायु अग्नि आदि बिगड़ने का क्या कारण है, कि जिस से यह बिगड़ कर महामारी रोग उत्पन्न कर के देश को नष्ट कर देते हैं ?

भगवान आत्रेय बोले हे अग्निवेश इन मरी रोगों का मुख्य कारण तो अधर्म्म है, और इस अधर्म्म का मूल कारण पूर्व जन्म के पाप हैं, और पापों का कारण अज्ञान अर्थात अविद्या है, जब देश के नेता धर्म्म को छोड़ कर पापी जीवन व्यतीत करते हैं तो उनके अनुगत, और उन अनुगतों के अनुगत और ग्रामों; कसबों तथा नगरों के निवासी व्यापार करके उदर पालने वाले लोग भी इस अधर्म्म को बढ़ाते हैं, तब वह पाप बढ़ते २ धर्म्म को छिपा देता है, इस के पश्चात् उन पापीजनों को देवता भी छोड़ देते हैं, तब ऋतु बिगड़ जाते हैं । इस कारण* से उचित समय पर कभी बरसता है कभी नहीं बरसता । कभी न्यून कभी अधिक, कुसमय बरसता है वायु ठीक नहीं चलती, भूमि बिगड़ जाती है । पानी सूख जाते हैं, औषधियां अपना प्रभाव त्याग देती हैं, अतः इन देश, काल, जल वायु के दोषों से और परस्पर इकट्ठा खान पान से देशों के देश नष्ट हो जाते हैं ॥

इस प्रकार भगवान आत्रेय जी महा मारियों का मुख्य कारण हम लोगों का पाप प्रगट करते हैं । और वह मानो ईश्वर की ओर से उपदेश है जिस को हम कोप के नाम से पुकारते हैं ॥

---

*नोट—पाठक देखेंगे कि इस महामारी के फ़ैलने के यही पूर्व कारण हुए हैं ॥

कलियुग में हम अपने से महान शक्ति को भूल कर केवल अपनी शक्ति पर भरोसा करते हैं। इस वास्ते भी घोर चिन्ता होती है, और महा दुखी रहते हैं। यदि हम उचित सावधानी करें, और साथ ही ईश्वर पर विश्वास रक्खें, तो हम को इतना दुःख न हो न इतनी दौड़ धूप हो, वही उत्पन्न करने वाला और वही मारने वाला है। उसी पर विश्वास रक्खो, हे मनुष्य! तू किस बात पर अभिमान करता है। अमेरिका वालों ने कहा कि सामुद्रीय चटानों से जहाज़ टकराकर टूट जाते हैं, ऐसा जहाज़ बनाना चाहिए जो चट्टानों से टूट न सके, कोई सामुद्रिय चटान उस को डुबो न सके। करोड़ों रुपयों के व्यय से ऐसा जहाज़ तैयार हुआ, जिस को मानुषी मस्तिष्क ने सर्वथा सुरक्षित माना, जिस दिन उस ने चलना था, संसार के बड़े २ लोग उस में पहिली यात्रा करने के लिए आए, परन्तु क्या हुआ पहिले ही दिन जब यह समुद्र में चला एक बरफ का टीला तैरता हुआ आया और इस ज़ोर से उस जहाज़ के साथ टकराया कि जहाज़ चकनाचूर हो गया। और संसार के बड़े २ मस्तिष्क समुद्र में डूब मरे। इस के विरुद्ध जब हम ग्वालियार गए वहां सुना था कि एक पत्थर कारीगर चीर रहे थे, उस के मध्य थोड़ी सी जगह खोखली थी, वहां से एक जीवित कीट निकला, जिस को देख कर सब लोग हैरान हो गए। रोग फैलता है, ईश्वर भक्त रोगियों की सेवा करते हैं, अहर्निश उन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में प्रवृत रहते हैं, वह ईश्वर पर भरोसा रखते हैं। और अपने कर्तव्य से नहीं हटते, अविश्वासी लोग डरते इधर उधर भागते फिरते हैं, उनको रात को सुख न दिन को चैन है। फिर भी जिन की आ गई है वह डर कर भागते हुए भी पकड़े जाते हैं। वरन् ज्ञात तो ऐसा होता है; कि मृत्यु से जो डरते हैं, मृत्यु अधिकतर उन्हीं को पकड़ती है॥ out of subject.

हां मैं किधर से किधर चला गया, मैं वर्णन कर रहा था, कि वास्तविक यह रोग अधाऽवधि गुह्य ही प्रमाणित हुआ है। और किसी ने पहिले ही से इस का नाम 'गुह्य' रक्खा वह बहुत ठीक है। परन्तु असल नाम इसका जैसा कि डाक्टर करनैल

कौलग्लिस्टन (Col Glen Liston) ने वर्णन किया इनफ्लूएनज़ा ही है। और—

यह कोई नवीन रोग नहीं है

वरन् पहिले भी होता रहा है। जैसाकि हम अभी वर्णन करेंगे, हम स्वयम् देखते हैं कि यद्यपि हमने जब से चिकित्सा आरम्भ की इस प्रकार की मरी कभी नहीं देखी, तो भी ऐसे रोग देखे हैं, जिन को खांसी, जुकाम, ज्वरादि होता था, जिस से ख्याल होता है; कि यह ज्वर कोई विशेष प्रकार का नवीन नहीं है। अलबत्ता इस का व्यापक रूप में होना विशेष बात है। एक मनुष्य भोजन कुपथ्य करता है, उस को वमनातिसार होते हैं, उदरशूल पिण्डलिशूल होते हैं विषूचिकावत उसका इलाज करते हैं, और उसको विषूचिका कहते हैं, परन्तु यही विषूचिका जब व्यापक रूप मरी के रूप में फैलता है, उस समय कितना भय होता है, और कितना शीघ्र फैलता है, ऐसे ही इन-फ्लूइनज़ा हम को भयानक मालूम हो रहा है, इस वास्ते कि यह महामारी के रूप में फैला हुआ है, हम को ऐसा प्रतीत होता है कि वात श्लेश्मक ज्वर के लक्षण इस में मिलते हैं और यही जब साधारण अवस्था में हम को मिलता था हम उस को इसी नाम से पुकारते थे, केवल एक बात का अंतर है कि जहां ज्वर में कफ होगा वह बहुत वेगवान नहीं होगा, परन्तु यह बहुत वेगवान् हो जाता है। १०५ और १०६ दरजे तक हम ने इस को देखा है। इस का कारण हम को यह मालूम होता है, कि इस के भीतर वबाई विष वर्तमान है, इस वास्ते ज्वर बहुत वेगवान हो जाता है इसी विचार को लेकर बाज़े इस को वातश्लेष्मक नहीं कहते हैं। अतः इस मरी रूप का नाम भी हम को दूसरा रखना चाहिए। हम ने तो इस के भीतर खांसी प्रायः जुकाम आवश्यक होने पर इसका नाम "प्रातिश्यायिक ज्वर" रक्खा है। कई युनानी भिषग इस को पहिले ही "तप नज़ली" के नाम से पुकारते हैं। अतः यही नाम इस के होने चाहिएं। डाक्टरी इनफ्लूइनज़ा, वैद्यक प्राति-श्यायिक ज्वर, और युनानी तपनज़ली। यदि कोई वात कफ ज्वर वबाई पुकारे तो भी ठीक मालूम होता है, वैद्यों में कोई इस को वातश्लेष्मक ज्वर कहते हैं, और कोई सन्निपात भी कह देते हैं।

और प्रत्येक घोर ज्वर को सन्निपात कह देने की हम में प्रथा ही है। इस को छोड़ कर यह पर्य्याय नाम रख लेने में हानि नहीं है। एक प्रकार के चिकित्सकों की भाषा एक होनी चाहिए। इनफ्लूइनज़ा नाम इटली वालों का रक्खा हुआ है, जब १७ वीं शताब्दी में इटली में यह फैला तो उन्हों ने इस को तारों के प्रभाव से माना क्योंकि उन को कोई कारण मालूम न होता था Inflwnea से शब्द Influenza बनाया गया, और यही नाम इस समय तक प्रसिद्ध है, इस से पूर्व विविध नाम इस के रक्खे जाते थे, अत: १५ वीं शताब्दी में आयरलैन्ड में इस के होने का वर्णन एक पुस्तक में आता है, जहां इस का नाम Tuncha लिखा है। जिस के अर्थ सरदी के जुकाम के हैं। एक दूसरी जगह Slaodan नाम लिखा है, इस के अर्थ सरदी, जुकाम खांसी के हैं, ऐसे ही एक जगह Creathum क्रीथम नाम से इस रोग के लक्षण मिलते हैं। जिस के अर्थ कम्प के हैं। सन १५१७ में जब सारे यूरुप में यह रोग फैला तो उस समय के इतिहासवेत्ता डाक्टर थामस शार्ट ने इस का नाम काकोलोची (Coccolichi) रक्खा, ऐसे ही और नाम भी दिए गए, परन्तु अन्तिम यही नाम प्रसिद्ध हुआ॥

इतिहास।

इनसाईक्लोपिडिया ब्रिटानीका सन १८९८ की जिल्द १३ में इस रोग के वर्णन में यह लिखा है "प्राचीन चिकित्सकों की पुस्तकों में इस रोग का वर्णन है, परन्तु इस का ठीक वर्णन अधिकतर तीन शताब्दी के भीतर लिखी हुई उन लेखकों की पुस्तकों में मिलता है, जिन्हों ने महामारी रोगों पर पुस्तकें लिखी हैं। विविध लेखकों के लेख इस रोग के विषय में मिलते हैं, एक बात सब के लेखों से मालूम होती है, कि इनफ्लूइनज़ा अचानक आरम्भ हो जाता है, तुरन्त दूर २ तक फैल जाता है, और फिर शीघ्र ही शान्त भी हो जाता है। इनफ्लूएनज़ा के बड़े २ आक्रमण सन १७६२, सन १७८२, सन१८०३ सन१८३३, सन१८३७ सन १८४७, सन् १८८९ ई० में हुए हैं। इन आक्रमणों में प्रायः यह एशिया के किसी भाग से उत्पन्न हुआ, और फिर वहां से यूरुप

में जाकर अमेरिका की ओर चला गया, कई आक्रमणों में केवल ६ सप्ताहों में इनफ्लूइनजा सम्पूर्ण यूरोप में फैल गया था। जहां यह प्रगट हुआ सम्पूर्ण पुरुषों को चाहे वह किसी अवस्था के हों इस का प्रभाव हुआ है, कई बार यह उन जहाजों में फैल गया है जो कि किनारे से बहुत दूर होते थे। और जिनका कोई सम्बन्ध किनारे वालों से न था, और फैला भी इतना कि उन के मनुष्यों को काम के अयोग्य कर दिया। सन् १७८२ में इस के कई उदाहरण मिले............इस विचित्र रोग के कारण विविध बताते रहे हैं, इटली वालों ने इस को तारों के प्रभाव से जाना, कइयों ने यह विचार किया कि पृथ्वी में कोई परिवर्त्तन होकर उस से विष फैल जाता है, कइयों ने यह कहा कि ऋतु का विशेष दोष इस का हेतु है, परन्तु प्रत्येक ऋतु और प्रत्येक प्रकार की भूमि में इस रोग का होना इन कारणों को खंडित करता है। जो कारण बहुधा माने गये हैं वह यह हैं कि वायु मंडल में कोई विष उत्पन्न हो जाता है, परन्तु इस की असलीयत कुछ मालूम नहीं है, इस पर कई विचार प्रगट किये गये हैं, कोई कहता है कि वायु के विद्युत दशाओं में दोष आ जाता है, कोई कहता है ओज़ोन वायु में बहुत बढ़ जाता है, परन्तु परीक्षा से किसी का प्रमाण नहीं मिला, अनुभवों के अनुकूल कारण यह मालूम हुआ कि इनफ्लूइनजा में अन्य मारी रोगों के भान्ति वायु मंडल में विशेष प्रकार के सूक्ष्म कीटाणु या विष वर्त्तमान होता है, जो कि दूर २ फैले हुए होते हैं, इन के अतिरिक्त जब वह किसी मनुष्य के शरीर में जाकर प्रभाव करते हैं, तो वहां बढ़ कर श्वास आदि से रोग को दूसरों तक और भी वेग से पहुंचाते हैं। इस में कोई सन्देह नहीं कि यह रोग संसर्गिक है, इस रोग का इलाज वैसा ही है जैसा कि हम ने प्रतिश्याय के प्रसंग में वर्णन किया, परन्तु विशेष रूप से इस के निर्बलकारी प्रभाव का ध्यान रखना चाहिए, और सम्पूर्ण, रोगावस्था में बल स्थिर रखने का उद्योग करना चाहिए॥

डाक्टर ऐस. ऐस. बाटलीवाला ने २२ अक्तूबर को बम्बई में डाक्टरों के बड़े जलसे में बक्तृता करते हुए कहा:—"यह भली भान्ति ज्ञात हो चुका है, कि वर्त्तमान बीमारी अपनी प्रकार की

पहिली नहीं है, वरन् यूरोप में १६ वीं शताब्दी में इस की खबर मिलती है, और उस समय एशिया में भी यह हुआ था, और एक अरबी ग्रन्थकार के लेख से प्रतीत होता है कि यह नवमीं शताब्दी में अरब और मैसोपोटामियां में फैला था..................इस से पहिले चिकित्सकों को ज्ञात होगा कि इस रोग का अन्तिम आक्रमण सन् १८८६ में हो चुका है, जब कि इस का प्रभाव बम्बई तथा कलकत्ता तक पहुंचा था। उस समय में यह निश्चित था कि यह रोग यूरुप से भारतवर्ष में पहुंचा है, और इस समय की वर्तमान मरी जो कि सन् १८९० की मरी के सदृश है वह भी पश्चिम से ही आई" ॥

ग्रीन की मैडिकल

इनसाइक्लोपिडिया जिल्द ४ पृष्ठ ४२३ पर इस रोग का इतिहास दिया है, पर लेख बृद्धि के भय से उसका अनुवाद नहीं करते हैं संक्षिप्त यह है, कि सन् १५५० में जब यह रोग सम्पूर्ण जगत् में फैला तब से इस का विशेष इतिहास चलता है। डाक्टर थामसनसाल्ट (इस का इतिहास लेखक) कहता है कि यह रोग अफरीका से आया पहिले सिसली में पहुंचा, फिर स्पेन वा इटली में, फिर स्विटज़रलैंड, पुर्तगाल, हंगरी और जर्मनी में फैला। तत्पश्चात फ्रांस व इंगलैंढ आदि में इस का प्रभाव हुआ, इसका हमला तुरन्त हुआ और तुरन्त सम्पूर्ण यूरुप मे फैल गया, और किसी घराने को नहीं छोड़ा वरन मनुष्य भी कदाचित् कोई इस के प्रभाव से बचा, इस लेखक ने जो रोग के लक्षण वर्णन किए हैं, वह सब वर्तमान रोग से मिलते हैं॥

इस के पश्चात सन १७४३, सन १७५८ ई० में इस रोग के आक्रमण हुए। अमैरिका में सन १७६१ में, यूरुप में सन १७६२ में एशिया व यूरुप में सन १७८२ में बड़े आक्रमण हुए, इस से भी प्रवल आक्रमण यूरुप में सन १७८८—८९ और अमेरिका में सन १७८९ ई० में हुआ है, इस के पश्चात् १९वी शताब्दी में डा० फिनकलर (Finkler) सन १८०२ सन १८०३ सन १८३० व सन १८३३, सन १८३६ व सन १८३७, सन १८४७ व सन १८८४ के आक्रमणों का वर्णन करता है, परन्तु डाकटर हिरष (Hirsch) इन के अतिरिक्त सन १८५० व सन १८५१ सन १८५५ सन १८५७ व

सन १८५८ और सन १८७४ व सन १८७५ में भी इसका होना वर्णन करता है। सन १८८६ में जो मरी फैली वह अन्तिम आक्रमण था। इस इनसाइक्लोपिडिया (Encyclopaeiad) में लिखा है कि मई सन १८८६ में बुखारा, (मध्य एशिया) से यह रोग प्रगट हुआ। वहां से उत्तर पूर्व को बढ़ता हुआ साइबेरिया में और उत्तर पश्चिम की ओर सेन्ट पीटर्ज़बर्ग में और पश्चिमी काकेशिया और दक्षिणीय रूस तक पहुंच गया। फिर अक्टूबर व नवम्बर में पुनः मध्य और पश्चिमी यूरुप में भी फैल गया। सन् १८९० में अमेरिका अफरीका और आस्ट्रेलिया में जा पहुंचा, और फिनकलर वर्णन करता है कि थोड़े मासों[१] में सम्पूर्ण जगत में भ्रमण किया, विचित्र बात यह है कि जिस देश में यह आता, और जहां से आता था, उसी पर इसका नाम रख लेते थे। अतः साईबेरिया वालों ने "चीनी रोग" नाम रक्खा। रूस में "साइबेरिया का ज्वर" नाम पड़ा, और पश्चिमी यूरुप में "रूसी इनफ्लूएनजा" नाम हुआ, जैसा कि अब यूरुप से पहिले आने के कारण और वहां युद्ध होने के कारण तुरन्त लोगों ने इसका "जंगी बुखार" नाम रख लिया। और विलायत में स्पेन से आने का कारण स्पैनिश ज्वर नाम हो गया है॥

सन् १८८९ व ९० के उस आक्रमण के पश्चात् जो सम्पूर्ण जगत् पर हुआ १० वर्ष तक इस का यूरुप में कुछ न कुछ प्रभाव रहा, कभी किसी देश में हो जाता था, कभी किसी देश में, कहते हैं कि इंगलैण्ड व वेलज़ में १० वर्ष के अरसा में ८७७६७ मृत्यु हुईं, अनुमान यह है, कि यह इस से पूर्व सिवाय सन् १८३१ के इतना प्राण हारक कभी प्रमाणित नहीं हुआ, इटली में सन् १८३१ में जब इनफ्लूएनजा की मरी फैली तो १८४००० मनुष्य मरे; यद्यपि इटली की बस्ती केवल ३ करोड़ मनुष्यों की है। दूसरे आक्रमणों में इतनी मृत्यु नहीं हुई है, यथा सन् १८४७ में जब इंगलिस्तान में यह रोग बड़े वेग से फैला था तो सब

---

[१] इस समय भी बहुत से देशों से इस के आक्रमण के समाचार आ रहे हैं॥

८ सहस्र मनुष्य मरे थे, और अब केवल बम्बई में १५ दिनों के भीतर ८ सहस्र से अधिक मृत्यु हो गई ॥

डाक्टर (सय्यद गुलाम हुसैन साहिब जिन्हों ने सन् १८९१ में इनफ्लूएनज़ा पर एक छोटी सी पुस्तक लिखी वह सन् १८८९ की भारतवर्ष की मरी के विषय में लिखते हैं:—

"सन १८८९ अन्त में भारत के सम्पूर्ण प्रान्तों में यह रोग ऐसा फैला हुआ था, कि अखबारों में यही पढ़ते थे, कि अमुक शहर में कारख़ानों के इतने मज़दूर, स्कूलों के इतने विद्यार्थी ज्वर ग्रस्त होने के कारण ग़ैर हाज़िर हैं । अमुक स्थान पर कोई घर नहीं जिस में १—२ रोगी इस के न हों । कहीं प्रेस वालों को बीमारी होने से अख़बार बन्द है, किसी सेना के बहुत से सैनिक इस के कारण हस्पताल में पड़े हैं । पहिले तो यह दुष्ट लन्डन में था, और वहां कई नामी मनुष्य इस की भेंट हुए, फिर कुछ विलायती पात्रियों द्वारा जो इस रोग में ग्रस्त थे, या बाज़ व्यापारिक वस्तुओं के द्वारा यह रोग बम्बई में आया, और वहां धीरे २ ऐसा फैला कि बड़े २ नगर क्या कसबे व ग्राम भी इस के प्रभाव से सुरक्षित न रहे । गत वर्ष तो सकुशल बीता, परन्तु इस वर्ष पंजाब व अन्य जिलों में पुनः फैला, रूसी इस को चीनी जुकाम कहते हैं, और वह जानते हैं कि उन के देश में यह विष चीन से आया था, जर्मनी व इटली वाले इस को रूसी जुकाम बोलते हैं । क्योंकि उन का विचार है, कि रूस से यह उन के देश में गया था, अतः इस रीति अनुसार इस का नाम यूरपीन जुकाम होना चाहिये । क्योंकि यूरुप से यह रोग भारत वर्ष में आया है । परन्तु यहां के साधारण जन तो यह भी नहीं समझते कि यह रोग संसर्गिक है, वरम जो लोग सर्वथा मूर्ख हैं उन से किसी अन्य देश से इस का आना वर्णन किया जाय तो हंसने लगते हैं, हां डाक्टर व सुशिक्षित लोग जो इस को जानते हैं, वह इस को इनफ्लूइनज़ा कहते हैं । और मरी के रूप में प्रगट होकर बहुत शीघ्र फैल जाता है, इस लिए इस रोग को अपैडिमिक कैटर या अपैडिमिक ब्रंकाइटिस अर्थात वबाई जुकाम भी बोलते हैं ॥

इस कथन से ज्ञात होता है, कि यद्यपि उस समय भी समस्त देश रोग ग्रस्त था, तथापि इतनी मृत्यु नहीं हुई थी। इस के पश्चात् अब यह भारत वर्ष में आया है, ईश्वर जाने कब यह पीछा छोड़ता है॥

रोग के कारण॥

यह बात कि यह रोग प्रारम्भ में कैसे हो जाता है? अद्योऽवधि गुप्त है। २२ अक्तूबर सन १९१८ को डा० एस. एस. बाटलीवाला ने बम्बई के जलसा में वर्णन किया कि "इस समय समस्त तत्ववेता मान चुके हैं कि यह रोग अत्यन्त संसर्गिक है, और वायु से उत्पन्न नहीं है। जैसा कि पहिले विचार किया जाता था," परन्तु हमारी समझ में यह बात नहीं आती है कि यह बहुत शीघ्र एक दूसरे से फैल तो जाता है, परन्तु यह पैदा ही क्यों होता है। जहां यह आरम्भ होता है वहां ही सही, परन्तु कोई कारण तो अवश्य पहिले होना चाहिए, फिर चाहे कह दीजिए कि अपने तीव्र संसर्गिक प्रभाव से सम्पूर्ण जगत् में फैल गया, परन्तु विशेष अवस्थाओं में तो होता होगा, भूमि जन्य या वायु जन्य अवश्य कोई हेतु इस के उत्पन्नकारी होंगे। पहिली मारियां जब आरम्भ हुई उस समय के वृतान्त तो हम को ज्ञात नहीं, परन्तु इस समय क्या सम्भव नहीं, कि यह रोग वायु में महायुद्ध के मुरदों के कारण किसी विष के उत्पन्न होने से आरम्भ होकर चारों ओर फैल गया हो, सम्भव है कोई और कारण हो, जो पहिले भी होते रहे हों अब भी हों। परन्तु अद्याऽवधि वह किसी को ज्ञात नहीं हो सके॥

चरक में जैसा कि लिखा है कि मरी के आरम्भ होने से प्रथम ऋतुओं में परिवर्तन होता है, वही परिवर्तन पहिले यहां भी वर्तमान था, डाक्टर टरनर साहिब हैल्थ अफीसर बम्बई ने डाक्टरों के जलसा मे २२ अक्तूबर को वर्णन किया "जून में बम्बई की दशा एक बड़े भारी incubator (कीटाणु उत्पादक यंत्र)

की सी हुई थी, रोग कीटाणु वर्द्धक सब सामान उस में वर्तमान थे, ऊष्मा थी, और सब बातें रोग की सहायक थीं, शहर तो आगे ही गुंजान रहा है, और व्यापारी लोग इस अधिकता से बसते हैं, और ऐसी दशा में रहते हैं, कि प्रत्येक मारी रोग यहां तुरन्त फल सकता है, मानसून की अनुचित दशा, वायुमण्डल में धूलि बहुत बहुत हुई थी, वर्षा जो वबाई प्रभाव को दूर करने के लिए आवश्यक थी हुई नहीं थी २२ जून को समस्त नगर में रोग फैल गया" ॥

इस कथन से यह भी ज्ञात होता है, कि वायुमन्डल की विशेष दशा रोग फैलाने के लिए आवश्यक है, उधर जो इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का लेखांश अंकित हो चुका है उस से भी यह प्रगट है, कि तारों का प्रभाव या ऋतु आदि की बात मिथ्या हो, परन्तु इस बात को ऐसी प्रसिद्ध पुस्तक में भी माना गया है; कि वायु में कोई विष उत्पन्न होता है, जो कि रोग का हेतु होता है, यदि यह न होता तो भूमि से दूर जहाजों में जहां पहिले कोई इस रोग का रोगी न था, वहां कैसे फैल गया ?

श्रीमान् आनरेबल रालोरस्सल (Rollo Rassel) ने सन १८६० की वबा के विषय में यह सम्मति प्रगट की, कि सम्भव है इस के आरम्भ होने का कारण यह हो कि सन १८८८ में जो चीन में प्रबल तूफान आया था, उस से वायु मण्डल में बहुत सी धूलि मिल गई हो, इस सम्मति को माना नहीं गया, परन्तु डाक्टर ई. साइमज थामसन ने यह वर्णन किया, कि इतना अवश्य है; कि वायुमण्डल के भीतर के धूलिकण इनफ्लूइनज़ा के कीटाणुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने के हेतु होते हैं। मानो धूलिकणों से रोग दूर २ तक फैल जाता है, परन्तु रोग उत्पन्न होने का यह कारण नहीं है । ६ मई सन १८६१ के ब्रिटिश मैडीकल जनरल में एक डाक्टर ने वर्णन किया, कि इनफ्लूइनज़ा एक से दूसरी जगह पृथिवी तल से फैलता जाता है। सन १८८६ की बीमारी फैलने के विषय में ग्रीन इनसाइक्लोपिडिया में लिखा है:—

"विचार यह है कि इनफ्लूइनज़ा के कीटाणु चीन से वायु की लहरों के साथ २ जो शीत के कारण समुद्र के ऊपर रहीं, प्रशान्त महासागर (Pacific ocean) पर बहते हुए उत्तरीय अमैरिका में पहुंच गए, और इस प्रकार से आगे फ़ैलते गए। डाक्टर पेच फरांकलिन पारसंज़ ने सन् १८९० में जो रिपोर्ट गवर्नमेन्ट इंगलैण्ड को भेजी, उस में भी वायु द्वारा इन कीटाणुओं का जाना लिखा है, उन्हों ने यह भी लिखा है, कि लोग कहेंगे कि रोगाक्रमण पूरब से पश्चिम को हुआ, जब कि सामुद्रीय वायु अधिकांश पश्चिम से पूरब की ओर चलता है। इस का उत्तर आप ने यह दिया है। कि यह कीटाणु भूमि से ऊपर चढ़ने वाली वायु की लहरों से मिल कर उपरीवायु मण्डल में चले जाते हैं, जहां से पवन विरुद्ध दिशा को भी बहा करती है। और इस प्रकार से ऊपर उड़ते हुए जहां नीचे उतरने वाली लहरें हों वहां पहुंच जाते हैं॥

इस प्रकार के कई विचार प्रगट किए जा चुके हैं। परन्तु यथार्थ हेतु अभी तक मालूम नहीं है, और भगवान आत्रेयजी का कथन मानना पड़ता है, कि मुख्य कारण इस का अधर्म्म है। जब कि संसार के भीतर महान शक्ति ऐसे परिवर्तन उत्पन्न कर देती है कि कोई न कोई मारी खड़ी हो जावे,स्वयम हमारे वास्ते केवल यह जानना अब आवश्यक रह जाता है कि यह अधिकतर फैलती कैसे है॥

डाक्ठर बाटलीवाला ने वर्णन किया, कि घनी वस्ती व खुली वायु का अभाव सफाई की कमी, और ग़रीबी इसके फैलाने के सहायक हैं॥

परन्तु डाक्टर सर जे. डबल्यू. मूर ऐम. डी. ऐफ. आर सी. पी. आई. डी. ऐसं. सी., जिस ने सन १८८९ में इस रोग का तजरुबा प्राप्त किया, इस रोग का विशेष तत्वंवता जानकर इनसाइकलोपिडिया में उसी से निबन्ध लिखवाया गया, वह आज कल के इन डाक्टरों के विरुद्ध लिख रहा है॥

"इनफ्लूएनजा फैलने का कोई सम्बन्ध ऋतु, या जल वायु इत्यादि से नहीं है, नही घनी बस्ती, न खुली वायु का अभाव, न कमी सफाई इस रोग को बढाते हैं, सन्

१८८९-९० की बीमारी में डबलन में हमने देखा कि इनफ्लूएनज़ा जैसी शीघ्रता से नगर के भीतर घनी बसती में फैला वैसे ही बाहिर कोठियों में फैला। इस रोग का इस विषय में अन्य सम्पूर्ण वबाई रोगों यथा मोहरका, शीतला, मोती ज्वरा, खसरा इत्यादि से प्रभेद है"॥ और यही बात हम ने स्वयम् इस बार लाहौर में देखी है। शहर व सिविल स्टेशन दोनों रोग ग्रस्त हैं। मालूम यही होता है, कि जब इस रोग का आक्रमण होता है, उस समय कोई स्थान इस से बचता नहीं है। जिन लोगों के शरीर शुद्ध हैं, स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियमों का पालन करते हैं, परमात्मा पर विश्वास रख कर भयभीत नहीं होते हैं, खुली वायु और व्यायाम के अभ्यासी हैं, वह चाहे शहरों में हों या कोठियों में, प्रायः बच जाते हैं, या यदि वह रोग ग्रस्त हों भी तो बहुत अतीव्र आक्रमण होता है। ऐसी सावधानी निःसन्देह रखनी चाहिए, कि जहां कीटाणुओं के शीघ्र हम तक पहुंचाने का भय हो, उस से बचें, परन्तु असल बचाव यही है कि हमारा शरीर दूषित दोषों से रहित हो। उसके भीतर इतना बल हो, कि जो कीटाणु भीतर जावें उन को नष्ट कर दे, खुली वायु सफाई आदि भी अवश्य कुछ न कुछ प्रभाव रखती है, परन्तु इतना नहीं, जितना कि अनुमान किया जाता है। डा० टरमर ने बम्बई की मीटिंग में जो मृत्यु संख्या वर्णन की, वह यह है:—हिन्दुओं में १५-७८ प्रति सैंकडा, मुसलमानों में १९-१८ प्रति सैंकड़ा, पारसियों में ७-३४ प्रति सैंकड़ा, ईसाइयों में ११-९७ प्रति सैंकड़ा, और यूरपीनों में ५.५३ प्रति सैंकड़ा। यह २ सप्ताह के अनुमान से बताया गया है। सम्भव है, इसके पश्चात् कुछ प्रभेद भी हुआ हो, सारांश यह कि स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियमों का पालन अवश्य लाभदायक मालूम होता है, इस रोग का उत्पादक एक प्रकार का कीटाणु है, वह कैसा है, क्या रूप रङ्ग है, इस विवाद में हम पड़ना नहीं चाहते हैं। प्रश्न अब यह है कि यह कीटाणु फैलते कैसे हैं? इस के विषय में विविध सम्मतियां हैं, बाज़ डाक्टर तो

कहते हैं कि यह केवल Contagious अर्थात् छूत वाला है, एक रोगी से दूसरे मनुष्य को स्पर्श से शीतलादि की भांति लगता है। परन्तु यह विचार हम को ठीक मालूम नहीं होता है, माना कि यह छूत वाला भी है, परन्तु वायु के द्वारा भी इस का प्रभाव अवश्य होता है, ऐसी घटनायें भी हो जाती हैं, कि एक रोगी की एक मनुष्य सेवा करता है, उस की शारीरिक शक्ति कीटाणुओं का मुकाबला करने वाली है, तो अपने घर में आकर दूसरों से मिलता है, तो यद्यपि वह बच गया, परन्तु वह जिन २ से मिला है, उन को रोग हो जाता है। इनसाईकलोपिडिया में यह भी अंकित है, कि एक देश से दूसरे देश के पारसलादि या सामान सौदागरी के आने से भी यह रोग फैलता है। बाज़े डाक्टर तो कहते हैं, कि वायु के द्वारा दूर २ तक इसका प्रभाव पहुंचता है। परन्तु दूसरे यह भी कहते हैं कि यद्यपि वायु द्वारा प्रभाव होता है, परन्तु यह दूर तक नहीं जाता है। यथा एक मनुष्य रोग ग्रस्त है, तो उस के श्वास से जो कीटाणु निकलते हैं, वह उस के समीपी मनुष्यों पर प्रभाव करते हैं. जहां किसी मनुष्य के भीतर इनफ्लूएनज़ा के कीटाणु प्रविष्ट हुए, चाहे अभी ज्वर के कोई लक्षण प्रगट न हों, परन्तु उसका श्वास रोग युक्त हो जाता है, और इस प्रकार वह दूसरों में रोग फैलाता फिरता है। इस विचार के डाक्टर कहते हैं, कि यही कारण है, कि यह रोग इतना शीघ्र फैल जाता है, सन् १८८९ में इसके विषय में यह विचार था, कि यह रोग विशेष प्रकार के कीटाणुओं से उत्पन्न होता है, जो पृथिवी वायु और पानी में होते हैं। और जल पान या श्वास लेने से नाक व गले में जाते हैं, और गले में पहुंच कर आहार खोजनार्थ वायु नलिकाओं में इधर उधर फिरते हैं, उनकी हरकत के कारण वायु नलिकाओं की लेसदार झिल्ली में खराश होती है, और खराश के कारण जब कफ उत्पन्न होता है, तो छींक व खांसी द्वारा झट उसको दूर करना चाहिए, यदि यह मादह निकल गया, तो कोई कष्ट नहीं होता है। परन्तु यदि वह न निकले तो शिरःशूल, अंगशूल, और व्याकुलता उत्पन्न होती है॥"

लक्षण ॥

इनसाइक्लोपिडिया ब्रिटानिका में लिखा है:—

"इनफ्लूइनजा एक संसर्गिक थोड़े काल का ज्वर है, जिस में विशेष रूप से श्वास अवयव, और पाक अवयवों में कैटार (नज़ला) भी होता है, और यह प्रायः वबाई रूप में प्रगट होता है। इस रोग के लक्षण अचानक बढ़ते हैं, और एक घोर जुकाम के सर्व लक्षण वर्तमान होते हैं। पहिले पहिल शीत या कम्प होता हैं, फिर घोर शिरःशूल आरम्भ हो जाता है। ललाट में कठोरता मालूम होती है, नेत्रों से नीर गिरता है, कभी छींक होती है, और नाक बहने लगती है, फिर ऊष्मा बढ़ती है, गला दुखने लगता है, स्वर भारी हो जाता है, खांसी होती है, और कभी श्वास में भी तङ्गी होती है, ताप बढ़ जाता है, नाड़ी वेगवती परन्तु निर्बल होती है, और त्वचा जो पहिले शुष्क थी आर्द्र हो जाती है। कहते हैं इस से विशेष प्रकार की गन्ध भी आती है। पाचन अवयवों पर भी इस का प्रभाव होता है, क्षुधा जाती रहती है, तृषा अधिक लगती है, वमन होती, है, और कभी अतिसार भी होते हैं॥

इन लक्षणों के साथ तुरन्त निर्बलता आरम्भ होती है, और हृदय बहुत निर्बल हो जाता है, यह इस रोग के विशेष लक्षण हैं, २—३ दिन में इन लक्षणों में कमी आरम्भ होती है, परन्तु तीव्र आक्रमणों में, और बूढ़ों में बहुत देर तक निर्बलता रहती है। सम्भव है, कि छाती में शोथ होकर अधिक भय हो जावे, स्वयम इनफ्लूएनज़ा बहुत प्राण नाशक नहीं है, यद्यपि बाज़ आक्रमण यथा सन १७६२ के प्राण नाशक भी रहे हैं। इस रोग से मृत्यु संख्या प्रायः २ प्रति सैकड़ा अनुमान की जाती है, परन्तु जब बीमारी का बहुत वेग होता है, तो इस थोड़े परिणाम पर भी मृत्यु संख्या बहुत बढ़ जाती है" ॥

डा० सर डबल्यु मूर साहिब श्रीन इनसाइकलोपिडिया में लिखते हैं:—

"बालकों की अपेक्षा युवा इस रोग में अधिक ग्रस्त होते हैं, अभी एक मनुष्य सर्वथा स्वस्थ है, कि तुरन्त कुछ शरीर अस्वस्थ मालूम हो कर जाड़ा लगता है, या कभी मैलेरिया

वत कम्प होता है; शिरःशुल होता है, नेत्रडेलों या नेत्रों के पीछे पीड़ा होती है। और नेत्र ऐसे कोमल हो जाते हैं, कि हाथ लगाने से पीड़ा होती है। शरीर में शीघ्र पीड़ाएं आरम्भ हो जाती हैं, विशेष कर ग्रीवा, पृष्ठ, कटि, घुटना और पसलियों के किनारे, पर अधिक पीड़ा होती है। रोगी को कभी निद्रा नहीं आती है, कभी तन्द्रा भी हो जाती है। कभी अस्थाई रूप से श्रवण शक्ति, घ्राण शक्ति और रसना शक्ति नष्ट हो जाती है, नेत्र शीघ्र चलते हैं, अश्रुपात होता है, प्रकाश बुरा लगता है, कभी घोर कर्णशूल भी होता है, शारीरिक बल अन्य ज्वरों की अपेक्षा शीघ्र नष्ट हो जाता है, थोड़े ही घन्टों में उसे लेटना पड़ता है। जिव्हा पर मलाईदार या कम्बलवत मोटी तह जमी होती है। विरसाता हो जाती है, श्वास भरी और कभी दुर्गन्धित होता है, क्षुधा सर्वथा जाती रहती है, वरन आहार से घृणा हो जाती है। मतली और कभी वमन, रोगी को और कष्ट देते हैं, प्रायः कोष्ट बद्धता, परन्तु कभी २ दस्त होते हैं। कभी विष का प्रभाव अधिक तर श्वासावयवों पर होता है, खांसी होना, कफ निकलना छाती घुटी हुई ज्ञात होती है। श्वास तंगी से आती है, यह साधारण लक्षण हैं, असल बात यह है, कि इनफ्लूएनज़ा का विष मनुष्य के शरीर में निर्बल स्थान पर जाकर अपना अधिकार जमाता है। यदि रोगी वातज (nervous) प्रकृति का हो तो वातज रोगों के लक्षण प्रगट होते हैं, यदि उसके पाक अवयव या श्वास अवयवों का झुकाव प्रतिश्याय की ओर हो तो इनफ्लूएनज़ा के विष से यही लक्षण बढ़ जाते हैं। स्मरण रहे कि प्रातिश्यायिक लक्षण बहुत तेज़ भी हो सकते हैं, और सम्भव है कि वर्तमान ही न हों। सन १८८९ के इनफलूएनज़ा पर जो रिपोर्ट डाक्टर पार्सन ने लिखी है, उस में उस ने वर्णन किया है, कि प्रतिश्याय के अभाव से बाज़ रोगियों को इनफ्लूइनज़ा का रोगी कई डाक्टरों ने न माना, परन्तु यह नज़ला जुकाम आवश्यक नहीं है। डा० पारसन ने इस से प्रथम वबाओं के विषय में लिखने वाले डाक्टरों की भी सम्मतियां दी हैं। सर विलियम गेरडनी (Gairdney) सन १८६२ की वबा के विषय में लिखता है:—

"यद्यपि नज़ला जुकाम बहुत अधिक होता है, और बहुत तीव्र हो सकता है, परन्तु रोग वास्तविक ज्वर का है नज़ला नहीं है, और सम्भव है, कि कभी नज़ला सर्वथा न हो, या बहुत थोड़ा हो"। इसी प्रकार सर सैमवल विक्स(Samuel Wilks) ने सन् १८४७ में वबा का वर्णन करते हुए लिखा है, कि "यद्यपि इनफ्लूइनज़ा का दूसरा नाम जुकाम वबाई कहते हैं, परन्तु जुकाम आवश्यक लक्षण नहीं रहा। बहुत से कष्टसाध्य रोगियों वरन् असाध्य रोगियों में जुकाम सर्वथा नहीं था" ॥

सन् १७८२ की वबा के विषय में रायल कालेज आफ फिज़ीशन्ज़ की रिपोर्ट में लिखा है—"वह लक्षण सब में पाए जाते थे, जो रोग के विशेष लक्षण मालूम होते हैं, वह माथा, कनपटियों, और कभी समस्त चेहरा में पीड़ा और खिचावट का अनुभव होना है। इस के साथ कपोल की अस्थियों के उपर मासपेशियों में खराश और घाव की सी पीड़ा का अनुभव होना है। यह जुकाम प्रगट होने से पहिले ही प्रगट होते थे, और कभी जुकाम नहीं भी होता था" ॥

डाक्टर सय्यद गुलाम हुसैन की पुस्तक में यह लक्षण लिखे हैं:—

"आलस्य व अंगशूलादि के पश्चात शीत लग कर ज्वर चढ़ आता है। परन्तु यह ज्वर घोर नहीं होता, वरन् इस देश में लघु और मैलेरिया की भांति का होता है, अर्थात् कभी बना रहता है और कभी कम हो जाता है। विशेष कर प्रातः को कम और सायम् को अधिक होता है, परन्तु ४ से १८ दिन तक चढ़ा रहता है। त्वचा शुष्क व गरम होती है। प्रारम्भ में नाड़ी वेगवति, भारी होती है, और अन्त लघु, सूक्ष्म, व धीमी होती है। शिरःशूल होता है, मूत्र गहरे रंग का होता है, मस्तकशूल बहुत कष्ट देता है, निद्रा नहीं आती, कभी प्रलाप भी हो जाता है, पट्ठों व पेशियों में निर्बलता बहुत होती है, रोगी इकदम निढाल हो जाता है, मुख में विरसता हो जाती है, कण्ठ, मुख, जिव्हा में पीड़ा होती है, लार निगलने में कष्ट होता है। क्षुधा मारी जाती है, तृषा बहुत लगती है ॥

जुकाम इस रोग का मुख्य लक्षण है। प्रारम्भ में नेत्र व नासिका में रुक्षता व दाह मालूम होती है, फिर छींके आती हैं, नाक बहती है, नथुनों से खराब भूरे रंग की तरलता बहती रहती है, प्राण शक्ति कम हो जाती है, नेत्र डबडबाए रहते हैं, सार यह कि सब लक्षण जुकाम के प्रारम्भ से ही पाए जाते हैं, खांसी जोर से उठती है, विशेष कर रात्रि को बहुत कष्ट देती है, कफ पीत रंग का निकलता है, और खांसने के समय शिरःशूल की अधिकता होती है, कभी जुकाम होता है; कभी वायु नलिकाओं तक शोथ फैल जाय तो स्वर भारी हो जाता है, या बैठ जाता है। प्रारम्भ में खांसी रुक्ष होती है, कुछ दिनों पीछे कफ़ आने लगता है। श्वासावरोध, छाती पर तनाव व बोझ प्रतीत होता है, जब जुकाम के लक्षण कम होते हैं, तो निर्बलता और भी अधिक होती है॥

बाज़ समय नकसीर फूटती है। कभी कर्णशूल भी हो जाता है। कान में विविध प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं, या कम सुनाई देने लगता है। बाज़ रोगियों के आमाशयमुख पर पीड़ा होती है, मतली होती है, वमन होती है, अतिसार लगते हैं, जिव्हा लाल हो जाती है, ओष्ठों पर दाने निकल आते हैं, जुकाम के लक्षण ५—७ दिन में कम होने लगते हैं"॥

उपर्युक्त तीनों सम्मतियों से पाठक भली भांति इनफ्लूएनज़ा के लक्षणों को समझ गए होंगे, परन्तु इन दिनों जो कुछ मेरे निरीक्षण में अधिकतर लक्षण आए हैं उन को लिख देना आवश्यक है। डाक्टर लिखते हैं कि इस रोग का विष जब दूसरे के शरीर में जाता है, तो १ से ३ दिन के पीछे उस को ज्वर होता है, हम ने देखा है कि ऐसा बहुत कम दशाओं में हुआ है। और यदि ऐसा हुआ और किसी रोगी ने हाथ पांव टूटने, मन की व्याकुलता, आलस्य, काम में जी न लगने, अंग, पीड़ा आदि का कष्ट प्रगट किया, तो उसी समय औषधि देने से रुक भी गया, या बहुत थोड़ा हुआ, परन्तु बहुधा रोगियों की यह दशा नहीं होती थी, मालूम होता था कि उधर विष पहुंचा कि २-४ घण्टों के भीतर ही रोग का वेग हो जाता था, नेत्रों की लाली, अंगों का टूटना, गलतादि

आरम्भ होने के साथ लक्षण बढ़ने आरम्भ होजाते थे, जिन रोगियों को देखने का हम को अवसर हुआ, उन में यह लक्षण प्राय: थे; घोर शिर:शूल होना, कटि में पीड़ा होना, किसी की कटि तो सीधी न होती थी, गला घुट जाना, खांसी, प्राय: रुक्ष और कभी कफज होना, नासिका बन्द रहना, स्वर भारी होना, ज्वर दिन में कम और रात्रि को बढ़ जाना, नाड़ी का प्राय: ११० बार प्रति मिन्ट चलना, ज्वर रात को १०३ से १०५ तक देखा गया, कास तो ज्वर दूर होने पीछे भी देर तक आते रहना, जिन पर पूरा आक्रमण हुआ उन को प्राय: चौथे दिन लक्षणों में कमी होकर ७ वें दिन सर्वथा कम हो जाता था, किसी को साधारण आक्रमण होता तो तीसरे या चौथे दिन ही आराम आ जाता था, ज्वर आरम्भ होते समय किसी के कम्प हुआ और किसी के नहीं हुआ, खांसी बहुत कष्ट दायक आती है, छाती में उसका झटका पहुंचता है ॥

आयुर्वेदिक के अनुसार लक्षण जानने भी आवश्यक हैं, पाठकों को ज्ञात होगा, कि हमने इस को वातश्लेष्मक ज्वर लिखा है, जो वबाई रूप में होता है ॥

वात कफ के लक्षण भाव प्रकाश में यह लिखे हैं:—

"स्तैमित्यं पर्वणां भेदो निद्रा गौरव मेवच ।
शिरोग्रह प्रतिश्याय: कास: स्वेदा प्रवर्तनम् ।
सन्तापो मध्य वेगश्च वात श्लेष्म ज्वराकृति: " ॥

शरीर का गीले वस्त्र से ढका सा रोगी को ख्याल होना, सन्धिक शूल, निद्रा आना, गरुता, शिर:शूल, खांसी, जुकाम, अतिस्वेद, सन्ताप, ज्वर का मध्य वेग, "स्वेदाप्रवर्तनम" के शाब्दिक अर्थ तो स्वेद न आने के हैं, परन्तु स्वयम ही भाव मिश्र जी ने आगे नोट दिया है, कि, यहां इस से स्वेद आना समझना चाहिए । क्योंकि हारीत संहिता में वात व कफ ज्वर के लक्षण शिर:शूल, स्वेद, खांसी, लिखे हैं, यहां यह शंका भी की गई है, कि स्वेद आना तो पित्त ज्वर में होता है, और वात तो रुक्ष होता है, इस में स्वेद कैसे आता है, इस का उत्तर यह दिया है, वात कफ दोनों के मेल से स्वेद आने की दशा उत्पन्न

हो जाती है, अधिकतर इनफ्लूएन्ज़ा में यह देखा है, कि स्वेद नहीं आता है। कदाचित यह बात है कि जहां वात कफ में वात का ज़ोर है, वहां रुक्षता रहती है। और जहां कफ का ज़ोर है शरीर गीला सा रहता है, और इनसाइकलोपिडिया ब्रिटानिका में शरीर की आर्द्रता को माना भी है, और इनफ्लूएन्ज़ा में कई पुस्तकों में अधिक स्वयं एक उपद्रव भी माना है॥

निद्रा आने से अभिप्राय ओंघ सी रहती है, क्योंकि वात निद्रा को रोकने वाला, और कफ निद्रा को लाने वाला है। ज्वर का वेग मध्यम लिखा है, हम ने बहुत तीव्र ज्वर भी देखे हैं, परन्तु प्रायः ज्वर १०३ के लगभग रहा है। जो कि मध्यम है। पिछली वबाओं के वृतान्त पढ़ने से भी यही पता लगता है, कि ज्वर प्रायः मध्यम आया है। सम्भव है, कि उग्र ज्वर विष की अधिकता में होता हो॥

इस प्रकार से ज्ञात होता है, कि यह लक्षण जो वात कफ ज्वर के शास्त्र में लिखे हैं। यह इनफ्लूएनज़ा से मिलते हैं॥

प्रत्येक लक्षण में न्यूनाधिकता होती है, क्योंकि इनफ्लूएनज़ा ५ प्रकार का है। चारों प्रकारों का सविस्तर वर्णन ग्रीनइनसाइकलो पिडिया जिल्द ४ पृष्ठ ४२७ से ४३२ तक लिखा है। हम इस को यहां लिखें तो यद्यपि चिकित्सकों को अधिक ज्ञान मिल जावे, परन्तु साधारण जनता को इस से सिवाय लेख वृद्धि के कोई लाभ न होगा। इस वास्ते इस व्याख्या को छोड़ते हैं॥

रोग निदान। उपर्युक्त लक्षणों और वर्तमान बातों को भली भांति मन में रखने से रोग निदान में भूल कम पड़ती है, परन्तु हम ने देखा है, कि इन दिनों किसी को कोई ज्वर हो जावे वारफ़ीवर ही समझा जाता है। आज कल मैलेरिया ज्वर भी अधिक होता है, और कई मनुष्यों को केवल मैलेरिया ज्वर होता था, इन दिनों लाहौर में शीतला का भी ज़ोर है, बालकों की दशा में जब तक शीतला नहीं निकल आई प्रायः वारफीवर ही अनुमान किया। एक मनुष्य को सरसाम हुआ था, और इस

ज्वर का इलाज हो रहा था, मोहरका को भी कभी इनफ्लूएनज़ा समझा गया, और बाज़ जगह जिव्हा दशा, ज्वरवेग, प्रलापादि को देख कर इनफ्लूइनज़ा को भी मोहरका कह दिया गया। शीत लग कर साधारण जुकाम जो हो जाता है, उस को वबाई जुकाम तो हर कोई समझ लेता है, क्योंकि दिन ही एसे होते हैं, परन्तु ज्वर की कमी, उत्साह हानि, निर्बलता, इत्यादि का न होना, इन को इनफ्लूएनज़ा से पृथक कर देते हैं, शीतला, मोती ज्वर आदि की दशा में प्रारम्भ में निदान बहुत कठिन होता है, बालकों में प्रकाश से विशेष रूप से घृणा होती है। निद्रा से अचानक डर कर चौंक उठना, लाल वस्तुएं स्वप्न में देखना, इत्यादि २ लक्षण खसरा व शीतला में होते हैं। मोहरका (Typhoid) में गुलाब्बी धब्बों का होना, उदर की कठोरता, ज्वर की गति, और अधिक देर रहने इत्यादि की ओर ध्यान रखना चाहिए॥

रोग का परिणाम॥

इनफ्लूएनज़ा में यदि रोगी सुख से बिस्तरे पर रहे, आहारादि का उचित प्रबन्ध हो, इलाज अच्छा हो या नहीं हो, परन्तु उचित सावधानी हो तो यह ८ वें, या ९ वें दिन उतर जाता है यद्यपि खांसी और निर्बलता पीछे देर तक रहती है, लघु आक्रमण चौथे दिन दूर हो जाता है। यह रोग स्वयम प्राण हारक नहीं है। ज्वर बिगड़ जावे तो १ या २ प्रति सैकड़ा तक मृत्यु हुई है, ज्वर उतरने के दिन कभी स्वेद आता है, कभी दस्त आता है, या मूत्र अधिक आता है, बालकों की अपेक्षा युवाओं को और वृद्धों का अधिक भय होता है। और देखा गया है, कि स्त्रियां इस रोग में अधिक मरतीं हैं, जिन को हृदय या फुफ्फुस का रोग हो तो वहां इस का प्रभाव हो जाने से अधिक भय हो जाता है, मतलब यह है, कि स्वतः रोग प्राण हारक नहीं है परन्तु जब

इस के उपद्रव

निमोनिया आदि इस के साथ हो जावें, तो यह प्राण नाशक हो सकता हैं, अब हम इस के उपद्रवों का वर्णन करते हैं यह बात साफ है, कि इस बार इस ज्वर में निमोनिया आदि होकर बहुत अधिक मृत्यु हुई है । जो लोग सन १८८९ की मरी की खबर रखते हैं वह भी कहते हैं, कि उस समय इतनी प्राण हारक न थी । इसका प्राचीन इतिहास पढ़ने से भी यही पता लगता है, इस बार इतना भयानक होने के कारण भी हैं। लिखा हैं कि इनफ्लूएनज़ा शरीर के निर्बल अंग पर आक्रमण करता है, और हमारा भारतवर्ष तो आज कल सारा ही निर्बल हो रहा है, आए दिन दुर्भिक्ष, रोग, निर्धनता, हम को निर्बल कर रही है, दूध घृतादि दुर्लभ हो रहे हैं, और रोग के दिनों में रोगियों को मिलते नहीं हैं, रोगी जो दूध के स्थान में दूध की लस्सी पीवे, उस का क्या हाल होना चाहिए । व्यायाम व सैर से उदासीनता के कारण भी हमारे शरीर निर्बल हो रहे हैं । अर्थात् जिन के परिश्रम के काम हैं, उन रोगियों को दूध घी प्राप्त नहीं होता है, और जिन को प्राप्त होता है, वह व्यायामादि नहीं करते हैं, इस लिए सब के शरीर निर्बल हो रहे हैं, इस बिषय पर हम ने पुस्तक "भारत वासियों की शारीरिक निर्बलता और उस का इलाज" में लिखा हैं, जो उर्दू में छप चुकी है और हिन्दी में छप रही है ॥

इनफ्लूएनजा की उपाधियां अधिकांश इन स्थानों पर उस का प्रभाव होने से होती हैं । श्वास अवयव और हृदय, वृकद्वय, और पट्ठों पर प्रभाव होता है, प्रथम श्वासावयवों का वर्णन करते हैं :—

निमोनिया

सब से अधिक मौतें जो इन दिनों हुई हैं, वह इनफ्लूएनजा में निमोनिया के होने से हुई हैं, ज्वर हो जाने के पश्चात् विश्राम-

न करने से, छाती को वायु लगने से, इसी का प्रभाव अधिकतर फुप्फुस पर पड़ने से, ऐसे इलाज से जो कफ को सर्वथा शुष्क कर दे, या बहुत शीतल औषधियां देने से फुप्फुस एक में या दोनों शोथ हो जाती है, इस का नाम निमोनिया है, कठिनता यह है, कि विशेष लक्षण यथा श्वासावरोध, पृष्ट या पंक्तिशूल, कफ का लेसदार, सुरखी मायल, या जंगारी रंग का निकलना, इत्यादि इनफलूइन्ज़ा के निमोनिया में नहीं होते हैं। परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यदि दूसरे तीसरे दिन के पश्चात कुछ कम होना आरम्भ न हो, या बढ़ जावे, और ज्वर किसी समय भी कम न हो, श्वासाऽवरोध अधिक हो, कपोल लाल हो जावें, ज्वर वेग से मोह आरम्भ हो जावे, तो निमोनिया का सन्देह करना चाहिए। यदि इनफ्लूएनज़ा बना ही रहे, तो तीन दिन के पश्चात् ज्वर कम होना आरम्भ होता है, यथा पहिली रात को १०४ दर्जा, और दिन को १०२ होता था तो फिर रात्रि को १०३ होता है, और दिन को १०१ हो जाता है चाहे इस से भी कम अन्तर हो, परन्तु अन्तर अवश्य पड़ता है। और ऐसे ही प्रतिदिन घटते २ सातवें या आठवें दिन प्रातः को ठीक हो जाता है। कभी फुप्फुस में शोथ होकर निमोनिया हो जाता है, जिस में शूल और श्वासवरोध की अधिकता विशेष लक्षण हैं॥

क्षयग्रस्तों को इनफ्लूएनज़ा का आक्रमण होजावे, तो डाक्टर वुडफोर्ड के मतानुसार क्षय के कीटाणु जो सोए हुए होते हैं, वह भी चैतन्य होजाते हैं, और तुरन्त रोग में वृद्धि होकर मृत्यु होजाती है, लण्डन में जब यह रोग था, तो उन दिनों तपदिक की मृत्यु संख्या दुगनी हो गई थी॥

डाक्टर फिकलर का कथन है कि "क्षयग्रस्तों को इनफ्लूएनज़ा का प्रभाव हो जावे, और वह बच रहें तो भी चिरकाल तक बुरा प्रभाव रहता है। इनफ्लूएनजा के रोगी को स्वस्थ होने के पश्चात् कभी श्वास रोग भी हो जाता है, कभी वायु

नलिकाओं में शोथ होकर घोर खांसी (Bronchitis) भी हो जाती है ॥

हृदय प्रभाव बम्बई के डाक्टर लफटीनेन्ट करनैल डबल्यू ग्लैन लिस्टन साहिब लिखते हैं:-"इनफ्लूएनजा का विष कभी हृदय पेशियों पर आक्रमण करता है, जिस से तुरन्त मूर्च्छा हो कर मृत्यु हो सकती है" ॥

"हार्ट फेल हो गया" आजकल यह शब्द प्रायः सुने जाते हैं, परन्तु एक डाक्टर लिखता है;"यह शब्द सन १८८६ के इनफ्लूएनजा से प्रथम कम सुने जाते थे, इनफ्लूएनजा का यह सब से बड़ा प्रभाव है, कभी यह निमोनिया के साथ कभी वैसे होता है, जिन के हृदय सर्वथा निर्बल हों उन में होता है, जब कि इनफ्लूएन्जा बहुत तीव्र होने से हार्दिक शक्ति को खैंच लेता है, जब कि ज़रा से हिलने जुलने से श्वास वेगवान् हो कर उखड़ने लगे, हाथ पांव शीतल व नीले हो जावें व्याकुलता हो, नाड़ी अनियत हो जावे, कलेजा धड़कने लगे, तो तुरन्त हृदय पर प्रभाव होने का सन्देह करना चाहिए। इस के विषय में बहुत कुछ नाड़ी बतला देती है, कभी तेज़, कभी सुस्त कभी बैठ जाती हैं और पोज़ीशन के बदलने के साथ बहुत बदल जाती है, यथा बैठने से लेटने की अपेक्षा बहुत तेज़ हो जाती है, ऐसी दशाओं में बहुत शीघ्र हृदय का इलाज करना चाहिए। कभी रक्तवाही नाड़ियों पर भी विष का प्रभाव हो जाता है, तब रक्तस्राव होता है, नाक या कान से रक्त आरम्भ हो सकता है, मल मूत्र के साथ रक्त आता है, या कोष्ठबद्धता हो जाती है, छाती से भी रक्त आ सकता है ॥

पाक अवययवों पर प्रभाव कभी इस का विष पाक अवयवों पर होता है, परन्तु यह भयानक नहीं है। जिव्हा पर तह का जमना, श्वास का पूरा होना, क्षुधा न

लगना, वरन् आहार से घृणा होनी कोष्ठबद्धता, कभी अतिसार और वमन का वर्णन हो चुका है ॥

इन के अतिरिक्त कभी अन्त्रियों मे शोथ होती है, जिस से पेट दबाने से पीड़ा मालूम होती है, और आमाशय पर पीड़ा होती है। कभी इन लक्षणों के साथ उदर की खिचावट, दुःस्वप्न, प्रलाप, नाड़ीवेगवति होकर पित्तज्वर का सन्देह होता है। तब पहिचान बहुत कठिन होती है ॥

पाचन शक्ति सम्बन्धो विकार ज्वर जाने के पीछे बहुत देर तक रह सकता है, और रोगी कभी कृश व निर्बल हो जाता है ॥

वृकद्वय

जब गुरदों पर इस का विष प्रभाव करे, तो वृकद्रोग यथा वृक शोथ हो सकता है, मूत्र में अलब्यूमन (ओज) का आना तो साधारण बात है, कभी मूत्र में मिठास (मधुमेह) रोगनिवृत्ति के पीछे देर तक ज्ञात हुई है ॥

पट्ठों पर प्रभाव

कभी इनफ्लूएनज़ा सम्पूर्ण पट्ठों (ज्ञान तन्तुओं) पर आक्रमण करता है सच पूछो तो इनफ्लूएनज़ा होते ही पट्ठों पर अवश्य प्रभाव हो जाता है, और अत्यन्त निर्बल व साहसहीन कर देता है, अधिक प्रभाव होने से ऐसी निर्बलता हो सकती है, कि महीनों मनुष्य पहिली दशा पर नहीं आता है, शिरःशूल, कटिशूल, शिरोभ्रम, अनिद्रा, प्रलाप, मोहादि पट्ठों की खराबियां नहीं तो और क्या हैं ॥

परन्तु इन के अतिरिक्त कभी और बुरे प्रभाव भी हुए हैं। यथा हिस्टीरिया) या अपस्मार के आक्रमण, सर्व प्रकार के पट्ठों की निर्बलता, इन्द्रिय बोध का बढ़ जाना, या न रहना, निद्रा रोग, सन्धिकशूल, अर्द्धांगवात, सन्निपात, उन्माद और ऐसे ही और रोग, जिनका सविस्तर वर्णन करने से लेख बहुत बढ़ जावेगा ॥

त्वचा

कभी त्वचा पर भी इनफ्लूएनज़ा का प्रभाव होता है, कई प्रकार के दाने पित्तीवत निकलते हैं,

छाजन की भांति के निकलते हैं । परन्तु यह इनफ्लूएनज़ा की विशेष उपाधि नहीं । अतिस्वेद आने, या हार्दिक निर्बलता से होजाते हैं। डा० मूर साहिब का कथन है कि कुनीन, फेनेजून, सिलो सलफेट, सोडा आदि औषधियों के देने से भी निकल आते ह ॥

कभी त्वचा अत्यन्त रुक्ष होती है, कभी अतिस्वेद आता है. इस रोग के पश्चात अतिस्वेद की उपाधि भी देखी गई है शीतल कमरे मे नग्न खड़े होने पर भी स्वेद बन्द न होता था ॥

डा० ग्लैनलिस्टन साहिब ई. ऐम. ऐस लिखते हैं:—

"अचेतनता; जड़ता; पट्ठों की निर्बलता; कुकरोग; फुप्फुस शोथ का भय शीघ्र विस्तरे पर लेट जाने से दूर हो जाता है। यहां तक कि रोगग्रस्त होने पर परिश्रम और चलने फिरने का छोड़ कर विस्तरे पर सुख पूर्वक लेटना चाहिए" ॥

सावधानी ॥

जब मैं यह निबन्ध लिख रहा था, एक मुसलमान साहिब मेरे पास आए, और बोले कि वह इनफ्लूएनज़ा से बीमार हो गए थे, निमोनिया भी हो गया था, परन्तु ईश्वर कृपा से आराम आगया है, कल से उनके डाक्टर ने बाहिर सैर करने की आज्ञा दे दी है, परन्तु निर्बलता बहुत है, धातु भी जाती है, कोई वाजीकरण औषधि दीजिए । रोग से उठने के १० दिन पीछे वाजीकरण औषधियां ढूंढने लग जाना भारतवासियों का ही काम है । मुझे भय है; कि लोग इस विषय में बहुत हानि उठावेंगे, इस वास्ते यह सावधानी सब तक पहुंचनी चाहिए, कि इनफ्लूएनज़ा से उठने के पश्चात् जब तक सर्वथा पहिली दशा पर न आ जावें, तब तक मैथुन से बचे रहना चाहिए, नहीं तो निर्बलता सदा के वास्ते रह जावेगी । पट्ठों की निर्बलता इस रोग का साधारण लक्षण है। इस की वर्तमानता में इस कर्म्म से और भी निर्बलता बढ़ैगी । और सम्भव है, पीछे कोई घोर रोग

क्षय आदिक ही जावे, इस बात का सदैव ध्यान रक्खो, कि इस रोग के विष का प्रभाव पट्ठों पर अवश्य होता है ॥

प्रतिबन्धकोपाय ॥

म्यूनसिपिल कमेटी लाहौर के हैल्थ अफीसर डाक्टर ए. बी. अरोड़ा साहिब की ओर से निम्न लिखित नोटिस प्रकाशित हुआ है:—

"इनफ्लूएनजा के दिनों में कौन सी सावधानियां करनी आवश्यक हैं ॥

वबाई नजला के लक्षण यह हैं:—(१) शीघ्र २ फैलता है। (२) जल वायु, ऋतु, नर, नारी का कोई भेद न रख कर सब को हो जाता है, यह तुरन्त आरम्भ होता है, इस में मृत्यु बहुत कम होती है; अधिक ऊष्मा इस के विष को फैलाने से रोकती नहीं है। इस का विष शरीर में प्रविष्ट होने के १२ घन्टे से लेकर ३ दिन के पश्चात लक्षण प्रगट होते हैं। इस का एक बार का आक्रमण पुनराक्रमण से बचा नहीं सकता है। और इस लिए बार २ आक्रमण हो सकता है। यह रोग बहुत ही संसर्गिक है। एक से दूसरे को हो जाता है। इस के कीटाणु नाक कण्ठ, और फुप्फुस के मलों में पाए जाते हैं; इस के रोगी के खांसने, छींकने उच्च बोलने, दीर्घश्वास लेने से विशेष कर उन कमरों में जो तंग और बन्द हों, तो उन लोगों को जो उस के समीप बैठे हों हो जाता है, इस रोग के शीघ्र पहिचान की कमी, इस के विष के बहुत शीघ्र दूर तक फैलने के कारण इस के रोगियों को पृथक करना असम्भव है यदि लोग निम्न लिखित नियमों का पालन करें, तो इस से प्रायः बच सकते हैं:—

(१) इस रोग के दिनों में तमाशागाहों, थियेटरों, पबलिक जलसों, लोगों से पूर्ण कमरों, बन्द और भरी गाड़ियों, और जिन को यह जुकाम हो उन से मेल जोल न रक्खें और न वहां जावें ॥

(२) अन्धाधुन्ध सब न ही गिलास में उस को बिना धोए पानी, शर्बत, सोडा, लीमूनेड, लस्सी

आदि पीना, और एक से अधिक मनुष्यों का एक ही हुक्का पीना एक ही तौलिया और रूमाल वर्तना हानि कारक है। और रोग फैलने का भय है॥

(३) घर, दफतर, स्कूल, आदि को इस वबा से बचाने के वास्ते सब से पहिले रोगी को उस मकान, दफ्तर स्कूल न्यून से न्यून उस कमरे से पृथक करना उचित है, रोग को बुद्धि मत्ता से शीघ्र समझ लेने, और रोगी को पृथक करने से हम रोग के दिनों में भी अपने स्कूलों और कार्य्यालयों को बचा सकते हैं॥

(४) बूढ़ों को अधिक भय होता है, इसी वास्ते उन को इस से अधिक बचना चाहिए॥

(५) धूलि, धूम, शीत, और इक दम ऊष्मा परिवर्तन से बचना चाहिए। और जितना सम्भव हो खुली वायु का सेवन करें।

(६) सोने के समय कमरे की खिड़कियों और झरोखों को खुला रक्खें, परन्तु शरीर को भली भांति गरम वस्त्रों से ढांप लेना चाहिए। अर्थात् स्वयम् गरम रहो, और वायु सदैव खुली हो"॥

(७) कलकत्ता के स्वास्थ्य रक्षा विभाग के अफसर डाक्टर करेक ने निम्न लिखित प्रातिबन्धकोपाय अंकित किए हैं:-

प्रति दिन सायम प्रातः नाक और गले को थाईमोल (Thymol) के गाढ़े पानी से पिचकारी और गराडूश द्वारा साफ़ करना चाहिए, इस से हल्की सी, खराश होती है, जो कि शीघ्र हट जाती है, पश्चात कोई कष्ट नहीं होता॥

थाईमोल का गाढ़ा पानी बनाने के विधि यह है:—

६—७ ग्रेन या ३—४ रत्ती थाईमोल लेकर एक पाव शीतल जल में डाल दो, और उस को भलीभांति जोरसे हिलाते रहो, जब तक कि दवाई खूब मिल न जावे, और कोई टुकड़ा दवाई का बिना घुले न रह जावे, फिर साफ वस्त्र से छान कर बर्तें, इस के चाय के चमचे से २॥ सेर पानी बन सकता है एक प्रकार की नाक की पिचकारी जिस को सिम्पलेक्सडूश (Simplex, Douche) कहते हैं से नाक साफ

करना चाहिए, यदि पिचकारी न मिल सके तो अन्य विधि से नाक साफ कर लेवें, १॥ छटांक उपर्युक्त गाढ़े पानी से एक नाक और गला भली भांति साफ हो सकता है ॥

एक दूसरे डाक्टर साहिब ने एक विज्ञापन में लिखा हैं:—

"यह साफ है, कि रोग रोगियों को सर्वथा पृथक कर देने के विना रुक नहीं सकता है । जलसों, थिएटरों, स्कूलों आदि में एकत्र होने से बचना चाहिए, जो लोग हर समय रूमाल वर्तते, छींकते, और नाक पोंछते रहते हैं, उन से बचना चाहिए खुली वायु कमरे के द्वार व खिड़की खुली रखना बहुत अच्छी बात है। मुख व नाक को परमैंगनेट आफ पुटास(Permanganate of potash) के नरम सोल्यूशन से धोना उत्तम है, युकलिपटस आईल (Euculyptus oil) और कर्पूर का रूमाल व कमरों में प्रयोग रोग को रोकता है, इसी प्रकार दारचीनी का मुख में रख कर चूसते रहना गुणकारी है, बाज़ कहते हैं कि ब्रोमाईड आफ कुनीन २ ग्रेन दैनिक खाना भी रोगाक्रमण को रोकता है ॥

एक तीसरे डाक्टर साहिब ने यह बातें लिखी हैं:—

(१) पृथक करना (२) शीत वायु के परिवर्तन से बचना (३) तौलिया रूमालादि का परस्पर बर्तना, (४) नाक व गले के कफादि को साफ करना (५) रोगियों को रोगकृमिघ्न औषधियों से गण्डूश करना, यथा क्लोरोडाईन, काण्डी सोल्यूशन, मरकरी सोल्यूशन, कारबालिक (६) रोगी के कमरे में युकलिपटस आईल का छिड़कना ॥

डाक्टर जेम्ज़ नीवन डी० पी० एच० हैल्थ आफीसर मानचैस्टर ने जब वहां सन १८९९ में यह रोग फैला निम्नलिखित सूचना प्रकाशित की थी:—

(१) रोगी को नीरोगों से पृथक कर देना चाहिए। यह विशेष रूप से किसी परिवार में प्रथम केस होने पर आवश्यक है ॥

(२) नाक और मुख से निकाले हुए मल को जेब के रूमाल में शुष्क न होने देना चाहिए, नाहीं घर में काम करने

वाले स्थानों में शुष्क होने देना चाहिए- वरन उस को तुरन्त कागज़ या साधारण वस्त्र पर लेकर जला देना चाहिए। यदि ऐसा न हो सके तो उस वस्त्र या कपड़े को जलपूर्ण पात्र में डाल देना चाहिए ॥

(३) जिन वस्त्रों के साथ, या जिन कमरों में रोगी रहा हो, उन को शुद्ध करना चाहिए ॥

(४) जो रोग ग्रस्त हो जावें उन को किसी दशा में भी कम से कम जन समूह में न जाना चाहिए, ताकि दूसरों को रोग न हो, घोर आक्रमणों में रोगियों को रोगारम्भ से ३ सप्ताह तक काम से पृथक रहना चाहिए ॥

(५) कारखानों और वर्कशापों में वायु और सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। काम करने वालों को गरम वस्त्र पहिनने चाहिए, (स्मरण रहे कि यह रोग वहां शीत ऋतु में फैला था) और अनावश्यक नग्न नहीं होना चाहिए ॥

(६) जिन को रोग हो जावे, उन को तुरन्त आराम गरमी और विश्राम ढूंढना चाहिए, और उन को ध्यान रखना चाहिए कि घोर व्याधियों के साथ पुनराक्रमण हो जाने में बहुत भय है ॥

(७) भूतजनों को इन सूचनाओं पर विशेष ध्यान रखना चाहिए ॥

डाक्टर डासन विलीयम्ज ने लिखा है, कि यदि निमोनिया भी रोगी को हो गया था, तो पृथकी कारण का समय १० दिन पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्तिपश्चात् तक रखना चाहिए ॥

सर जे डबल्यू मूर ऐम० डी० लिखते हैं:—

"रोग का प्रतिबन्धकोपाय पूर्ण एकान्त निवास है, चाहे कैसे ही कष्ट से प्राप्त हो दूसरी बात यह है, कि मुख वा नाक विधि पूर्वक कीटाघ्न औषधियों के सूंघने, धोने, और पिचकारी करने से शुद्ध किए जावें ॥

"मेरा अपना तजरुबा यह है कुनीन रिज़ोरसिन इस मतलब के वास्ते बहुत उत्तम हैं। कुनीन सलफेट १ ग्रेन १ छटांक

शीतल जल में मिलाकर (ताकि हल करके) गण्डूश करना मुख के वास्ते बहुत उत्तम है। दूसरा प्रतिबन्धकोपाय रिज़ोरसिन (Risorcin) की पिचकारी है। रिज़ोरसिन ८० ग्रेन, गिलसिरीन १ औन्स, पेपरमेन्ट वाटर ७॥ औन्स मिलाकर मुख व नासिका धोनेके वास्ते अत्यन्त गुणकारी है। युकलिपटस आइल व थाईमोल (सत्व अजवायन) आइल आफ पोमिम्टोर और ऐसी ही अन्य वस्तुओं का सूंघना भी गुणकारी है। डाक्टर हेसर ने कुनीन खिलाना भी प्रतिबन्धकोपाय लिखा है॥

उपर्युक्त सम्मतियों में लगभग सब डाक्टरों की सम्मतियों का सार आ जाता है, इस वास्ते और सम्मतियां नहीं दी हैं। विलायत की पुस्तकों व रिसालों से पढ़ कर हमारे देशीय डाक्टर भी 'पूर्ण एकान्त लिख रहे हैं"। ईश्वर करे कि भारतवासियों के भीतर "पूर्ण एकान्त" निवास का ध्यान न आवे। प्लेग के विषय में जहां २ इस विचार ने ज़ोर पकड़ा वहां २ मुर्दे उठाने कठिन हो गए। और इस रोग में जहां पहिले ही बहुत से मुरदे हम गाडों पर लाद कर शमशान में ले जा रहे हैं, यदि यही दशा बढ़ती गई तो बहुत खराबी हो जावेगी। हमारी सोसाइटी में पूर्ण एकान्त का कोई प्रश्न ही नही है। न तो घर के रोगी को हम हस्पताल में भेज सकते हैं न रोगी से कुटुम्ब पृथक हो सकता है, और न हम स्वयम् किसी ऐसी जगह जा सकते हैं जहां सम्पूर्ण लोगों से हमारा सम्बन्ध कट जावे हमारा कर्तव्य यही है, कि शेष जितने नियम मानुषी सहानुभूति को न त्यागते हुए हमारे वश में हैं उन का पालन करें। ईश्वर पर बिश्वास रख कर रोगियों की सेवा करें। लाहौर में ऐसे कई मनुष्य मुझ को मालूम हैं, जो रात दिन रोगियों की सेवा में लगे रहते हैं, हर समय दीन रोगियों की आवश्यकतायें निवारण करते फिरते हैं। मुरदे स्वयम् उठा २ कर ले जाते हैं, और यह सब ईश्वर की कृपा से सुरक्षित हैं, शुभ काम करने से ईश्वर मन को ऐसा दृढ़ बना देते हैं कि उन पर बुरे प्रभाव नहीं होते हैं। आप मन को उठाए रक्खो, मरने से तो कोई बच सकता नही है। और मृत्यु का दिन भी ईश्वर के पास है," हम अपने कर्तव्य से क्यों गिरें। और मित्रों!

स्मरण रक्खो कि चाहे डाक्टर यही कहें कि एक रोगी से दूसरे रोगी को यह लग जाता है, परन्तु असल बात यही है, कि वायु-मण्डल में कोई खराबी आ जाती है, ५ वर्ष से युद्ध हो रहा है, कदाचित एक करोड़ मनुष्य मर चुके हैं, जिन में से बहुतों की लोथें वैसे ही गली सड़ी पड़ी होंगी। मुरदों से तैल निकालने के कारखाने निकले, विषैली गैसें बर्ती गई। न जाने कितना बारूद वायु में मिलचुका है, क्या इन सब की वर्तमानता में वायु वैसे ही रह सकती है। ऐसे ही सम्भव है, और कारण भी हों। यूरुप, अफरीका, अमेरिका सब जगह से इस रोग के समाचार आ रहे हैं, इकदम सम्पूर्ण जगत् पर इसका प्रभाव होना कुछ अर्थ रखता है। दुःख बढ़ रहे हैं, जरमनी में सहस्रों रेल के नोकर बीमार हैं। दक्षिणी अफरीका में बहुत वेग है, स्पेन से रोग तो आरम्भ ही हुआ है। जब अलग होकर भी बचने की कोई आशा नहीं है तो हम अपने नातेदारों, दीन रोगियों, आदि को त्यागने का मनुष्यत्व से गिरा हुआ कर्म क्यों करें।

अतः सज्जनों ! उपर्युक्त बातों का अवश्य ध्यान रक्खो परन्तु मानुषी सहानुभूति को कभी न भुलाओ ॥

यह बात हम साफ कहे देते हैं, कि सावधानियां करने पर भी यह आवश्यक नहीं है, कि कोई मनुष्य सदैव आक्रमण से बचा रहे। जितनी सावधानी हो उत्तम है, परन्तु डाक्टर स्वयम कहते हैं कि अभी तक कोई बात मालूम नहीं है, जिस पर दृढ़रूप से विश्वास किया जासके ॥

उपरोक्त थिएटरों आदि में न जाने की सावधानियों के अतिरिक्त प्रतिबन्धकोपाय जो हम पाठकों को बतलाना चाहते हैं, वह निम्न लिखित हैं:—

(१) इनफ्लूएनजा के विष से या उन कीटाणुओं से बचना तो कठिन दिखाई देता है। अतः ऐसा उद्योग करना चाहिए कि वह प्रभाव न कर सकें, और प्रविष्ट होते ही मारे जावें, इसका सब से उत्तम उपाय तो यह है, कि हम मन को दृढ़ रक्खें, मृत्यु भय को दूर कर दें, मन के बलवान् होने से रक्त के श्वेत परमाणु जो बाहिर के कीटाणुओं का मुकाबला करते हैं सतेज होते हैं, और

रोग का प्रभाव नहीं होने देते हैं, यही कारण है कि वबा में काम करने वाले स्वयम् सेवकों को परमात्मा बचाए रखता है।

(२) दूसरी बात यह है, कि शरीर को निर्बल करने वाले कोई काम न किए जावें, शारीरिक बल को सुरक्षित रक्खा जावे ॥

(३) स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियमों का पालन किया जावे, व्यायाम व सैर खुली वायु में करें, सादह भोजन वह भी थोड़ी क्षुधा रख कर खावें, विषमहार से यथा सम्भव बचे रहें, वाज का यह भी विचार है, कि मांस भक्षियों पर इसका प्रभाव शीघ्र होता है। परन्तु इस के विषय में हम को कोई विशेष प्रमाण नहीं मिला है ॥

वस्त्र पर्य्याप्त पहिनने चाहियें, ताकि शरीर को शीत न लगे, परन्तु उसे गरमी पहुंचाने के वास्ते बन्द कमरों में नहीं रहना चाहिये, वरन् वायु जितनी खुली हो उत्तम है। वायु अधिकांश उनको लगा करती है, जो वायु से डरा करते हैं, बन्द वायु उन को निर्बल कर देती है, बन्द वायु के पश्चात् जरा भी शीतल वायु उनको जुकाम कर सकती है ॥

(४) यदि प्रकृति पित्तज न हो तो आहार में अद्रक, दारचीनी, अजवायन, एलायची, सौंफादि का प्रयोग भाजी आदि में गुणकारी है ॥

(५) दैनिक १-४ बार अमृतधारा के गण्डूष करने चाहियें, हम तो इस प्रकार बतलाया करते हैं, कि दो पहर के भोजन के समय पहिले अमृतधारा साबुन से हाथ साफ करें, यदि अवश्यक हो मुख भी साफ किया जाय, फिर थोड़ासा पानी लेकर उस में ५-७ बूंद अमृतधारा मिलावें इस से पहिले भली भांति गुरारे करें, फिर उस से नाक धोवें, हाथ पर इस पानी को रख कर नाक इस में डुबोवें और पानी को ऊपर को भी खींचें, प्रत्युत नाक के भीतर भी चला जावे, इस प्रकार सायम् का भोजन खाने से पहिले कर लेना चाहिए, इस के अतिरिक्त अमृतधारा थोड़ी सी रूमाल पर लगा रक्खें, और उसे कई बार सूंघ लिया करें। यदि बहुत भय न हो, आप बहुत से रोगियों को देखते हो, या सुश्रूषा करते हो, तो २ बिन्दु दैनिक खा भी लेनी चाहिए, पानी के चमचे में खावें, इस से भी

उत्तम यह है कि फिटकरी खील करके रक्खें, और २ रत्ती दैनिक लेकर २ बूंद अमृतधारा मिलाकर पीलें-खाने के वास्ते अमृतधारा लौजंजिज़ (अर्थात् अमृतधारा की मीठी टिकिया) भी सेवन हो सकती हैं। टिकिया को मुख में रख कर चूसते रहें॥

अमृतधारा आदि कार्य्यालय अमृतधारा लाहौर से मिलसकती हैं, मूल्य इस प्रकार हैं:—अमृतधारा पूरी शीशी २॥), नमूना ॥), अमृतधारा साबुन ॥|=) प्रतिबक्स, और ।-) प्रति टिकिया; अमृतधारा लोज़िंजंज़ ।) प्रति डबिया (१०० टिकिया)

मैं दावे से कहता हूं, कि जितनी औषधियां थाईमोल, परमैंगनेट आफ पुटाश, कर्पूर, दारचीनी, युकालिपाटिस, कुनीन, रिजोरसिनादि कई डाक्टरों ने वर्णन की हैं उन सब से अमृधारा किसी से कम नहीं है। वरन् सब से बढ़ चढ़ कर है, और उन से इसका लाभ अधिक है। समय जो हम ने अंकित किए हैं वह आवश्यक नहीं, चाहे अन्य समयों में करें, जो समय उचित समझें २-३ बार करें। रोगी का कमरा भी इसी से साफ किया जा सकता है-जहां रोगी है, वहां २-३ बार खौलते हुए पानी में चन्द बूंद अमृतधारा डाल कर रख दें, उड़ कर समस्त कमरे में फैल जावेगी॥

नोट—मुख में तो हलक में जाकर, और नाक में नाक के सिरे पर जाकर इन कीटाणुओं का प्रभाव होना वर्णन किया जाता है, इस वास्ते गएडूश गले तक भली भांति होने चाहिएं, और नाक अन्त तक धोई जावे। पिचकारी वर्ते वा वैसे ही एक २ नथुने में जोर से खैंच लेवें॥

सार्व जनिक रोक थाम॥

यहां तक तो हम ने व्यक्तिक रोक थाम का वर्णन किया, इस के अतिरिक्त हम को ऐसे उद्योग भी करने चाहियें कि वायुमण्डल यथा सम्भव शुद्ध हो, साफ हो, गृह साफ रक्खे जावें, कमेटियां सफ़ाई का प्रबन्ध खूब करें, लोग जहां तहां थूकना नाक छिड़कना, बन्द करें, रोगियों के मल को भली भांति ठिकाने लगावें, और सब से बढ़ कर यह करें, कि आत्रेय जी महाराज की आज्ञानुसार लोगों को अधर्म्म से हटा

धर्म्म की ओर प्रेरित करें। भलाई के काम करें, दान, पुण्य, यज्ञ, हवन, भी होने चाहियें॥

हवन॥

सम्पूर्ण मारी रोगों के वास्ते अत्युत्तम प्रतिबन्धकोपाय है, और एक २ के करने से सब की भलाई है, इस से वायु में सुगन्धित कीटाघ्न औषधियों के परमाणु फैलाने का अभिप्राय होता है, घृत जो सब विषों का निवारक है, सम्मिलित किया जाता है। जब भारतवर्ष में घर २ हवन होते थे, इस प्रकार के रोग आते ही न थे, हिन्दू लोग वेदमन्त्रों के साथ सामग्री (सुगन्धित द्रव्यों का योग) और घृत डाला करते हैं, वेदमन्त्र इस वास्ते होते हैं, कि ईश्वर कृपा साथ रहे। और परमात्मा का नाम कभी न भूले। मुसलमान, ईसाई आदि वैसे ही यदि अग्नि जला कर सुगन्धित वस्तुओं को घृत में डालें तो बहुत उत्तम है, चाहिए कि सम्पूर्ण सुगन्धित वस्तुओंको एकत्रकर कूटकर रक्खें, और घृत से स्निग्ध कर अग्नि में डालना चाहिए। शुष्क नहीं डालना चाहिए। इस के अतिरिक्त और घृत भी डाला जावे तो उत्तम है। हिन्दुओं को चाहिए कि प्रत्येक नगर में प्रत्येक गली, और प्रत्येक घर में दैनिक हवन आरम्भ कर दें। इस से परमात्मा दया करेंगे और कोई वबाई रोग उन को न सताएगा॥

हवन सामग्री में जो सुगन्धित वस्तुएं डाली जाती हैं वह निम्न लिखित हैं, जितनी इन में से प्राप्त हों लेनी चाहियें:—

"कर्पूर, रक्त चन्दन, श्वेत चन्दन, गिलोय, निम्बपत्र, निम्बछाल, निम्बपुष्प, निम्बफल, अगर, कुन्दर, सिरसछाल, शीशमछाल, सर्षपश्वेत, बायबिडंग, नाग केशर, चिरायता, पित्त-पापड़ा, धनिया शुष्क, उशीर, गुग्गल, धूपकाष्ठ, हरमल, तुलसी केशरमूल, कमलपुष्प, गुलाबपुष्प, दूर्वा, पंवाड़, चम्बेलीपत्र, कमलगटा, नगन्दबावरी, नीलकण्ठी, कस्तूरी, केशर, अम्बर, जायफल, लवंग, जावित्री, लोबान कौडिया, निर्बसी, पठा, बेद-मुश्क, ब्राह्मी, छोहारा, बुड़ढाबुड़ढी, ब्रह्मी, कुष्ठ, मांसी, मुरा इत्यादि

इन के अतिरिक्त अजवायन, मुलेठी, बनफशा, गावज़बान, कासनी, का मिलना बहुत गुण कारी रहेगा ॥

हवन पर अधिक लिखने से यह पुस्तक बढ़ जावेगी, सविस्तर जो देखना चाहें वह हमारी रचित "प्लेगप्रतिबन्धकोपाय" नामी पुस्तक में देखें। एक बात लिखना आवश्यक है, श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने बतलाया कि मुजफरगढ़ जहां लग भग १५ मनुष्य रोज मर जाते थे, वहां सब लोगों ने एकत्र होकर २००) का हवन करवाया, जिस दिन वह हुआ उस दिन से न कोई रोगी हुआ और न उन रोगियों में से जो पड़े थे कोई मरा, इस वास्ते यदि नगर व कसबा की जन संख्या अनुसार पर्य्याप्त हवन होजावे, तो इसका अवश्य लाभ होगा॥

चिकित्सा

वैद्यक पुस्तकों में वात कफ ज्वर का जहां वर्णन है वहां लिखा है, कि इस ज्वर की चिकित्सा ९वें दिन करनी चाहिए। और आप को ज्ञात होगा, यि पहिले वैद्य व हकीम ज्वरारम्भ में कोई विशेष औषधि नहीं दिया करते थे, वरन् यह कहा करते थे, कि ज्वर कच्चा है—अभी कोई औषधि नहीं दी जावेगी, इस ज्वर में नवें दिन चिकित्सा कर ने का यह मतलब है, कि ८ दिन तक प्रकृति को अपने पर चल ने देना चाहिए, और आवश्यक सावधानियां आहार विश्रामादि, की रखनी चाहिए, ज्वर अपनी साधारण दशा में बना रहे, परन्तु यदि उचित सीमा से बढ़े तो निःसन्देह कम करना चाहिए, प्रकृति स्वयम् उसका मुकाबला कर रही है, इस वास्ते उसकी शक्ति कम हो तो उसको बल पहुंचाना चाहिए, परन्तु विशेष चिकित्सा की अवश्यकता नही है, आठवें दिन ज्वर स्वयम् उतर जाता है, यदि न उतरे तो ९ वें दिन से उसका विशेष इलाज करना चाहिए परन्तु वह समय नहीं है, यह ज्वर तो बवाई रूप में प्रगट हुआ है, और विषभाग इस में होने से इसकी चिकित्सा शीघ्र करनी पड़ती है, परन्तु साधारण अवस्था में कोई साधारण ज्वर हो जावे, और वैद्य किसी रोगी को कह आवे कि अभी इसको पका कर पानी देना, ४ दिन

पक्के बुखार हुआ, तो कोई नहीं मानेगा, तुरन्त दूसरा वैद्य मंगवाया जावेगा, आज कल कच्चे पक्के का कोई विचार नहीं रहा है, दवाई आरम्भ करना आवश्यक होती है, चाहे ज्वर उतर जावे, या औषधि के कारण से बढ़ जावे॥

इतना हम अवश्य कहेंगे कि इनफ्लूएनज़ा में भी यदि

४ सुनहरी सिद्धान्त

सन्मुख रख कर ८ दिन तक बहुत इलाज न किया जावे तो भी ८ वें दिन ज्वर स्वयम उतर जाता है, और जब कोई विशेष औषधि प्राप्त न होती हो, तो इधर उधर के इलाजों से रोग को अपने कोर्स में चल देना अधिक उत्तम है। इलाज न करने से अनुचित इलाज अधिक हानिकारक है। स्वामी सर्वदा नन्द जी ने मुझे बतलाया कि "मुलतान में ला० मोतीलाल प्लीडर हैं, उन के एक बालक को ज्वर हुआ, डाक्टरी इलाज आरम्भ हुआ, इलाज होते २ सात रोगी हो गए, परन्तु आराम किसी को न आया, तो उन्हों ने इलाज त्याग कर हवन सामग्री में गिलोय, गावज़बान, बनफशा, मुलेठी डाल कर हवन कराया, और रोगी के कमरों में इसी को सुलगाना आरम्भ किया इस के पश्चात् कोई बीमार नहीं हुआ, और वह भी अच्छे हैं॥

वह ४ सुनहरी सिद्धान्त यह हैं:—

(१) पूर्ण विश्राम (२) शरीर को ऊष्ण रखना, शीतल वायु के झोंकों से बचना, (३) चुपचाप रहना (४) हृदय को निर्बल न होने देना॥

इन के साथ आवश्यक सावधानियां निम्न लिखित हैं:—

(१) जब अभी चित्त खराब हुआ, ज्वर का आरम्भ ही हुआ है, तो सब से प्रथम इलाज यह है, कि कुछ खाया न जावे, लंघन किया जावे, दूसरे दिन यदि जी चाहे, तो दूध देना चाहिए, दूध यद्यपि नए ज्वरों में वैद्यक में वर्जित है, परन्तु इस में विष होता है इस वास्ते दूध की हम आज्ञा देते हैं। परन्तु एक दो दिन तक अवश्य लंघन किया जावे, तो उत्तम है।

और यदि कफ बहुत हो, नाक बहुत आती हो, तब भी दूध कम दिया जाता है, इस दशा में चने का पानी, मूंग की दाल का पानी यवागू आदि पिलाते हैं, इस के पश्चात सम्पूर्ण अवस्थाओं में दूध हो जितनी आवश्यकता हो दिया जाता है। परन्तु विना इच्छा नहीं जब रोगी की इच्छा हो तब उत्तम है। दूध गरम हो, खांड डाल कर दिया जावे, परन्तु मलाई उस में नहीं होनी चाहिए, डबलरोटी दूध, सागूदाना, ५ वें दिन पीछे ज्वर कम होने पर दिए जा सकते हैं, परन्तु ग्राही पदार्थ न देवें, चावल कफ उत्पन्न करते हैं इस लिए हम नहीं देते। दूध इतना न दिया जावे, कि पच न सके, और अतिसारादि हो जावे। यदि कफ की अधिकता हो और दूध देना आवश्यक हो तो सोंठ, पीपल, दारचीनी, एलायची, चित्रक ३—३ माशा, १ पाव पानी में उबाल कर इस पानी में ३ भाग दूध डाल कर चायवत थोड़ा २ पिलावें॥

(२) तीसरे दिन यदि कोष्ठबद्धता मालूम हो, तो कोई लघु विरेचन देना चाहिए, परन्तु इतना नहीं कि अधिक दस्त हो जावें, इस रोग में अतिसार लग जावें तो भयानक होते हैं॥

इस लिए यदि पाखाना हो जाता हो तो विरेचन की आवश्यकता नहीं, अन्यथा ऐसा विरेचन कि एकाध दस्त होजावे॥

विरेचनार्थ निम्न लिखित औषधि ज्वर को भी कम करती है, और विष को हटाती है, खांसी, जुकाम आदि को भी गुणकारी है॥

पीतहड़ छाल, बहेड़ा छाल; आमला, गिलोय, १—१ तोला लेकर यवकूट कर सेर पानी में पकावें जब आध पाव रहे तो उतार छान खांड डाल कर पिलावें, इस से १ या २ दस्त खुल कर होंगे, मवाद निकल जाता है, इस के अतिरिक्त एरण्ड तैल, अंग्रेज़ी मेगनेशिया साल्ट, फुरूटसाल्ट इत्यादि से भी काम लिया सकता है। और विरेचन की ऐसी वस्तुओं की आज्ञा है, तेज औषधियां वर्जित हैं, और जहां अच्छी औषधि न मिले न दिया जावे॥

(३) पानी को उबाल कर रख लिया जावे, और ठंडा

करके या गरम २ दिया जावे, पित्त प्रकृति वालों को ठंडा करके, और 'कफ प्रकृति को ऊष्ण ही एक बार में अधिक न दिया जावे, वैसे जितनी बार तृषा लगे दिया जा सकता है। शुद्ध जल ५ सेर पात्र में डाल कर अग्नि पर रख कर इतना पकावें कि १ सेर रह जावे, इस जल में एलायचीदाना, दारचीनी, पीपल, मुलट्ठी, अजवायन, थोड़ी (२—२ माशा) डाल दी जावे तो उत्तम है। पानी अग्गि से उतार कर अलग रख दें, ताकि स्वयम शीतल हो जावे, इस को पंखा से शीतल न करें, न हिला जुला कर शीतल करें। और दिन के वास्ते दिन को और रात्रि के वास्ते रात्रि को तैयार करें। यदि बच रहे तो फैंक दिया करें। इस को शास्त्रों में अमृत लिखा है हम इस को अमृत जल कहा करते हैं। पहिले दिन सिवाय इस के कुछ न दिया जावे, और फिर साधारण पानी की जगह इस को दिया जावे॥

(४) ज्वर जब १०३ से बढ़ने लगे तो सिरका व गुलाबार्क मिला कर थोड़ा गुलाब तैल मिला कर रख लें, और वस्त्र की टाकी भिगो कर शिर व माथे पर रक्खा करें, और बार२ बदलते रहें, यदि यह न मिल सकें तो पानी में नौशादर मिला कर इस की पट्टी रक्खें, और यह भी न मिले तो केवल पानी की पट्टी रखनी चाहिए, ज्वर वेग को कम करने के वास्ते डाक्टर लोग ऐसपीरिन (aspirin) फेनिस्टाईनादि औषधियां देते हैं जिन से स्वेद आकर ज्वर उतर जाता है, परन्तु हम ने इस को आज़मा कर देखा है, हानि के सिवाय लाभ नहीं हुआ, इन को उतर जाने वाले ज्वरों में देना ठीक है, वबाई ज्वरों में थोड़ी देर के वास्ते ज्वर कम होकर फिर वैसा ही हो जाता है, और निर्बलता अलग बढ़ जाती है॥

अमृतसर के डा. सत्यपाल जी एम. डी. ने लिखा है कि कई डाक्टर भी ऐसपीरिन आदि की निन्दा करते हैं, यह उन की भूल है। यह अच्छी औषधियां है, परन्तु जो हमारा अनुमान है सो हम ने लिखा है॥

(५) छाती घुटी हुई मालूम हो तो घी गरम कर के मालिश कर देनी चाहिए। और यदि छाती में खांसने से पीड़ा हो तो अजवायन का क्काथ थोड़ा २ पिलाना चाहिए॥

(६) कमरा जिस में रोगी रक्खा जावे, यथा सम्भव खुला होना चाहिए, उस में बहुत असबाब और सोने वाले नहीं होने चाहियें और अन्य कमरों से इस का गरम होना उत्तम है, कमरे के द्वार व झरोखे खुले रहें, ता कि ताज़ा वायु का गमनागमन होता रहे, परन्तु रोगी के पास ही जो द्वार हों, वह बन्द रहें, ताकि रोगी को वायु लगने का भय न रहे। वायु के झोंके रोगी पर आने अच्छे नहीं। वैसे वायु खुली व साफ़ चाहिए, और रोगी को गरम वस्त्र पहिनाकर गरम रक्खे, परन्तु वायु बन्द कर के गरम करने का यत्न न करें। बन्द कमरे में कोयले सुलगाना अत्यन्त हानि कारक है। कोयले रखने आवश्यक हों तो बाहिर सुलगा कर फिर खुले कमरे मे रखने चाहियें॥

यदि इन सावधानियों के साथ रोगी को सुख से लेटाए रक्खें, और रोग को प्राकृत दशा पर चलने दें, तो ईश्वर कृपा करते हैं, साधारण औषधियां जो लिखी हैं, वह भी न मिलें तो केवल अमृत जल पर सन्तोष करो। सदैव सर्व शक्तिमान का ध्यान रक्खो, उस के हाथ में सब कुछ है। यदि वह रखना चाहे कोई मार नहीं सकता है॥

अब हम उन योगों

का वर्णन करते हैं, जो इस रोग में हितकर प्रमाणित हो चुके हैं, या हो सकते हैं। इन योगों को उपर्युक्त सावधानियों को सन्मुख रखते हुए सेवन कराना चाहिए। प्रत्येक रोग के संसार में अनेक योग होते हैं, किसी के कोई हाथ चढ़ जाता है, किसी के कोई चढ़ जाता है। कहीं किसी वस्तु के प्राप्त करने में सुगमता होती है, कहीं दूसरी वस्तु के। और ऐसा भी होता है, कि किसी रोगी को एक योग अनुकूल न आवे तो दूसरा बदलना पड़ता है॥

हम को जितने उत्तम योग मिले हैं वह सब हमने दे दिए हैं, इन के अतिरिक्त और भी चिकित्सक वर्तते होंगे, इन योगों के सम्बन्ध में भी कुछ

सुनहरी नियम

सदैव याद रखना चाहिये:—

(१) दवाई न बहुत शीतल हो, न अत्युष्ण हो, शीतलौषधियों से निमोनिया होने का भय रहता है, और ऊष्णौषधियों से ज्वर बढ़ कर कभी सन्निपात तक हो जाता है ॥

(२) औषधियां इस प्रकार की कदापि नहीं देनी चाहिऐं कि जो कफ को न तो पकावें और न निकालें, वरन् शुष्क कर दें, प्रायः उष्ण रुक्ष औषधियों का यह परिणाम भी हुआ है, हम किसी की निन्दा नहीं करना चाहते, इलाज वही अच्छा है जो रोगी को स्वस्थ कर दे, चाहे वह डाक्टरी हो या देशी। परन्तु यह बात नगर में खूब प्रसिद्ध है, कि बाज़ अंग्रेज़ी डाक्टरों से रोगी अधिक मरे हैं, इस का कारण यह है कि डाक्टरी में दोषों का ज्ञान नहीं, तजरुबा से अच्छे डाक्टर इन बातों को मानते हैं। अतः बाज़ डाक्टरों ने रुक्षौषधियां वर्ती जिस से कफ बन्द होकर निमोनिया तक नौबत पहुंची। पूना में रजिस्टर रख कर वैद्यक और डाक्टरी चिकित्सा का परिणाम देखने पर भी यही निकला कि वैद्यों के रोगी अधिक अच्छे हुए ॥

हमें ध्यान रखना चाहिए कि कफ शुष्क होकर फेफड़े में खराश करने का हेतु न बने ॥

(३) तुरन्त दवाई बदलनी नहीं चाहिए, जिस दवाई से कोई विशेष और कष्ट नहीं बढ़ता वरन् कुछ आराम आ रहा है, उसी को सेवन करते रहना चाहिए, प्रातः और दवाई है; दोपहर और दवाई है, सायम को और दवाई है। इस प्रकार से औषधियां भी भीतर जाकर आपस में लड़ने झगड़ने लग जावेंगी रोग को उन्होंने कहां दूर करना है, रोगी को तथा सम्बन्धियों को ऐसे रोग में निःसन्देह बड़ी चिन्ता होती है, परन्तु इस गड़ बड़ी में तो हानि ही होती है। इस वास्ते तो मैं पहिले लिख आया हूं कि बुरे इलाजों से कोई इलाज न करना अच्छा है। अब योग लिखते हैं॥

(१) सब से प्रथम सुगम हानि रहित, अनुभूत ६६ प्रति सैंकड़ा गुणकारी इलाज यह है, कि उपर्युक्त अमृत जल अजवायन के

पानी आदि के साथ अमृतधारा सेवन की जावे, अमृतधारा इस रोग के वास्ते अकसीर प्रमाणित हुई है। प्रायः दो ३ दिन में ज्वर छोड़ देता है। और बिना किसी हानि के उतर जाता है, सहस्रों शीशियां इसी रोग के वास्ते लोग मंगवा रहे हैं। और हर जगह से इसकी प्रशंसा हो रही है, जिस प्रकार के पत्र आते हैं, उनका नमूना नीचे अंकित करना अनुचित न होगा॥

(१) "श्रीमान् पण्डित जी। सत श्री अकाल अमृतधारा का सेवन फिटकरी के साथ पुरइसरार बीमारी के थोड़े रोगियों पर सचमुच बहुत गुण कारी प्रमाणित हुआ है, ६ शीशी अमृतधारा बहुत शीघ्र वी० पी० द्वारा भेज दें॥

रत्नसिंह हेडमास्टर खालसा स्कूल खारियां"॥

(२) "श्रीमान् पण्डित जी! नमस्ते, मैं डाकखाना मुलतान नगर से बदल कर सरायसिदूधू आगया हूं, आपकी शीशी अमृत-धारा ने सम्पूर्ण कुटुम्ब और जहां २ सेवन कीगई सचमुच बड़ा लाभ पहुंचाया, अर्थात् इस भयानिक जंगी ज्वर के रोगियों पर वर्त कर आराम पाया, आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूं॥

जगन्नाथ पोस्ट मास्टर सरायसिदूधू"॥

(३) "महाशय नमस्ते! अप्रैल सन १९१८ से अब तक आप के यहां से ३ शीशी अमृतधारा मंगा चुका हूं, इससे जो लाभ हुए अंकित करता हूं:—

"(१) अमृतधारा ने प्रत्येक रोग में गुण किया (२) आज कल यहां जंगी बुखार बहुत है. अमृतधारा की केवल १–२ बूंद देते रहने से सब का ज्वर भाग गया, सब औषधियों से गुण-कारी इस ज्वर में अमृतधारा पाई (३) एक मनुष्य को बिच्छू ने डंक मारा, पीड़ा से व्याकुल था, अमृतधारा की एक ही मात्रा ने पीड़ा दूर की (४) प्लेग के कई रोगी इस से अच्छे होगये (५) जुकाम, सिर:शूल विषूचिकादि में अकसीर है॥

रामचन्द्रप्रसाद वर्मा छाता जिला मथुरा"॥

(४) "प्रिय पंडित जी! अमृतधारा के नाम का एक २ अक्षर अपने में सैकड़ों गुण रखता है, क्या यह आश्चर्य्य नहीं, जो रोगी पहिले यह दरियाफ्त करता है, कि, क्या यह अमृतधारा

है, यदि है तो तुरन्त सेवन कराओ, इनफ्लूएनजा ज्वर इन दिनों खूब जोरों पर है इस के कारण सैकड़ों मनुष्य मर रहे हैं॥

"इसी सप्ताह का बयान है कि जब यह रोग इस जिले में फैला तो मेरी स्त्री व बालक भी इस रोग से बच न सके, पहिले ही दिन ज्वर ने अचेत कर दिया, शिरःशूल आरम्भ हो गया, मैं तो आप की इस अमूल्य औषधि का प्रेमी होगया हूं, हर समय साथ रखता हूं, खुदा का नाम लेकर शीशी को निकाला, निकालना था कि सुगन्ध से बच्चों ने पहिचान कर कहा कि क्या अमृतधारा है ? यदि है तो तुरन्त सेवन कराओ, मैं उनका विश्वास देख कर हैरान रह गया, खुदा का नाम लेकर सेवन कराया, और अब सब को आराम है,यह दवाई प्रत्येक रोग में अकसीर का प्रभाव रखती है

सय्यद निसार हुसैन सरिश्तेदार आबपाशी महबूब नगर"॥

(५) "श्रीमान् पंडितजी ! नमस्ते। निवेदन है कि आजकल जब ज्वर का अत्यन्त जोर है, सम्पूर्ण ग्राम और इतस्ततः के ग्रामों में कोई घर बीमारी से खाली नहीं, मेरे पास दो शीशी अमृतधारा थी, वह समाप्त होचुकी है, इस अवसर पर बड़ी गुणकारी प्रमाणित हुई, अतः निवेदन है कि ५ शीशी वी० पी० द्वारा और भेज दें॥

जयराम दास मुदर्रिस अकबरगढ़"॥

(६) "मान्यवर श्रीमान् पण्डितजी ! नमस्ते, आप को याद होगा कि मैं आप की गुणकारी औषधियों का विशेषतया अमृतधारा का प्रेमी बन कर बारम्बार औषधियां व अमृतधारा वी० पी० द्वारा मंगा चुका हूं, अमृतधारा सचमुच अनुपम औषधि है। और अनेक अवसरों पर मुझ को व अन्य लोगों को बहुत लाभ पहुंचाया है, सच पूछो तो एक डाक्टर जैसी दशा हो गई है, जो ग्रामीण या मित्र बीमार होता है, मुझ से औषधि मांगता है, और अमृतधारा द्वारा ईश्वर की कृपा से आराम हो जाता है, आजकल बारफीवर का जोर है, इस में जिस को थोड़ी सी दी उस पर ईश्वर ने दया करदी, सर्प उसे हुए, ज्वरग्रस्त, वक्षशूल, जुकाम, इत्यादि रोग दो २ दिन में अच्छे हो गए। कहां तक वर्णन करूं अब मुझ को और औषधियां वी.पी. द्वारा भेजदें॥

जमशेदसिंह असिस्टन्ट स्टेशनमास्टर ओडीरीफ़ल"॥

(७) मैनेजर साहिब कारखाना अमृतधारा ! तसलीम आप का भेजा पार्सल अमृतधारा पहुंचा यहां पर जंगीज्वर बहुत अधिक फैल गया है, अतः दवाई बहुत शीघ्र समाप्त हो गई, ईश्वर कृपा से बहुत से रोगी अमृतधारा से अच्छे हो गए, अब कृपया २ नमूना अमृतधारा वी. पी. द्वारा और भेजें ॥

मखदूमअली मुन्शी तहसील गंगावती"

(८)मैनेजर अमृतधारा ! कृपया२ शीशी अमृतधारा नमूना वी. पी. द्वारा भेज दें क्योंकि नए ज्वर में अकसीर का लाभ पहुंचाया ॥

सुन्दरसिंह असिस्टन्ट ट्रेन अगज़मनर कटनी" ॥

(९) जनाब मैनेजर साहिब ! नमस्ते मेरे पास १० नमूना अमृतधारा थीं जो कि इस नजली बुखार में ग़रीबों मुहताजों को सेवन कराई उस से जो लाभ हुआ है, उस का वर्णन करना कठिन है, फिर कभी सविस्तर लिखूंगा, इसका सेवन फिटकरीखील के साथ कराया गया, प्रत्येक मनुष्य को दवाई मुफ्त दी जाती है ॥

ऐम. आर. शर्म्मा खानखाना" ॥

(१०) श्रीमान् जी ! नमस्ते । यहां कुशल है, आप लोगों की कुशल परमात्मा से चाहता हूं, ताकि धर्म्म कार्य्यों में सहायता, और धर्म्म कार्य्यों की बहुत आशाएं प्रभु कृपा से पूरी होंगी, आगे प्रार्थना है, कि इस छोटे से नगर में जिसकी वस्ती लगभग ८ सहस्र होगी इनफ्लूएनज़ा बुखार का बड़ा ज़ोर है, १७ मनुष्य दैनिक के हिसाब से मरते हैं, और लगभग ५०० मनुष्य के बीमार पड़े हैं, और प्रति दिन बढ़ते जा रहे हैं, ऐसी दशा में आर्य्य समाज और भी अपना कर्तव्य पालन कर रही है, १ शीशी अमृतधारा एक महाशय ने समाज को दिया था, जिस से कई रोगी सर्वथा अच्छे हो गए, और कितनों की दवाई अभी हो रही है, ऐसी दशा में इस समाज के कार्य्य कर्ताओं की प्रार्थना है,कि एक शीशी अमृतधारा कृपया अर्द्ध मूल्य पर भेज कर अनुगृहीत करें । परमात्मा आप को नेकी का फल नेक ही देगा ॥

विश्वेश्वरी प्रसाद मंत्री आ. स. बरई" ॥

(११) "यहां सम्पूर्ण लखनऊ में एप नज़ली की बीमारी बहुत जोरों से फैली हुई है, सैकड़ों मनुष्य दैनिक मर रहे हैं, घर

के घर नष्ट हुए जा रहे हैं, मेरे घर में ५ मनुष्य इस समय बहुत बीमार हैं. एक शीशी अमृतधारा जो कि पहिले मैंने आप के यहां से मंगाई थी, वह यहां एक रोगी को सेवन कराई उसे बहुत लाभ हुआ, परन्तु दवाई समाप्त है, आप की अमृतधारा अनुपम है, अधिक क्या प्रशंसा करूं, जो इस समय मेरे घर के लोगों को जीवन प्रदान कर रही है, आप की अत्यन्त कृपा होगी यदि आप यह दवाई पत्र देखते ही मेरे नाम भेज देंगे, मेरा इस औषधि पर बड़ा विश्वास है ॥

रघुनन्दन प्रसाद लखनऊ" ॥

(१२) (अंग्रेजी से अनुवाद)"कृपया २ शीशी अमृतधारा मूल्य ५) बहुत शीघ्र रवाना करें. मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि आप की जादू भरी अमृतधारा ने इनफ्लूएनज़ा को फायदा दिया है, मैंने केवल ३ बूंद पानी में दो बार दिन में दिए ॥

ऐन परथा सरतरी एजन्ट बेस्ट ऐण्ड कम्पनी सैदापूरम नीलोर" ॥

अमृतधारा के गुणकारी होने के कारण इस की मांग इतनी इन दिनों बढ़ी हुई है कि सैंकड़ो शीशियां इकट्ठी लोग मंगवा रहे हैं। यथा थोड़े ही दिनों की डाक में यह आर्डर हैं:—

सय्यदहुसैन बलगाम २०० नमूना अमृतभारा ॥

हाज़ी बदरुद्दीन गुलाम हुसैन हैदराबाद दकन १००० अमृतधारा ॥

फिदा अलीशेख कमरुद्दीन सौदागर हैदराबाद ७६० नमूना १२० अर्द्ध शीशी अमृतधारा ॥

जीकावन्कट चेलापट हसूर मद्रास १४४ शीशी ॥

सय्यद अबदुलवहाब निजामाबाद १०० नमूना अमृतधारा ॥

बीटी पटंगी रायचूर ७२ शीशी ॥

रामचन्द्र मधुबनी दरभंगा १०० शीशी ॥

सुख संचारक कम्पनी मथुरा १४४ शीशी ॥

सय्यद अबदुल क़ादिर हैदराबाद दकन २०० नमूना, २४ अर्द्ध १२ सालम अमृतधारा ॥

मिट्ठनलाल जी आगरा ८ सालम, १०० नमूना, २४ अर्द्ध शीशी अमृतधारा ॥

महम्मद इसमाईल, महम्मद यासीन पत्थर गेटी हैदराबाद ६०० नमूना ॥

अब्दुलरिज़ाक कैमिस्ट धामन ६०० नमूना, ३६ सालम, ३६ अर्द्ध शीशी अमृतधारा ॥

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा तीसरी बार २८८ नमूना अमृतधारा ॥

सय्यद अब्दुलरिज़ाक १५० नमूना ॥

श्रीवादा दुर्ग तीसरी बार २०० नमूना ॥

अमृतधारा की सेवन विधि

सुगम है, इस को शर्बत एजाज़ व गावज़बान अर्क के साथ ३—३ बूंद दिन में तीन बार देना चाहिए शर्बत न मिले तो केवल अर्क से, वह भी न मिले तो "अमृतजल" जो पीछे पीने के वास्ते देने को कहा उसी में देते जावें, या निम्न लिखित अजवायन का पानी अमृतधारा देने के वास्ते बना लें, अजवायन ५ तोला, १॥ सेर पानी में डाल कर इतना पकावें कि ३ पाव (१ बोतल) रह रह जावे, इस को छान कर बोतल में भर लिया जावे, या किसी साफ गिलास में ढक कर रक्खा जावे, इस में से दिन में ३-४ बार २॥ तोला लेकर इस में ३ बूंद अमृतधारा डालकर देना चाहिए, यह मात्रा युवा की है, बालकों के वास्ते कम करें, तीन माशा से १ तोला तक यथा आयु लेवें, और अमृतधारा इसी में १ बूंद से २ बून्द तक देनी चाहिए ॥

ईश्वर न करे यदि निमोनिया का भय हो, तो भी यही दवा देनी चाहिए, उस को भी गुणकारी है ॥

यदि पित्त प्रकृति है और ज्वर का अधिक वेग रहता है, तो अजवायन ३ माशा हरित मिलोय १ तोला, पीपल १ नग, सेंधा नमक १ माशा, रात्रि को थोड़े पानी में भिगो कर रक्खें, यदि समय न हो तो उसी समय फिर इस को घोट कर उस का पानी निकाल कर उस में अमृतधारा की ३ बूंद डाल करके

देवें, ऐसे ही एक बार सायम को दे दिया करें, यदि प्रकृति के भीतर रूक्षता बहुत हो, कास सर्वथा रुक्ष हो, कफ न निकलता हो, नाक बन्द हो, तो अमृतधारा गावजबाकं में देवें, और इस के अतिरिक्त प्रातः समय निम्न लिखित औषधियां दिया करें:—

खरबूजा की गिरी, कद्दूगिरी, तरबूज गिरी, प्रत्येक १ तोला, गावजबानार्क ३ छटांक में घोट कर उस का दूध निकाल कर और बीहदाना ६ माशा आध पाव अर्क में अलग भिगो कर उस को मिला कर लुआब निकाल कर उसी में मिला कर प्रति प्रातः पिला देना चाहिए, तीन दिन तक पर्य्याप्त होगा। यदि कोष्टबद्धता हो, तो एक दिन गिरियों के साथ गुलबनफशा ६ माशा, भी सम्मिलित करें, जिस से १—२ दस्त हो जाते हैं, न हों तो दूसरे दिन भी सम्मिलित करें॥

अमृतधारा खांसी को भी गुणकारी है, इस वास्ते इस इलाज के साथ खांसी के वास्ते किसी दूसरी औषधि की आवश्यकता नहीं रहती है, जब ज्वर उतर जावे तो अमृतधारा को ही सेवन किया जा सकता है। यदि कास शुष्क है, तो लुआब बीहदाना में मिला कर देते रहें। और यदि खांसी तर है, तो मुलेठी छिली ३ माशा पानी में भिगोकर उस का पानी लेकर उस में डाल कर या मधु में मिला कर देते रहें॥

इस प्रकार से अमृतधारा से इलाज करने की विधि है, एक बात अमृतधारा के विषय में खूब स्मरण रखनी चाहिए, कि जिस औषधि के साथ मिलाई जावे, उस के प्रभाव को बढ़ा देती है, अतः उस रोग के वास्ते जितनी गुणकारी औषधियां हैं उन में अमृतधारा को मिला कर देने से उनका लाभ बहुत बढ़ जावेगा। न किसी दवाई के साथ मिला कर देने, और न किसी दवाई के साथ २ अमृतधारा को भी देने में हानि है। प्रत्येक अच्छी दवाई के साथ इस से लाभ उठाया जा सकता है, यह एक विचित्र वस्तु ईश्वर कृपा से प्राप्त हुई है॥

हां स्मरण रहे, कि इस की नक़लें जो लोग कर रहे हैं, उन से बचना चाहिए, असल की जगह नक़ल को सेवन न करें॥

(२) मेरे एक मित्र वैद्य ने मुझ को बतलाया कि उन्हों ने इस रोग में "कफकेतु रस" को अत्यन्त गुणकारी पाया है, प्रारम्भ में देने से प्रायः ज्वर होता ही नहीं है, और यदि हो जावे तो कम रहता है, शिरःशूल तीसरे दिन उतर जाता है, खांसी जुकाम को भी लाभ होता है। उन्हों ने कहा कि वह इस को सैंकड़ों रोगियों पर आज़मा चुके हैं, केवल १—१ वटी सायम् प्रातः देते हैं जो कि रोगी चूसता रहता है। कफकेतु रस के दो चार योग हैं, परन्तु निम्न लिखित हमारी सम्मति में सब से अच्छा रहेगा॥

कफकेतु रस का योग॥

सोहागा खील, पीपल, शंख भस्म, विच्छनाग शुद्ध, सम भाग लेकर अद्रक रस में एक दिन खरल करके १—१ रत्ती की वटी बनावें, लिखा है कि इस के सेवन से पीनस, जुकाम, खांसी, श्वास, कण्ठरोग, और कफज रोग दूर होते हैं; इन के अतिरिक्त विच्छनाग इस में होने से ज्वर को अवश्य लाभ होता है, इस वास्ते अवश्य इस का लाभ होगा, परन्तु जहां रुक्षता अधिक हो इस को किसी स्निग्ध वस्तु के साथ देना चाहिए॥

विच्छनाग को शुद्ध करने की विधि यह है, कि इस को ३ दिन गोमूत्र में भिगो दिया जावे, गोमूत्र प्रति दिन नया होना चाहिए। शंख भस्म करना हो तो एक कूज़ा में डाल कर घृतकुमारी रस इतना डालें, कि वह डूब जावे फिर १ मन ऊपलों की अग्नि दें भस्म होगी॥

(३) लाहौर में हमारे एक भाई मृत्युंजय रस को वर्त रहे हैं, उन का भी दावा है कि यह इस रोग के वास्ते अकसीर प्रमाणित हुआ है। २—३ दिन में ज्वर को दूर कर देता है, उन्हों ने इस को सैंकड़ों रोगियों पर वर्ता है, और वह कहते हैं कि इस से निमोनिया भी नहीं होता है। और देते ही ज्वर कम होना आरम्भ होता है॥

मृत्युंजय रस का योग ॥

मृत्युंजय रस के बहुत योग हैं, परन्तु जो इस रोग में और हर प्रकार के मैलेरिया आदि में भी अकसीर है, और बनाना भी सुगम है, वह निम्न लिखित है, (महामृत्युंजय रस यद्यपि सर्वथा अकसीर होता है, परन्तु वह सर्व साधारण नहीं बना सकते, इस वास्ते नहीं दिया है)

बच्छनाग शुद्ध १ तोला, कृष्णामरिच १ तोला, पीपल १ तोला, गन्धक १ तोला, सोहागा १ तोला, शिङ्गरफ शुद्ध १ तोला, सब को पीस कर अद्रक रस में १—२ दिन खरल करके मूंग प्रमाण गोलियां बनावें, इस की मात्रा १—२ वटी सायम प्रातः है, बालकों को ¼ गोली से ½ गोली तक, बूढ़ों व निर्बलों को भी कम देवें। साधारण अनुपान इस का मधु है । मधु से हर नए ज्वर में गोली दी जा सकती है, मैलेरिया ज्वरों में श्वेत जीरा १ माशा, गुड़ २ माशा, के साथ मिला कर देनी चाहिए, बारी का ज्वर आने से पहिले इसी प्रकार दी जा सकती है, ज़ीरा व गुड़ मिला कर पीछे पानी या सौंफार्क, या गिलोय आदि पिलावें, सन्निपातों और निमोनिया आदि में, अद्रक के रस से दी जाती है, इनफ्लूएनज़ा में भी इसी प्रकार या अजवायन के काढ़े से दी जावे। ९० प्रति सैकड़ा सर्व प्रकार के नए ज्वर को यह वटी एक दिन में उतार देती है । पित्तकोप हो तो कोई शर्बत दिया जा सकता है ॥

शिङ्गरफ़ को शुद्ध करने के वास्ते इस को ३ दिन लीमू रस में खरल कर लो, बिच्छनाग की शोधन विधि ऊपर बता ही चुके हैं ॥

स्मरण रहे कि वैद्यक रस ऋषियों ने ऐसे बनाए हैं, कि कोई नए से नया रोग भी निकले, इन्हीं में से कोई उस के वास्ते भी अकसीर निकल आवेगा। बीसियों रस वात कफ के ज्वरों को अकसीर हैं। और इस रोग में भी गुणकारी हो सकते हैं । जो किसी ने आज़माया वही उस के वास्ते ठीक आगया ॥

(४) बाज़ वैद्य चन्द्रामृत रस को इस रोग में गुणकारी

कहते हैं, और सचमुच चन्द्रमृत रस की औषधियों से प्रगट होता है, कि वह कम से कम इसकी खांसी के वास्ते अकसीर ही होना चाहिए। यह रस सर्व प्रकार की खांसी के वास्ते अनुपम है। इस के योग रस रत्नाकर में दो हैं, उत्तम योग निम्न लिखित हैः—

चन्द्रामृत रस योग ॥

त्रिकुटा (पीपल, कृष्ण मरिच, सोंठ), त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला), चव्य, धनिया, ज़ीरा श्वेत, सेंधा नमक, १—१ तोला, शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासार गन्धक, फौलाद भस्म, प्रत्येक २ तोला, सोहागा ४ तोला कृष्ण मरिच २ तोला, पहिले पारा व गन्धक की खूब कज्जली करें, फिर फौलाद, सोहागा, कृष्ण मरिच डाल कर खरल करें, फिर शेष औषधियों को अलग पीस कर इस में मिलावें, और अजादुग्ध से १—२ दिन खरल कर के इस की वटी बनावें, वहां तो ६ रत्ती की वटी लिखी है, परन्तु यह आज कल के लोगों के वास्ते बहुत अधिक है। ३ रत्ती की वटी बनानी चाहिए। १—२ वटी दैनिक सेवन करें। यह वटी मुख में रख कर कफकेतूरस की भांति चूसी भी जा सकती है, और दूधादि से भी दी जा सकती है। यह रुक्षकास में भी गुणकारी है, क्योंकि कफ़ निकाल भी देती है, पका भी देती है, रस रत्नाकर में लिखा हैः—

"यह गोली रक्तकमल, या नील कमल के रस में, या अजादुग्ध में, या पिच्छ में मिला कर कमोदनी के रस में मिला कर रोज खावे, इस से विविध प्रकार की खांसी, वातोत्पन्न खांसी, पितज खांसी, कफ वातज खांसी, किसी विष से उत्पन्न खांसी, रक्तज खांसी, रुक्षकास, ज्वर, श्वास युक्त कास. तृषा वेग, दाह, भ्रम, और शूलादि दूर होते हैं। और क्षुधा व पाचन शक्ति को बढ़ाती है। बल देने वाली, वीर्य्य वर्द्धक प्लीह, गुल्म, अफारा, उदरकृमि, पाण्डू. जीर्ण ज्वर, को दूर करती है, यह योग श्रीचन्द्रनाथ सिद्ध का निर्म्माणकृत है। और आनित्यनाथ ने इस पर नोट चढ़ाया है, कि इस में बांसा, गिलोय, भारंगी, नागरमोथा, कटाई, (१-१ तोला) मिलाकर भोजन

पश्चात् सेवन किया जावे तो वीर्य्य बढ़ता है। हमारी सम्मति में इनफ्लूएनज़ा की दशा में भी यह मिला लेनी चाहिये, इस दशा में वटी ४ रत्ती की बनाई जावे॥

(५) शार्ङ्गधर लिखित व्योषादि वटी इस दशा में गुणकारी है, कि अभी जुकाम आरम्भ हुआ हो॥

व्योषादि वटी योग॥

सोंठ, कृष्णमरिच, पीपल, अम्लवेद, तालीसपत्र, चव्य, चित्रक, ज़ीरा श्वेत, तिन्तिड़ीक प्रत्येक १ तोला, दारचीनी, पत्रज, एलायची, प्रत्येक ६ माशा, कूट पीस कर २० तोला गुड़ में मिला कर बनवेर प्रमाण गोलियां बनावें, रोग के दिनों में चूसते रहना अच्छा है॥

(६) निम्न लिखित गोलियां हम ने स्वयम बहुत से रोगियों पर वर्ती और बहुत गुणकारी पाया:—

पारदशुद्ध, आमलासार गन्धक शुद्ध, शिङ्गरफ शुद्ध, समुद्र फेन, सब सामान भाग लेकर पहिले पारा व गन्धक की कजली करें, फिर अन्य औषधियां मिला कर अद्रक रस में १—२ दिन खूब खरल करके १—१ रत्ती की वटी बनावें, इस को शर्बत एजाज़ व गावज़बानार्क से १—१ सायम प्रातः देने से इनफ्लूएनज़ा को बहुत लाभ हुआ, ज्वर वेग तो दूसरे ही दिन कम हो गया॥

(७) संगजराह भस्म का हम को थोड़े दिनों से ख्याल हुआ है, और हम इस को वर्त रहे हैं, यह सस्ती वस्तु है, और थोड़े से खर्च से बहुत से ग़रीबों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। १) में सेरों तैयार हो जाती है। आश्चर्य है कि इस से एक दिन के भीतर ही ज्वर की तेज़ी कम होनी आरम्भ हुई। और प्रायः दूसरे तीसरे दिन ज्वर सर्वथा उतर गया है। परन्तु इस पर अभी बहुत तजरुबा करने की आवश्यकता है॥

संगजराह १ सेर, मुण्डी बूटी १ सेर के नुग़दे में देकर १ मन ऊपलों की अग्नि दे कर फिर खूब खरल करें, मात्रा १ माशा दिन में ४ बार खांड मिश्रित गरम दूध से देवें, दूध की

मात्रा एक समय में पाव या ३ छटांक होवे। वस्त्र भी ओढ़ाना चाहिए, इस से कभी स्वेद भी आता है, जब तक ज्वर कम न हो गरम दूध या गरम पानी के सिवाय और आहार न दिया जावे तो उत्तम है ॥

(८) गोदन्ती हरताल की भस्म भी इस रोग में गुणकारी होनी चाहिए, एक वैद्य साहिब ने इस को भी आज़माया है, इस भस्म को भी उपर्युक्त विधि से वर्तना चाहिए ॥

गोदन्ती हरताल भस्म विधि ॥

गोदन्ती हरताल १ पाव, गूदा घृतकुमारी १ पाव में डालकर एक कूज़ा में बन्द कर के गजपुट की अग्नि दें, फिर निकाल कर पीस कर रक्खें ॥

युनानी चिकित्सक प्रायः यह योग वर्तते हैं:—

(९) गुलबनफ़शा, गावज़वान, मुलेठी, बीहदाना, उस्तुखुदूस, खतमी बीज, मकोय, प्रत्येक ६ माशा लेकर यवकूटकर आध सेर पानी में डालकर औटावे, जब १ पाव रहे उतार मल छान कर दो तोला मिश्री, या शर्बत एजाज़ मिला कर २ बार दिन में दें ॥

(१०) शर्बत एजाज़ रुक्ष व कफज कास में गुणकारी होने से इनफ्लूएनजा में भी दिया जाता है। योग यह है:—

उन्नाब २० नग, लसूड़ियां बड़ी ६० नग, मुलेठी छिली, खतमी बीज, ख़बाज़ी, नीलोफ़र पुष्प, गुलबनफशा, प्रत्येक २१ माशा, बीहदाना १५ माशा, कतीरा गोंद, कीकर गोंद, प्रत्येक ९ माशा बांसा पत्र आधसेर, मिश्री १ सेर। गोंदों के अतिरिक्त शेष सब को ४ सेर पानी में औटावें, जब २ सेर रह जावे, तो उतार मल छान कर मिश्री मिलाकर शर्बत तैय्यार करे, फिर दोनों गोंदों को पीस कर सम्मालित करें, रुक्ष व कफजकास को गुण कारी है ॥

(११) हम ज्वर की औषधियों के साथ २ खांसी के लिए निम्न लिखित गोलियां किसी समय भी चूसने को दे देते थे, जो बहुत हितकर प्रमाणित हुईं,

बीहदाना, कतीरा गोंद, शकरतेगाल, मुलेठी चूर्ण, निशास्ता,

कपूर.... श्वेत, प्रत्येक १ तोला, बादाम गिरी २० नग, सब को पीस कर बन वेर प्रमाण वटी बनावें, और एक मुख में रखकर चूसते रहा करें ॥

(१२) सितोपलादि भी खांसी में लाभदायक होता है, जिसका योग यह है:—

मिश्री १६ तोला, बंशलोचन ८ तोला, पीपल ४ तोला, श्वेत एलायची बीज २ तोला, दारचीनी १ तोला, सब को पीस कर रक्खें, और दोदो माशा २-३ वार खावें, यदि कफाधिक्य हो तो मधु में मिलाकर और रुक्ष हो तो लुआब बहिदाना या लुआब ईस्वगोल से चाटें ॥

नोट—हमारी इच्छा थी कि देश भर के वैद्यों, हकीमों, व डाक्टरों से उनके अनुभूत योग जो उन्होंने इस रोग में अनुभव किए प्रकाशित करें, २०० पत्र डालने पर भी इस समय तक केवल २-३ का उत्तर आया है, और उन में यह भी लिखा है कि इस रोग में हमारी बनाई दवाई अमुक नाम की सेवन करें। जिस से पाठकों को कुछ लाभ नहीं पहुंच सकता है, सो शोक है कि यह विचार पूरा न हो सका। हम उद्योग कर रहे हैं। अब भी यदि योग्य उत्तर प्राप्त हुए तो हम देशोपकारक में छाप देंगे। इस जगह हम उन योगों को अंकित करते हैं जो

विविध अखबारों

में एक या दूसरे चिकित्सक ने परोपकारार्थ प्रकाशित कर दिए हैं:—

(१३) रहबर मुरादाबाद में निम्न लिखित पत्र जनाब महम्मद हुसैन साहिब तहसीलदार गुलबरगा का छपा है:—

इनफ्लूएनज़ा के लिए एक और योग

आज कल इन फ्लूएन्जा से न केवल बलदा वरन् इतस्ततः के बहुत से लोग मर रहे हैं, और यद्यपि बलदह (शहर हैदराबाद दक्षिण) में बहुत से हकीम व डाक्टर वर्तमान हैं, और कई सरकारी हस्पताल भी हैं, तो भी इतनी भीड़ होती है कि हकीमों या डाक्टरों को भली भांति

रोगी का बृतान्त सुनने का अवसर नहीं मिलता, बड़ी कठिनता से योग तजवीज़ होता है. पन्सारी की दूकान में आदमी गया हुआ प्रातः का सायम को दवा लेकर वापिस आता, बाज़ समय तो लोग की भीड़ से दवा भी न मिलती। घन्टों रोगी दवा न पाने, से उसका रोग बढ़ जाता था, या जो दवा तजवीज़ हुई वह मिलती ही नहीं, जब बलदह की यह दशा है, तो न जाने ग्रामों में क्या होता होगा, वहां तो न कोई डाक्टर हैं. न सरकारी हस्पताल हैं। न जागीरदार लोगों ने इसका प्रबन्ध किया है, दीन ग्रामीण लोग विना दवा मर रहे हैं, इस पर सरकार को शीघ्र ध्यान देना चाहिए, मेरे मकान में बाल बच्चे नौकर तक बीमार थे, केवल मैं दवा लाने और परिचर्य्या करने के लिए रह गया था, अंग्रेज़ी औषधियों का सेवन रहा, मेरा एक बालक १५ वर्ष का चल बसा, इस के पश्चात् मुझे एक साहिब से एक योग मिला जिस के सेवन से इस समय तक सब लोग मेरे मकान के अच्छे हैं, योग सर्वथा अल्प मूल्य और सब जगह सुगमता से मिल सकता है, परोपकारार्थ नीचे अंकित किया जाता है

योग ॥

"गुलबनफ़शा ६ माशा, गावज़बान पत्र ४ माशा, उन्नाब ५ नग, लसूड़ियां २० नग, खतमी ४ माशा, खबाज़ी ६ माशा, मकोय अर्क़ १ पाव लेकर उस में सब औषधियां डाल कर क्वाथ करके लऊक़ सपिस्तान (चटनी लसूड़ियां) २ तोले मिला कर शीतोष्ण सेवन करें, यदि बालकों को देना हो तो इतना नुसखा दो को सेवन कराया जा सकता है, युवा हो तो एक को सेवन कराया जावे, यदि कोष्टबद्धता हो तो ६ माशा अमलतास का गूदा पीछे मिला कर अर्थात् औषधि तैयार होने के पश्चात् मिला कर सेवन करें, यदि खांसी बहुत अधिक हो तो लऊक़ सपिस्तान (चटनी लसूड़ी) और मंगा कर २—२ घन्टा पीछे चटावें, यह यूनानी, औषधि बनी बनाई मिलती है, इस से खांसी या ज्वर कम हो जाता है, और एक दो मात्रा में अवश्य कमी होगी, और कईयों को सर्वथा आराम होगा, जिस को पूरा लाभ न हो वह अधिक देर तक सेवन कर सकता है॥

(१४) अखबार "देश" में छपा था:—

"चारों ओर से यह पुकार सुनने में रही है, कि इस रहस्य पूर्ण रोग में अजवायन का सेवन गुणकारी प्रमाणित हुआ हैं, बहुत से प्रतिष्ठत जनों ने इस को स्वीकार किया है, और अब दयानन्द कालेज लाहौर के एक प्रोफेसर साहिब ने अखबार पंजाबी में इसी आशय का लेख प्रकाशित कराया है, कि अपने तजरुबा व मित्रों के कथनानुसार मैं कह सकता हूं, कि अजवायन क्काथ इस रोग की हर दशा में सेवन करना गुणकारी है। क्काथ विधि यह है:—कि सवा सेर पानी में १ छटांक अजवायन डाल कर उसे यहां तक पकाया जाय कि २॥ पाव रहे, फिर छान कर बोतल में रक्खें, मात्रा युवा को हर ३ घन्टा पीछे अर्द्ध छटांक और बालक को ½ से १ तोला तक। यदि मात्रा कुछ बढ़ जाय तो भी हानि नहीं, परन्तु रोगी को गरम दूध और गरम पानी के अतिरिक्त और कुछ न दिया जाय। प्राय: २४ घन्टा में ज्वर उतर जाता है, इस क्काथ को प्रतिबन्धकोपाय स्वरूप दिन में ३ बार पीना गुणकारी है" ॥

इस के पश्चात् निम्न लिखित नोट फिर देश में निकला:—

"जंगी ज्वर में अजवायन का क्काथ सेवन करने का वर्णन कुछ दिन पहिले हुआ था, उसी विषय में एक और सम्वाददाता ने लिखा है, जि यह योग सचमुच गुणकारी है, यदि स्वस्थ मनुष्य भी ६ माशा अजवायन ५ तोला पानी में उबाल कर दिन में दो बार पीता रहे, तो इस बबाई रोग से बच सकता है। पिछले दिनों जब कि हमारे घर में ७—८ मनुष्य ज्वर ग्रस्त हो गए, हम ३ मनुष्य अर्थात् मैं, मेरा भाई, मेरा पुत्र, जो अजवायन क्काथ पीते रहे, बचे रहे। हम बीमारों को भी यही देते रहे, और सब के सब अच्छे हो गए, परिचारकों को कर्पूर भी सूंघते रहना चाहिए, इस को अतिरिक्त यदि रोगी को लघुविरेचन दिया जाय, तो भी ज्वर उतर जाता है, विरेचन पीछे लघु आहार देना चाहिए ॥

नोट—स्मरण रहे कि अजवायन के इस प्रकार के क्काथ में अमृतधारा मिला ली जावे, तो सोने पर सोहागा का काम देगी ऐसे ही अन्य भोगों में समझिए ॥

(१५) एक अखबार में निम्न लिखित योग लिखा थाः—

"इसी विषय में कुछ वैद्यों ने एक योग नियोजित किया है, जो बहुत गुणकारी प्रमाणित होगा। आशा है लोग वर्त कर लाभ उठावेंगे। योग निम्न लिखित हैः—

तुलसी पत्र २० नग, कृष्णा मरिच २० नग, ज़ीरा श्वेत दो तोला तुलसीपत्र के सम भाग में पीस कर चने प्रमाण वटी बनावें, और गावज़नार्क के साथ १ वटी सेवन करें॥"

(१६) जाट गज़ट में निम्न लिखित योग लिखा हैः—

"अब जो नया ज्वर चला है उस के साथ खांसी प्रायः होती है, इस का एक अल्प मूल्य बहुत गुणकारी योग है, यह योग रायबहादुर डा० उमराव जी का है, जो दो बार सिविल सरजन रह चुके हैं॥

लहसन को कूट कर साफ वस्त्र में छान कर सम भाग मधु मिला कर शीशी में रक्खें, रात दिन में ८—१० बार इस को चाटते रहें"॥

(१७) पण्डित सातवलेकर जी प्रसिद्ध आरटिस्ट और आर्य्योपदेशक और अनुसन्धान कर्त्ता जो पहिले लाहौर में रहते थे, और अब स्वाध्याय मण्डल औंध (सितारा) में, उन्हों ने एक पत्र लिखा है, जो पाठकों के मनोरंजनार्थ लिखते हैंः—

"लाहौर में इनफ्लूएनज़ा का ज़ोर बढ़ रहा है, इस लिए महाराष्ट्र का थोड़ा सा अनुभव आप के वास्ते लिखता हूं, यदि आप उचित समझें तो सब को सूचित करदें, महाराष्ट्र में पहिले यह अनुभव में आया, कि इनफ्लूएनज़ा का ज्वर आने पर लङ्घन करने से बहुत लाभ होता है, ज्वर 'नारमल' होने तक (अर्थात् जब तक ज्वर सर्वथा दूर न हो जाय) कुछ खाना नहीं चाहिए, केवल गरम पानी में थोड़ा नमक डाल कर गरम गरम ही बार २ पीना चाहिए। दूध, सागूदाना आदि कोई वस्तु न दी जावे, ४—५ दिन पीछे थोड़ा सा दूध, और पीछे २—३ दिन केवल सागूदाना, फिर ४—५ दिन पीछे लघु भोजन

देने के अनन्तर साधारण आहार आरम्भ करें, अर्थात् इस का पथ्य १५ दिन तक अवश्य करना चाहिए। अन्न सेवन से अधिक रोगी मरे हैं। ज्वर दूर होने पीछे ८—१० दिन तक कुपथ्य करने से ज्वर पुनः हो जाता है, और बचने की कोई आशा नहीं रहती। जो ज्वर रहने तक सिवाय गरम पानी के कुछ भी नहीं खाते पीते वह प्रायः अच्छे हो जाते हैं, औषधि करनी चाहिए, परन्तु पथ्य अवश्य करना अच्छा है। ज्वर के पहिले खांसी और गले में खराबी होती है। परमेंगनेट आफ़ पोटाश को पानी में मिला कर गण्डूश करने से, और इसी से नाक भीतर से धोने से प्रायः ज्वर नहीं आता है, इस के कीटाणु नाक व गले में पहिले आकर प्रभाव करते हैं, जो इस औषधि से मर जाते हैं। खांसी, ज्वर, वात व कफ के लिए इलाज शीघ्र आरम्भ करना चाहिए। दैनिक डेढ़ दो रत्ती कुनीन लेते रहने से खांसी आरम्भ होने पर भी प्रायः ज्वर नहीं आता है। सप्ताह में २ लङ्घन करने से बहुत लाभ होता है, ४ दिन में १ दिन लङ्घन करने वाले प्रायः बच रहे हैं, प्रति दिन रात्रि को भोजन न करने से भी बहुत कम हो जाता है, स्वस्थ होने के पश्चात् तुरन्त वस्ती कर्म्म करके बहुतों ने भोजन किया, वह सब पुनः ज्वर होकर मर गए, स्वस्थ होने के पश्चात् खूब क्षुधा लगती है, इस से लोग अधिक खाना आरम्भ करते हैं, वह पुनः ज्वर ग्रस्त होकर मरते हैं, घरों, वस्त्रों, और शरीर की सफ़ाई अवश्य चाहिए, जो खुली वायु में रहते हैं वह कम बीमार होते और कम मरते हैं, रुग्ण होकर अच्छे स्थान में जाने से भी बहुत स्वस्थ हुए हैं। इस प्रकार का यहां का अनुभव है, यदि इस से वहां कुछ लाभ हो सकता है, तो आज़मावें, कुशलता का क्या लिखना पूछना, यहां वहां एक जैसा हाल है, ईश्वर पर विश्वास करके डरना नहीं चाहिए" ॥

उपर्युक्त पत्र में एक तो यह बात है, कि स्वस्थ होने के बहुत पीछे तक भी लघु भोजन चाहिए, दूसरी बात यह है, कि कम से कम ४ दिन का लङ्घन चाहिए, हम लिख चुके

हैं कि लंङ्घन ज्वर में गुणकारी है । परन्तु इस ज्वर में विष भी होता है, इस वास्ते दूसरे दिन से दूध की भी आज्ञा दे दी जाती है। कोई भिषग नहीं भी देते हैं । प्रतिबन्धकोपाय स्वरूप कम खाना और लंघन करना गुणकारी है ही, कुनीन पहिले तो इलाज में भी वर्ती जाती थी, परन्तु अब डाक्टर कह रहे हैं, कि कुनीन का इस ज्वर पर कुछ प्रभाव नहीं है। परन्तु प्रतिबन्धकार्थ कोई २ अब भी वर्तते हैं । नाक मुख धोने के वास्ते रोग कृमिघ्न कोई भी दवाई वर्ती जा सकती है ॥

(१८) अखबार "जयाजी प्रताप" ग्वालियार में भारती महाशय का लिखा हुआ एक निबन्ध है जिस में लिखा है, कि—

"इनफ्लूएनज़ा और मैलेरिया ज्वर में 'घोड़ा चोलीरस' की एक वटी शीतल जल या चाय के साथ देने से एक या दो दस्त होकर शरीर शुद्ध हो जाता है; ६ घन्टा पश्चात् ज्वरांकुश की १ वटी दूध या शीतल जल से देते रहनी चाहिए, और फिर प्रति १२ घन्टा पीछे १ वटी देते रहना चाहिए, इस प्रकार २—३ दिन औषधि सेवन से दोनों ज्वर दूर हो जाते हैं, दूध, सागूदाना, मूंग की दाल का पानी, दूध चावल इत्यादि नरम वस्तुएं यथा अवसर देनी चाहिऐं, और ज्वर होते ही चुपचाप चारपाई पर पड़ रहना चाहिए, किसी प्रकार का परिश्रम न करना चाहिए, और कोई ऊनी वस्त्र हर समय पहिने रहना चाहिए, जब तक ज्वर दूर न हो ऐसा ही करें ॥

"आज कल प्रत्येक मनुष्य को ज्वर से बचने के वास्ते स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियमों का ध्यान रखना चाहिए। और प्रातः समय सब से प्रथम एकाध गोली कुनीन की, या ५ नग कृष्ण मरिच, और ५ नग तुलसी पत्र, मुख में डाल कर चबा कर शीतल जल से खा लेनी चाहिए" ॥

नोट—यह घोड़ा चोली रस व ज्वरांकुश का इलाज योग वैद्यों को यथा अवसर आज़माना चाहिए, हम को तो यह अधिक तेज़ मालूम होता है ॥

इसी अखबार में ग्वालियार के हैल्थ अफ़ीसर की ओर से प्रतिबन्धकोपाय छपे हैं, जिस में एक बात यह भी है:—

"जुकाम होते ही अद्रक, मुलेठी, मुनक्का, बांसा, सम भाग का काढ़ा मिश्री युक्त पीने से बहुत लाभ होता है" ॥

(२०) देशोपकारक के ग्राहक एक हकीम साहिब लिख चुके हैं कि इस रोग में फिटकरी खील को उन्हों ने बहुत गुणकारि पाया है। ४ रती २—३ बार दी जावे ॥

(२१) पैसा अखबार में एक साहिब ने निम्न लिखित अर्क़, शर्बत, व चूर्ण गुणकारी लिखे हैं:—

अर्क़ का योग—झाऊपत्र १ पाव, बेदपत्र १ भाग, संगतरा पत्र १भाग, सरफोंका पत्र $\frac{1}{2}$ भाग युकैलिपटस पत्र १ भाग, रूमी सौंफ ४ भाग, अजवायन १ भाग, हंसराज $\frac{1}{3}$ भाग, गुलनीलोफर १ भाग, हरित गिलोय अधकुटी १ भाग, चिरायता $\frac{1}{3}$ भाग, पोदीना $\frac{1}{2}$ भाग; सौंफ १ भाग, गावजबान १ भाग, (पत्र सब हरित लेवें) सब को एक दिन रात भिगो कर अर्क़ निकालें, मात्रा ३ तोला सायम् प्रातः ॥

शर्बत का योग—मेथी बीज १ तोला. अंजीर ५ नग, हंसराज २ तोला, खतमी बीज १ तोला, मुनक्का निर्बीज १० तोला, जूफा शुष्क १ तोला, मुलेठी छिली ५ माशा, उन्नाब ३० दाना, लहसूड़ियां ४० नग, गावज़बान १ तोला, गुलबनफशा १ तोला, एक रात पानी में भिगो कर प्रातः ३—४ उबाले देकर छान कर मिश्री डाल कर शर्बत बनालें, मात्रा १—१ तोला सायम् प्रातः ॥

चूर्ण का योग—पतीस १भाग, दारचीनी $\frac{1}{2}$ भाग, सुरमावत महीन पीस कर छान कर १—१ माशा सायम प्रातः सोडाबाईकार्ब और उपर्युक्त शर्बत व अर्क़ के साथ सेवन करें ॥

कोष्ठ बद्धता नाशक योग—यदि कोष्टबद्धता हो तो हब्बुलनील भुने ६ माशा, चूर्ण कर पानी के साथ खावें, या मैगनेशिया पानी में घोल कर पीवें ॥

पीड़ा निवारक—शूलस्थान पर कड़वा तैल ३ तोला, मोम १ माशा पिघला कर मालिश की जावे, और बांध दिया जावे, वायु से बचाया जावे ॥

(२) कश्मीरी मेगज़ीन

(२२) हकीम महम्मद हयात साहिब निम्न लिखित योग अपना अनुभूत लिखते हैं:—

"पित्तपापड़ा, निम्बपत्र, धमांसा, मुण्डी, २—२ तोला, चिरायता ३ तोला, गिलोय, मकोय २—२ तोला, गुलग़ाफिस १ तोला, कौड़घन्टी ३ तोला, बांसा मूलत्वक, बांसा पत्र ६—६ तोला, गावज़बान १२ तोला, क़ासनी २ तोला, कासनीमूल ५ तोला, सब को कूट कर, ५ सेर कूप जल में भिगो कर भपका यन्त्र द्वारा अर्क खैंचें, ४, बोतल निकलेगा, ज्वर रोगियों को तृषा समय पानी के स्थान में यह अर्क देवें। ईश्वर कृपा से दूसरे ही दिन स्वेद आकर ज्वर उतर जावेगा, दो दिन पीछे ज्वरनाशक भी पिलाया जाय तो पुनः आक्रमण न होगा, जिस को कोष्ठबद्धता अधिक हो, तो २ या ३ दिन यह अर्क पिला कर फिर यह योग पिलाया जावे ताकि कोमल होकर दूषित मल निकल जावे:—

"पीत हरड़ पानी में भिगोई हुई २ नग, बनफशा १ तोला, बादाम गिरी ८ नग, गुलाब पुष्प २ तोला, इम्बली ३ तोला, आलूबुखारा ५ नग, गुलक़न्द ५ तोला, सब को घोट कर पान करावें। मल दूर होगा फिर वही अर्क पिलाया जावे, ईश्वर कृपा से स्वास्थ्य प्राप्त होगी। इस की समता न कुनीन कर सकती है, न एन्टीफेबरीन न कैलोमलादि। इस रोग पर यह अर्क विशेष गुणकारी है। प्रत्येक भिषग इस का सेवन करके ईश्वर सृष्टि को दुष्ट रोग से बचावे और पुण्य लाभ करे"॥

(२३) हमें श्रीमान् भक्त ईश्वर दास जी से यह सुन कर हर्ष हुआ कि रावलपिण्डी में एक सिविल सरजन साहिब भी देशी योग वर्तते रहे हैं। और निम्न लिखित देशी औषधि से बहुत लाभ हुआ है:—

अजवायन २ तोला, बनफशा १ तोला, नीलोफर १ तोला, हंसराज १ तोला, सौंफ १ तोला, सब का क्वाथ करके थोड़ा २ दिया जाता रहा॥

(२४) निम्न लिखित पंक्तियां अख़बार प्रकाश से उद्धृत करते हैं:—

"यहां पर निम्न लिखित योग सेवक मण्डली ने जिस में आप के समाजी भाई सम्मिलित हैं, सैकड़ों रोगियों में एक सप्ताह से घरों पर जा कर मुफ्त दवा वितरण किया है। और इस से लगभग ९७ प्रति सैंकड़ा रोगी स्वस्थ हुए हैं। यह योग हम ने हिन्दी अखबार विश्वमित्र कलकत्ता १२ अक्तूबर पृष्ठ ४ से लिया था, योग यह है:—

"पोदीना २ माशा, तुलसी पत्र ३ माशा, विल्वपत्र ३ माशा, अद्रक रस ३ माशा, प्रथम ३ औषधियों को कूट छान कर अद्रक रस सम्मिलित करें। यह वज़न एक मात्रा का है, इस में २ औन्स पानी मिला कर रोगी को पिलावें, ईश्वर कृपा से ३-४ मात्रा में स्वास्थ्य प्राप्त होगी। यदि अधिक कास व तृषा होवे तो बनफशा ३ माशा, मुलैठी ३ माशा, गावज़बान ३ माशा, को २ औन्स पानी में डाल कर उबाला जावे. पश्चात् गरम २ रोगी को दिया जावे, यदि छाती शूल हो तो रोग़न बाबूना में मोम या सिपिरिट या तारपीन तैल मिला कर गरम करके मर्दन किया जावे, ऊपर से सेंक कर बांध दें, वायु से बचाव रक्खें, गाय का दूध, सागूदाना, मूंग की दाल का पानी गरम २ पिलाया जावे। कमरे में दोनों समय धूप जलाई जावे, और सफ़ाई रक्खी जावे॥

(रामानन्द सेक्रेटरी सेवक मण्डली खन्ना जिला लुधियाना")

(२५) एक और योग॥

"निवेदन है, कि निम्न लिखित योग इनफ्लूएनज़ा के रोगियों को सेवन कराया है, इस से घोर से घोर ज्वर को आराम हो गया है:—

"तुलसी पत्र १ तोला, को आध सेर जल में पकावें, आध पाव रह जावे तो थोड़ा नमक डाल दें, फिर उतार कर शीतोष्ण रोगी को पिलावें, दिन में कम से कम ३ बार देवें ईश्वर कृपा से आराम होता है॥

(रामचन्द्र गुप्ता हसूद जिला नीमाड़")

अब हम उन योगों को लिखते हैं जो भाव प्रकाश में कफ वात ज्वर के वास्ते अंकित हैं, और जो सब इस में गुणकारी हैं॥

(२६) पंच कोल—अर्थात पीपल, पिपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, समान भाग का क्वाथ वात कफ को दूर करता है। और पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है. स्मरण रहे कि अमृत जल वर्तते समय यह वस्तुयें डाली जावें तो भी उत्तम हैं। या साधारण गरम जल के स्थान में यह वस्तुयें डाल कर गरम जल दिया जावे तो भी उत्तम है ॥

(२७) किरातादि क्वाथ—चिरायता, सोंठ, गिलोय, कथिड यारी, बांसापत्र, पिपलामूल, लहसुन, संभालू, इन का क्वाथ कफ वात ज्वर को दूर करता है ॥

(२८) पीपल्यादि क्वाथ—पीपल, पिपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, बच, अतीस, जीरा, पाठा, इन्द्रयव, रेणुका, चिरायता, मूर्वा, सर्षप, कृष्ण मरिच, कायफल, पोहकर मूल, भारंगी, वायविड़ंग, काकड़ासिंगी, अर्कमूल, बड़ीकटैली, रासना, घमांसा, अजवायन, अजमोद, सोनापाठा, हींग, इन को समभाग लेकर क्वाथ कर पीने से वात, कफज्वर आदि कई रोग दूर होते हैं ॥

नोट—इनफ्लूएनज़ा में क्वाथ देना बहुत ही गुणकारी है, इस से दोष भली भांति पकते हैं और ज्वर उत्पन्न नहीं होता, यह काढ़ा बहुत ही गुणकारी जान पड़ता है ॥

(२९) दशमूलादि क्वाथ—दशमूल क्वाथ में पीपलचूर्ण डाल कर पीने से वातकफज्वर, पंक्ति शूल, तन्द्रा, कास, श्वास, को गुणकारी है, ऐसे ही केवल पीपल क्वाथ भी गुणकारी है ॥

(३०) सूर्य्यशेखर रस—पारा शुद्ध, आमला सारगन्धक शुद्ध, सोहागा खील १-१ तोला, जमाल गोटा की गिरी शुद्ध २ तोला, सेंधानमक, कृष्णमरिच, इमलीखार, और खांड, १-१ तोला, सब को जम्बीरी लीमूं के रस में खरल करके २ रत्ती की गोलियां बनावें, इस को गरम जल के साथ दिया करें, इस से वात कफज्वर, और शीतज्वर दूर होते हैं ॥

(३१) यदि वात कफ ज्वर स्वेद में अधिक आरम्भ हो जावे

और निर्बलता का भय हो तो भूनी हींग व कुलथी की पीस कर इस की मालिश करें। गाय का पुराना गोबर और नमक पात्र का टुकड़ा, दोनों को पीस कर मर्दन करने से भी स्वेद बन्द होता है। कृष्णा मरिच, पीपल, सोंठ, हरड़, लोध, पोहकर मूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, शिवलिंगी, कपूर कचरी, समान भाग लेकर महीन पीस कर शरीर पर मलने से कितना ही स्वेद बहता हो, हट जाता है। ऐसे ही चिरायता, कृष्णा ज़ीरा, कुटकी, बच, कायफल, इन को इकट्ठा पीस कर शरीर में मलने से निरंतर स्वेद निकलना बन्द हो जाता है॥

(३२) यदि स्वेदाभाव हो, तो स्वेद लाकर ज्वर को कम करना चाहिए, तप्त बालू रेत से स्वेद देने से वात कफ ज्वर, पीनस, श्वास, जंघ, कटि और अस्थियों का शूलादि दूर होते हैं। (बालू से स्वेद देने की विधि वैद्य लोग जानते हैं) ॥

(३३) बिजौरालीमू की केशर, सेंधा नमक, कृष्णा मरिच सम भाग सब को उबाल कर गण्डूश करने से वात कफ, मुख सूखना, हनुस्तम्भ और अरुचि दूर होती है॥

वैद्य वात कफ ज्वर में ७ वें दिन बृहद पञ्चमूल क्वाथ में भली भांति पके हुए आहार रोगी को देवें॥

नोट—उपर्युक्त आहार विधि से यह भी प्रगट है, कि इस रोग में आहार ७ वें दिन दें, और वह भी औषधियों में पकाकर दें। चावल, दाल इत्यादि क्वाथ में पकाए जावें. इस ज्वर में इतनी पथ्य की आवश्यकता है॥

बृहद पचमूल की औषधियां यह हैं:—

बिल्व, कम्भारी, पाढल, अरनी, सोनापाठा॥

[३४] इनफ्लूएनज़ा में होम्यो पैथिक इलाज॥

हम निम्न लिखित पंक्तियां रिसाला होम्यो पैथिक डाक्टर से उद्धृत करते हैं :—

"जब कलकत्ता की ख़बरों से ज्ञात हुआ, कि अब कलकत्ता में भी यह वबा आरम्भ हो गई है, तो हम ने तुरन्त ही होम्यो

पैथिक प्रोफेशन के प्रतिष्ठित जनों यथा डाक्टर पी. सी. मौजूमदार एम. डी., डाक्टर डी. एन. ऐ. ऐम. डी. डाक्टर जी. ऐल. गुप्ता ऐम. डी., डाक्टर ऐम. ऐन. चौहदरी ऐम. डी. को लिखा, कि वह पत्र द्वारा उन औषधियों का नाम लिखें, और अपनी सम्मति लिखें ताकि पञ्जाब के प्रोफ़ैशन को उस से अवगत किया जावे इस में सन्देह नहीं कि लक्षणों की सूची पर दृष्टि डालने से प्रत्येक होम्योपैथ चाहे वह यूरुप, अमेरिका, और इटली में बैठा हो, या भारतवर्ष के दूसरे शिरे पर हो तुरन्त औषधि को ढूंढ लेगा, और निदानस्थान पढ़ने से हमें 'यूपीटोरियम परफोलिटम Eupetorium Perfoliatum) का ध्यान आया, कि अवश्य यह औषधि गुणकारी होगा, और यह विचार बहुत ठीक प्रमाणित हुआ, तो भी पाठकों के मनोरंजनार्थ हम ने उपर्युक्त डाक्टरों से निवेदन किया, और हर्ष का विषय है, कि पी. सी. डाक्टर मौजुमदार ऐम. डी. का वह पत्र जो हमें अभी प्राप्त हुआ है, और बहुत सार गर्भित है, आप लिखते है; कि वबा आरम्भ होने से प्रथम मैं दाराज़िलग में था, और तुरन्त में कलकत्ता में आया, जहां पर मुझे बहुत से रोगियों को देखने का अवसर हुआ, रोगी एक प्रकार के नहीं होते, न उन में एक प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं, इस लिए कोई विशेषौषधि जो सम्पूर्ण वबा में गुणकारी हो, नहीं मिल सकती। आप ने रोगियों को दो भागों में विभक्त किया है, एक वह जिन्हें जुकाम होजाता है, और कफ छाती में पीड़ा होती है, खांसी आती है। यहां तक कि निमोनिया भी हो जाता है। ऐसे रोगियों में Bryonia औषधि गुणकारी है, इस को २०० नम्बर में देना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार यह अधिक गुणकारी हुआ करती है। हम ने लघु मात्रा में भी वर्ता, और कई बार सेवन कराया, परन्तु बड़ी मात्रा दिन में २-३ बार अधिक गुणकारी प्रमाणित हुई। दूसरी प्रकार के रोगियों का 'यूपी टोरियम परफ़ोलियम' (Eupetorium perfolium) ३० ताकत

में बहुत बार दुहराने के बाद देना चाहिए। इस श्रेणी में छींकें अधिक आती हैं। टांगों, भुजों, और अस्थियों में शूल अधिक होता है। शिर व छाती में अधिक व्याकुलता मालूम होती है। गरमी बहुत अधिक रहती है। इन लक्षणों पर आप लिखते हैं, कि मेरा एक डाक्टर दोस्त नैटरम आरसनीकम (nat. ars.) देता है, और अत्यन्त निर्बलता के लिए ज़िङ्कमफास देता है। परन्तु आप लिखते हैं; कि मैंने इनको नहीं आज़माया॥

ज्वर तो आप के विचारानुसार ३-४ दिन में दूर होजाता है, परन्तु पीछे की उपाधियां बहुत खराब हुआ करती हैं। जो अत्यन्त निर्बलता, अग्निमान्द्य, अरुचि, कोष्ठबद्धता, या अतिसार, और घोर खांसी हैं। इन में आप ने पलसटीला ऊंचो से अच्छा प्रभाव देखा है"॥

उपाधियों के और इलाज॥

(३५) दूसरे दिन जो विरेचन की आवश्यकता पड़ती है, उसके वास्ते निम्न लिखित योग भी गुणकारी हैं। क्योंकि दोषों को पकाता और निकालता है:—

सौंफ, मुलेठीछिली, गावज़बान, बादरंजबोया, कसूस बीज, प्रत्येक ६ माशा, उस्तखुदूस, मुनक्का निर्बीज, विस्फायज (यवकूट) १—१ तोला, गुलबनफशा ६ माशा, पीतअञ्जीर १५ नग, लहसूड़ियां २० नग, उन्नाब ६ नग, सनाय ६ माशा, गुलकन्द ५ तोला, पानी में भिगो कर औटा कर पिलावें मात्रा न्यूनाधिक भी हो सकती है॥

(३६) यदि ज्वर में निमोनिया का भय हो, तो प्रायः पिछली औषधियां जिनको निमोनिया में हितकर लिखा है गुणकारी होती हैं, परन्तु इस समय विशेष औषधि निम्न लिखित है:— बारहसिंगा भस्म १ रत्ती में ३ बूंद अमृतधारा मिला कर अजवायन क्वाथ से २—३ बार देना चाहिए॥

बारहसिंगा भस्म विधि॥

बारहसिंगा का सींग आध पाव, अजवायन व शोराकल्मी आध २ पाव, महीन कूट पानी से घोट कर सींग पर लेप करके

कोयलों की अग्नि पर रक्खें यह जल जावे और सींग लाल हो जावे, शीतल होने पर सर्वथा श्वेत हो जाता है, इस को एक कूजे, में घृतकुमारी के गूदे या अर्क दुग्ध में डबो कर बन्द कर के गजपुट की अग्नि दें, श्वेत भस्म होगी, निमोनिया के लिए हमारी स्वानुभूत औषधि है। जो कि चिरकाल हुआ एक साधू ने बतलाई थी, और कई बार अखबार में हम ने लिख दी है। छाती पर मीठा तैल व तारपीन तैल की मालिश भी कर सकते हैं॥

(३७) एक रोगी मेरे पास आया, जिस का इलाज इनफ्लूएनज़ा में डाक्टरी था, ज्वर जाता रहा, परन्तु एक दिन चलने से उसे मलद्वार से रक्तस्राव आरम्भ हो गया, डाक्टरी औषधि से उस को आराम हुआ। परन्तु थोड़ा २ बाक़ी था, और विशेष कष्ट यह था, कि हृदय निर्बल होचुका था, और घटता रहता था, ज़रा भी उठने या चलने से हृदय पर बहुत दुष्प्रभाव होता था, डाक्टरी इलाज से आराम न आता था, उस को मैंने याकूत (पन्ना) भस्म दी, कि २—२ रत्ती की पुड़िया बना कर मुरब्बा आमला में रख कर खाकर ऊपर से केवड़ार्क पीलीजिए, प्रथम पुड़िया से ही आराम आरम्भ हो गया, विशेष ज्वर में हृदय पर प्रभाव होने वाले रोगी को हम ने नहीं देखा, जहां देखा प्रायः निमोनिया देखा, हमारा विचार है, कि हृदय पर प्रभाव होने की दशा में पन्ना (लाल) भस्म थोड़ी केशर कस्तूरी मिला कर केवड़ार्क में घोल कर देना गुणकारी ह, पट्ठों पर प्रभाव हो तो याकूत भस्म, व अनविध मोती भस्म देवें॥

(३८) यदि आमाशयादि पर प्रभाव है तो उपर्युक्त लिखित अमृतधारा का सेवनही पर्य्याप्त है। या पञ्चकोलादि काथ जो भावप्रकाश के वर्णन प वह देने चाहियें॥

डाक्टरी इलाज *॥

(३६) ग्रीन साहिब की इनसाइक्लो पिडिया पेएड डिकशनरी आफ़ मैडीशन और सरजरी में जो कुछ इलाज के विषय में लिखा है, उस का सार हम नीचे अंकित करते हैं:--

"जब किसी को यह इनफ्लूएनज़ा रोग हो जावे, तो एक ही उपाय जो इस के वास्ते आवश्यक है यह है, कि रोगी तुरन्त लेट जावे, विश्राम, गरमी, और मौनता इस के इलाज में आवश्यक हैं ॥

वास्तविक इनफ्लूएनज़ा के वास्ते कोई विशेषौषधि इस समय तक ज्ञात नहीं हुई है, हां बहुत सी औषधियां ज्वर को कम करने और उस की उपाधियों को कम करने के वास्ते गुणकारी प्रमाणित हुई हैं, टानिकौषधियां यथा कुनीन व स्ट्रिकनिया पट्ठों की पीड़ा दूर करने वाली यथा ऐन्टीपाइरीन, फिनैस्टीन, ऐसीटीनेलाईड, हृदय की औषधियां यथा डिजीटेलिस, सट्टा, कनथिस, कैफीन, दुर्गन्धनाशकौषधियां यथा कारबालिक एसिड, सेलीसिलिक एसिड, सेलोल, पाईरिन, इत्यादि विविध समयों और अवस्थाओं के अनुसार गुणकारी होती हैं ॥

कुनीन देने की उत्तम विधि यह है कि कुनीन को एमूनिएटिड टिंक्चर १ डराम प्रति घन्टा पीछे ५—६ बार दैनिक दिया जावे ॥

यदि हृदय घुटने लगे तो स्ट्रिकनिया (कुचिला सत्त्व) हमारी बढ़िया औषधि है। असाध्य दशाओं में इस की त्वचा में पिचकारी प्रति ८ घन्टा पीछे करनी चाहिए, जब तक आराम न हो। आफीशियल सौल्यूशन के ५ विन्दू एक समय में पिचकारी दें, या निम्न लिखित योग देना चाहिए । जो हार्दिक निर्बलता में बहुत गुणकारी है ॥

---

* डाक्टरी इलाज से डाक्टरों को लाभ उठाना चाहिए अन्य जन इन औषधियों के वर्तने का साहस न करें ॥

लाइकवार स्ट्रिकनिया हाईडरो क्लोराईड ½ डराम, हाईडरो क्लोरिक एसिड डायल्यूट १॥ डराम, टिंक्चर आरनशियाई ६ डराम। ऐकवा क्लोराफार्म ७ औन्स, सब को मिलाकर ८ मात्रायें बनावें, एक मात्रा दो तीन बार दिन में देवें॥

कैम्फ़रलएगलज़र (सिपरिट आफ़ कैम्फ़र १० भाग, शर्बत ५ भाग, शुद्ध जल १ भाग, मिला कर) १ से ३ डराम तक देने से हृदय पर बड़ा उत्तेजक प्रभाव होता है। यदि निमोनिया के कारण से हृदय गिर कर नाड़ी बन्द हो तो टिंक्चर विलीरियन. सिपरिटलेविंडर एरोमैटिक, सिपरिट एमूनिया, प्रत्येक १५ बूंद मिला कर प्रति १५ मिन्ट पीछे दें, जब तक कि नाड़ी फिर चलने लग जावे॥

सिलीसीट आफ़ सोडियम को साइटरेट आफ़ केफ़ीन के साथ देने से हलका दस्त भी हो जाता है। और इनफ्लूएनज़ा की पीड़ायें भी दूर होती हैं। ऐसे ही विविध अवसरों पर विविध औषधियां दी जाती हैं॥

इनफ्लूएनज़ा रोगी का पथ्य नियत करने में चिकित्सक की बुद्धि देखी जाती है, औषधि देने से भी यह काम कठिन है। कोई आहार ऐसा नहीं लिखा जा सकता है, जो सब रोगियों को दिया जा सके, वरन् प्रत्येक की अवस्थानुसार पथ्य नियत करना पड़ता है, साधारण नियम तो अन्य ज्वरों की भांति हैं, अर्थात् प्रथम पतला आहार और फिर क्रमशः ठोस आहार दें। कभी अन्न से घृणा होती है, उसको गरम या शीतल जल घूंट २ दिया जाता है। आगे बहुत से भोजन दिए भी हैं। परन्तु विलायती ढंग के होने से हमने छोड़ दिए हैं। योग भी जो हमने ऊपर दिए हैं, इन के अतिरिक्त कई लिखे हैं, हमने चुन कर लिख दिए हैं॥

(४०) अखबार अलमुनीर झंग में खां साहिब सय्यद सरदार शाह साहिब प्रोफ़ेसर वेटरीनरी कालेज लाहौर का एक लेख छपा है, जिस में आप लिखते हैं:—

"यदि जुकाम होजावे तो शीत से अधिक बचना; शीतल जल और शीतल आहार न खाना, किसी प्रकार का शर्बत न पीना, कोष्ठबद्धता न रहने देना, आहार कोमल, और मिल सके तो शीतोष्ण दूध बहुत गुणकारी है, यदि ज्वर और जुकाम हो तो कोई गुरुपाका वस्तु न खावें, बरन् केवल दूध, या सागूदाना पतला दूध में पकाकर सायम प्रातः दो बार; दूध ८ पहर में ४ बार यथावश्यक, और माजून फ़िलासफ़ा, माजून कमूनी, गुणकारी है। यदि कोष्ठबद्धता हो, तो गुलकन्द व गुलकन्द बनफ़शा भी गुणकारी है। यदि कोष्ठबद्धता अधिक हो तो कोई मृदु विरेचन लें, यदि मिल सके तो अंग्रेज़ी विरेचन कैलोमल ४ ग्रेन ५ रत्ती सोडा के साथ सोते समय सेवन करें। प्रातः को खुला शौच और दूसरी बार एक दस्त आवेगा। और साधारण अवस्था में यह पर्य्याप्त है, यदि अधिक विरेचन की आवश्यकता हो तो प्रातः बासी मुख १ पाव गुलाबार्क में ½ छटांक मैगनेशिया घोल कर पीलें, पश्चात् थोड़ी अद्रक व सौंफ़ चबाते रहें; इस से मुख का स्वाद ठीक होजावेगा, और विरेचन में सुगमता होगी, मरोड़ कम होगा॥

ज्वर व जुकाम का साधारण योग जिसको फ़ीवर मिक्सचर कहते हैं, यह भी है, और यदि सौभाग्य से कोई हस्पताल समीप हो तो वहां से सहज में तैय्यार कराया जा सकता है॥

योग—लाइकवार एमूनिया एसीटेटिस २॥ तोला, सिपरिट ईथर ४ माशा, पुटासी एसीटास ३ माशा, पानी ३ छटांक, यह एक मात्रा है, ऐसी प्रति ४ घन्टे पीछे दें, यदि गले में ख़राश और जुकाम हो, तो सीरप सिला, या सीरप टोलू इस से भी उत्तम है, २ माशा प्रति मात्रा बढ़ा दें, छातीशूल हो तो सिपिरिट एमूनिया एरोमैटिक या कारबोनेट आफ़ एमूनिया ३ रत्ती प्रति मात्रा बढ़ावें, यदि ज्वर और जुकाम तीव्र हो, तो निम्नलिखित योग दें:—

"एमूनियाकार्ब ½ डराम, पुटासी पटरास १॥ डराम, टिक्चर एपीकाक १ डराम, लाइकवार एमूनिया एसीटेटिस १

औन्स, सीरपटोलू, ३ डराम, अर्क मुलेठी या पानी ३ छटांक; यह ६ मात्राएं हैं, प्रति ४ घन्टे पीछे दें, और औटाए पानी में १ चमचा चाय जितना लोबानार्क (टिंकचर :बिनज्वायन) डालकर वाष्प सूंघें, वाष्प सूंघना बहुत गुणकारी है ॥,

"यदि छाती में शूल व धांस मालूम हो, तो गरम पानी या गरम वस्त्र से टकोर करें। फिर दो भाग मीठे तैल में १ भाग तारपीन तैल मिला कर मालिश करें, और छाती को खूब गरम रक्खें, यदि आवश्यकता हो, तो टकोर के बदले मुलतानी राई, श्वेत सर्षप का लेप भी लगाया जा सकता है। इस से त्वचा में खराश होती है, और क्रमशः दाह व खराश दूर हो जाती है, यदि तृषा हो तो सादा ताजा पानी, थोड़ा २ करके पीवें, किसी प्रकार का ठंडा शर्बत, शिकंजबीन, लीमूनेड, या लस्सी बहुत वर्जित है, केवल पानी पर संतोष करें। रोगी के लिए चलना फिरना, शीतल वायु और सन्नाटे में रहना, बोलना, चालना, महा हानि कारक है। इसी से विविध प्रकार की उपाधियां उत्पन्न हो जाती हैं। इस लिए उत्तम है, कि रोगी एक ही जगह सुख से चुप पड़ा रहे। स्थान या कमरा साफ़ हवादार और शुष्क हो, यदि शिरःशूल अधिक हो, तो एक बार शिरशूल वटी या पुड़िया या टिकिया ले सकता है। परन्तु यह बल नाशक औषधियां अधिक सेवन न करें। यदि शिरःशूल से कष्ट हो, तो प्रायः पाशोया, पिण्डुली बन्धन, या शिर पर गरम पट्टी बांधने से आराम आजाता है। कोष्ठ बद्धता के कारण से हो तो उस को दूर करना चाहिए॥

(४१) अखबारों में एक तार छपी है, कि आस्टरिया के एक डाक्टर ने वायना मैडीकल जरनल में लिखा है, कि स्पैनिश*

---

* हम पीछे लिख चुके हैं कि यूरुप में इनफ्लूएनज़ा के विविध नाम होते रहे हैं, जहां से जिस देश में आया, या जहां से आरम्भ हुआ उसी पर नाम रक्खा गया, इस बार यह स्पैन देश से आरम्भ हुआ है, अतः यूरुप में इस का नाम स्पैनिश ज्वर है॥

फीवर Spanish Fever एक प्रकार के जर्म्ज़ से होती है, जिन का नाम सटैरपटो कोकस है, और यह कीटाणु रस कर्पूर (सबली मेट) की त्वकपिचकारी से दूर हो जाते हैं। २२ केस जिनके कुफ्फुस में शोथ हो गई थी, इस से स्वस्थ किए गए॥

(४२) कई डाक्टरों ने निम्न लिखित योग लिखा है, सिपरिट एमूनिया एरोमैटिक १५ बूंद, टिंक्चर कैम्फर कम्पौएड २० बूंद, टिंक्चर एपीकाक १० बूंद, सीरपटोलू १ डराम. जल १ औन्स दिन में ३ बार दें॥

डाक्टर सय्यद गुलाम हुसैन साहिब ने सन १८९० में वबा के समय निम्न लिखित योग लिखे थे:—

[४३] रोगी को वायु के रुख से बचा कर शीतल हवादार कमरे में लेटाकर रक्खें, प्रारम्भ में एक हलका सा विरेचन दें, यथा:—

अपसम साल्ट ४ डराम, सौंफार्क़ या ऐनीसीडवाटर एक औन्स मिला कर पिलावें॥

(४४) डाक्टर कमालउद्दीन साहिब लिखते हैं कि इस अर्क़ व सारके योग का देना भी गुणकारी है।

योग॥

अपसम साल्ट २ डराम, बाईकारबोनेट आफ़ सोडा १० ग्रेन, करीम आफ़ टारटर २० ग्रेन, लाइकरएमूनिया एसीटेटिस १ डराम, नाइटरिक ईथर २० बूंद, ऐनीसीड वाटर १ औन्स, यह १ मात्रा, है, ऐसी २—३ मात्राएं प्रति ३ घण्टा पीछे देवें। यदि दस्त हो जाय और ज्वर दूर न हो तो इस योग में से साल्ट निकाल दें॥

(४५) निर्बलता की दशा में एरोमैटिक सिपरिट आफ एमूनिया २० बूंद थोड़े पानी में मिला कर, या २ डराम बरांडी थोड़े पानी में मिला कर थोड़ी २ देर पीछे दे सकते हैं॥

(४६) जुकाम व कमजोरी दूर करने को विशेषतः अधिक आयु वालों और कष्टसाध्य रोगियों के लिए यह योग भी गुणकारी है:—

योग—वाईन आफ़एपीका केना १० बूंद, कम्पोण्ड टिंक्चर आफ़ कैम्फ़र २० बूंद, एरोमैटिक सिपरिट आफ़ एमूनिया ३० बूंद, पानी १॥ औन्स, सब को मिलावें, यह एक मात्रा है, ऐसे ही १—१ मात्रा ३—३ या ४—४ घन्टे पीछे देवें ॥

[४७] छाती कष्ट निवारणार्थ मस्टर्ड या देशी राई व थोड़ी रक्त मरिच का चूर्ण पानी में घोल कर और वस्त्र या मोटे कागज़ पर फैला कर छाती पर लगावें, और १० । १५ मिन्ट पीछे उतार लें, शुष्क सिंगियां छाती पर लगावें, या केवल गरम पानी या १ सेर पानी में १ छटांक पोस्त डाल कर १०—१५ मिन्ट औटाकर इस में मिलालें । और भिगो २ व निचोड़ २ कर सेंक करें । तारपीन तैल लगा कर सेंक करें, छाती में कफ संग्रह हो, तो एपीका कवाना आदि देकर वमन करावें, ता कि कफ निकल जाय, या वमनार्थ १०-१५ ग्रेन सलफ़ेट आफ़ ज़िंक पानी में मिलाकर पिलावें ॥

(४८) निमोनिया हो जाय तो यह योग गुणकारी है:—

वाईनम एपीकाक १० बूंद टिंक्चर कैम्फ़र कम्पौण्ड १५ बूंद, कार्बोनेट आफ़ एमूनिया २ ग्रेन, इनफ्यूज़न सिनकनाबार्क १ औंस सब को मिलावें, यह एक मात्रा है, ऐसी ३—४ मात्रा प्रति ३ घन्टे पीछे पिलावें, आवश्यकता हो तो रम या बरांडी भी दें ॥

(४९) शारीरिक पीड़ा हो तो २—३ ग्रेन आयोडाईड आफ़ पुटासियम थोड़े पानी में मिला कर दें, चाहें तो इस में २ ग्रेन कुनीन भी सम्मिलित कर सकते हैं । व्याकुलता और शिरःशूल निवारणार्थ पाशोया भी करा सकते हैं । उदरशूल हो तो १ डराम ग्रैगारीस पौडर दे सकते हैं ॥

अन्तिम रोग में कुनीन का सेवन करें, अर्थात थोड़ा लीमूरस या नारंगी या गोंद के पानी के साथ २ ग्रेन कुनीन की गोलियां बना लें, और १ वटी दिन में २ या ३ बार देवें । जब रोगी अच्छा होने लगे तो शीत से बचावें, पौष्टिक आहार देवें, जल वायु परिवर्तन करावें ॥

जब यह रोग कम होता है, तो अधिक प्रयत्न नहीं करना पड़ता, प्रायः ग्रमीण प्रबल प्रकृति वाले तो बिना औषधि ५—७ दिन में लोट पेट कर अच्छे हो जाते हैं, या केवल इसी विधि से

आजाता है, कि प्रथम १ डराम ग्रेगोरीस पाउडर या दो गोली कम्पाउण्ड रोबर्ब पिल सोते समय खिलावें, जिस से १ या २ दस्त हो जाते हैं। या ४ डराम अपसमसाल्ट, अर्द्ध छटांक सौंफार्क में मिलाकर पिलावें, पश्चात ज्वर वर्तमान हो तो यह योग पिलावें इस से शीघ्र ज्वर उतर जाता है, ज्वर उतरने पीछे दो ग्रेन कुनीन की पुड़िया, या गोली दिन में दो बार सायम् प्रातः कुछ दिन खिलाते रहें। (परन्तु अब तो कुनीन भी निष्फल प्रमाणित हो चुकी है)

(५०) डाक्टर आयोडीन साहिब का कथन है, कि इन फ्लूएनज़ा में निम्न लिखित लिनीमेन्ट की पेट व कुक्षियों पर मालिश करनी गुणकारी है:—

योग—टिंक्चर आफ़ ओपियम २ डराम, एरोमैटिक सिपरिट आफ़ एमोनिया २ डराम, कम्पौण्ड सोप लिनीमेन्ट २ डराम सब को मिलाकर मालिश करें॥

(५१) डाक्टर रो साहिब इनफ्लूएनज़ा में इस योग को बहुत गुणकारी बताते हैं:- नाइटरेट आफ़ पोटाश (शोरा) ½ डराम, डिडाकशन बारले (यवागू) एक पियाला, दोनों को मिला कर २—२ घन्टा पीछे दें॥

(५२) डाक्टर सालसबरी, व बाबू ज्यान साहिब इस का होना कीटाणुओं के कारण मानते हैं, जो जल वायु द्वारा भीतर जाकर वायु नलिकाओं में शोथ उत्पन्न करते हैं, और उनको अवश्य नष्ट करने वाली औषधि कैम्फ़र अर्थात कर्पूर है। जिस को रोगारम्भ में एक दिन भर चुरट वत पीना, या कर्पूर को निरन्तर सूंघना चाहिए ता कि कृमि मर जावें॥

(५३) सरमोर गज़ट में लिखा था, कि काठियावाड़ के एक डाक्टर साहिब ने अख़बार टाइम्ज़ में छपवाया है, कि एक पायन्ट (१० छटांक) पानी में ७ तोला कालीज़ीरी का क्वाथ चाय वत बना कर दिन में २ बार ३ दिन तक पिलाने से सर्वथा आराम आजाता है। यह इनफ्लूएनज़ा का अनुभूत इलाज है॥

(५४) डाक्टर मैक्लैगन साहिब सेलीसिन को इस रोग

में गुणकारी बताते हैं, आपने १६ रोगियों को इस औषधि से स्वस्थ किया है, ३० वर्षीया स्त्री को २०—२० ग्रेन सेलीसिन ३—३ घन्टा पीछे खिलाया, और ७ पुड़ियाएं खाने के पश्चात् वह स्वस्थ हो गई॥

(५५) इन्तिखाब उलकैमिस्ट में यूनीवर्सिटी मैडीकल मेगजीन से उद्धृत करके लिखा था, कि यह योग अनुभूत है:-पावाकोकारपीन २ ग्रेन, मारफिया सलफास $\frac{1}{3}$ ग्रेन, पानी २॥ औन्स, सब को मिला लें, इस में से २ डराम लेकर १ औन्स पानी में मिला कर १५—१५ मिन्ट पीछे दें॥

(५६) डा. ब्राउम साहिब इस योग को गुणकारी बताते हैं:-वायनम पपीकाक ४ डराम. टिंकचर हायोसाइमस २ डराम, सिपरिट एमोनिया एरोमैटिक २ डराम, मिश्री ३ डराम, पानी ६ औन्स, सब को मिला लें, और इस का १२ वां भाग ३—३ घन्टा पीछे देवें॥

डाक्टर टरनर साहिब की वक्तृता॥

इस जगह हम डाक्टर टरनर साहिब हैल्थ आफीसर बम्बई के भाषण का सार भी अंकित करना चाहते हैं, जो कि उन्होंने २२ अक्तूबर सन १६१८ को डाक्टरों के जलसे में किया था:—आप ने बतलाया कि "इनफ्लूएनज़ा की वबा जून में आरम्भ हुई, १ जून से १५ जून तक दैनिक मृत्यु सदा की न्याईं ८०—६० के मध्य थी। १६ जोलाई से मृत्यु संख्या बढ़ने लगी, और २० जोलाई को २३० हो गई। और २४ जोलाई तक फिर साधारण अवस्था पर आगई। १२ सितम्बर तक फिर मृत्यु संख्या में वृद्धि हुई, इस के पश्चात् इकदम बढ़ती हुई, २ अक्तूबर को ७३० होगई, और ८ अक्तूबर से फिर घटनी आरम्भ हुई, आज १८४ मृत्यु हुई हैं॥

"जून मास में बम्बई एक बड़े भारी रोग कीटाणु उत्पादक पात्र की न्याईं बना हुआ था, इस के भीतर कीटाणु वर्द्धक सम्पूर्ण सामान वर्तमान थे,......वर्षा असाधारण रूप से बन्द थी, वायु मण्डल धूलि से भरा था, २२ जून को वबा का रूप इस रोग ने धारण किया, और काम बन्द होने आरम्भ हुए। पहिले यह रोग कुली, दफतरों, और कारखानों आदि के नौकरों को हुआ, जिन को भीतर काम करना होता था॥

"यह समझ कर, कि रोग समुद्र मार्ग से आया है, मैं ने अनुसन्धान किया, और ठीक मालूम कर लिया कि प्रथम केस जो हुए वह जहाज़ों से आए हुए मनुष्यों के थे, जिस के पश्चात् यह रोग अपने प्रभावानुसार फैल गया, कारखानादारों से पता लगा कि १९ जून के लगभग उनके नौकर कुछ रोग ग्रस्त हुए। और २२—२३—२४ तक बहुत अधिक रोगग्रस्त हो गए, बाहिर काम करने वाले मनुष्य बहुत कम बीमार हुए। बम्बई को लोग भारत-वर्ष का द्वार कहते हैं, यह द्वार सब प्रकार के मनुष्यों के लिए खुला है, इस वास्ते हम को हर समय संसर्गिक रोगों के आगमन के वास्ते, या दुर्भिक्ष या युद्ध के कारण उत्पन्न हुए रोगों के वास्ते तैयार रहना चाहिए। युद्ध के कारण बम्बई और मेसोपुटामिया और अन्य स्थानों के मध्य आने जाने की सुगमता, फौजों के आने जाने की सुविधा व आवश्यकता इत्यादि ऐसी बातें हैं, कि यह असम्भव है, कि किसी जगह कोई वबाई रोग आरम्भ हो, और बम्बई उस से सुरक्षित रहे। मैंने सन १९१५ में ही इस के विषय में नोट प्रकाशितकर दिया था, विषूचिका, शीतला, और प्लेग का हम को पता होता है, और प्रथम केस से ही सावधान हो जाते हैं, हम उस को मालूम कर के अलग करके रोक थाम कर सकते हैं, परन्तु इनफ्लूएनज़ा के लिए ऐसी बात नहीं है। यह चोर की तरह आता है, और इतना शीघ्र फैल जाता है, कि रोक थाम के वास्ते कुछ नहीं किया जासकता, कोई देश या शहर जिस में इनफ्लूएनज़ा न हो, (या इतस्ततः न हो] इस को परे रखने में आज तक कृतकार्य्य नहीं हुआ है, और जहां तक मुझे ज्ञात है, इस के करने की आशा भी नहीं है। यह रोग गुंजान और कई प्रकार के अस्वच्छ शहर में फैल कर शान्ति के पश्चात् फिर नए वेग से फैला, इन रोग कीटाणुओं में पुनः कोप क्यों आगया, यह एक विचित्र प्रश्न है, जिस पर प्रत्येक अंग से विचार करना चाहिए। क्या जल वायु, या सामाजिक दशा के कारण ऐसा हुआ, निर्धनता

या दुर्भिक्ष इस का कारण हुआ, या और किसी प्रकार के जर्म्ज़ इस के साथ मिल गए हैं । तत्त्ववेत्ता जो हर समय लेबोरेटरियों में काम करते रहते हैं उन को इस बात पर प्रकाश डालना चाहिए॥

"बम्बई में बराबर डाक्टर लोग खुर्दबीनों से इस पर काम कर रहे हैं, जर्म्ज़ का अनुसन्धान हो रहा है। पहिले आक्रमण के विषय में अनुसन्धान किया गया, और मृत्यु संख्या अंकित की गई, सम्पूर्ण बस्ती में से लगभग ३ लाख । २९ प्रति सैकड़ा, रोगी हुए, उन में से १६४० मरे, अर्थात् ५ प्रति सैंकड़ा रोगियों में से, या १.५ प्रति सहस्र बस्ती के हिसाब से मरे । प्लेग से ८५.६, विषूचिका में ४९.६, शीतला में ४९ऽ१३ प्रति सैंकड़ा मृत्यु संख्या है ॥

१२ सितम्बर से १९ अक्तूबर तक १६६९७ मृत्यु हुई । इन में से ८४९९ पुरुष, और ८१९८ स्त्रियां हैं, इस वास्ते स्त्रियां अपेक्षा कृत अधिक मरीं* क्योंकि मुम्बई में स्त्रियां पुरुषों से बहुत थोड़ी ह ॥

आयु का ध्यान रखने से ज्ञात हुआ, कि ४६ऽ४ प्रति सैकड़ा मृत्यु २० से ४६ वर्ष की आयु के मध्य हुई । विविध जातियों पर विचार किया जावे तो छोटी जाति के हिन्दुओं में सब से अधिक मृत्यु हुई । अर्थात् प्रति सहस्र बस्ती पर ५३.६३ शेष दूसरे हिन्दू हैं । प्रति सहस्र १५ऽ७८ की शरह रही । मुसलमानोंमें १४ऽ८० मृत्यु थी, पारसी प्रति सहस्र बस्ती में ७ऽ३४, यहूदी ११ऽ९७, ईसाई १४ऽ६१ यूरशीन ९ऽ३२, और यूरपीन ५ऽ६३ मरे ॥

"बम्बई में अन्य शहरों की अपेक्षा मृत्यु संख्या कम रही है । यथा पूना में ३० सितम्बर को २१० मनुष्य मरे जब कि उस की बस्ती १२६२०१ है । बम्बई की बसती इस समय पिछली जनता गणना से भी अधिक ११ लाख है, इस हिसाब से यहां ८३० मृत्यु १ दिन में होनी चाहियें, परन्तु यहां अधिक से अधिक ७६८ हुई ॥

"नागपूर की बसती १३४००८ है, इस में १५ अक्तूबर का १५२ मृत्यु हूई । जिस समय रोग आरम्भ हुआ, मैंने तुरन्त उद्योग

---

*दूसरे आक्रमण में तो फिर अर्द्ध बम्बई ग्रस्त हुई होगी, सचमुच शहरों में दिखाई तो ऐसा ही देता है ॥

किया और डाक्टर महाशयों के अपने आप को पबलिक सेवा के वास्ते मुफ्त पेश करने पर हम ने लगभग १०० स्थान ऐसे नियत कर दिए जहां से दवाई व दूध मिल सकता था, एक २ घर को वालंटियर जाते थे, और पैम्फलिट आदि इस के ज्ञान पर प्रकाशित किए, विविध सोसाइटियों ने इतना इस समय काम करना आरम्भ किया, कि कदाचित कोई घर न होगा, जिस में कोई न कोई सहायता न पहुंचाई गई हो॥

"बाज़ों ने कहा है, कि दिसम्बर में इस रोग का पुनः आक्रमण होगा, परन्तु मुझे इस का कोई कारण मालूम नहीं होता है। इस में कुछ सन्देह नहीं कि दुर्भिक्ष व युद्ध काल में किसी भी संसर्गिक रोग के आगमन का भय लगा ही रहता है"॥

हैल्थ अफीसर बम्बई के कथन से ज्ञात होता है, कि वहां बहुत सी कमेटियों ने पबलिक का दुःख दूर करने के वास्ते काम किया, पंजाब के कई शहरों में भी बराबर सेवा समितियां काम कर रही हैं। लाहौर में आर्य्य समाज अनारकली ने एक सेवासमिति बनाई है, जो बहुत अच्छा काम कर रही है। दूध, दवाई, और वस्त्र तक गरीबों को मुफ्त देती है, यह समिति महात्मा हंसराज जी के आधीन काम कर रही है॥

आर्य्यसमाज वच्छोवाली की ओर से भी एक सेवा समिति है, जिस के स्वयं सेवक दैनिक प्रातः गलियों में जाकर आवाज़े देकर जहां कष्ट हो वहां पहुंचते हैं। डाक्टर गोकुलचन्द नारङ्ग बैरिस्टर एक हिन्दु दुःख निवारणी कमेटी के मन्त्री हैं। जो लाला दुनीचन्द बैरिस्टर के आधीन काम कर रही है। मुहल्ला सत्थां में लाला केदारनाथ जी ने एक कमेटी बनाई है। एक हिन्दु अनाथालय के लड़के अच्छा काम कर रहे हैं। ऐसे ही और लोग भी काम कर रहे हैं, कई डाक्टर गरीब रोगियों को मुफ्त देखते हैं। अमृतधारा कार्य्यालय की ओर से यह घोषणा की गई है कि जिस कुटुम्ब में रोटी कमाने वाला बीमार पड़ा हो वहां जितनी खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होगी प्रस्तुत की जावेगी। इस के अतिरिक्त गेहूं व आटा थोड़ी आय वालों के लिए सस्ता लगा दिया गया है॥

ला० सीतारामजी सौदागर लकड़ी व हवन सामग्री ने

घोषणा की है कि हवन कराने के वास्ते यदि किसी जगह लोग सामग्री पर खर्च न कर सकें, तो वह सामग्री मुफ्त देंगे ॥

कमेटी ने ४ डाक्टर नियत किए हैं, जो ग़रीबों को जाकर [illegible] आवश्यक औषधियां गाड़ी में उन के साथ रहती हैं ॥

एक बात शोक से हम ने देखी है, कि मुसलमान रोगी हिन्दुओं से दुगणे मरे हैं, और बस्ती भी मुसलमानों की अधिक है। परन्तु मुसलमानों में ऐसी सेवा समितियां नहीं बनी हैं। कम से कम हम ने एक खबर भी नहीं सुनी. रात्रि को दयालसिंह कालेज के प्रिंसीपल साहिब पधारे कि उन्हों ने मोरीगेट के भीतर अधिकतर मुसलमानों में काम करने के वास्ते एक कमेटी बनाई है, और इस से पहिले भी जो हिन्दू कमेटियां काम कर रही हैं, वह बराबर अपने मुसलमान भाइयों में भी काम करती रही हैं। प्रिंसीपल साहिब यह पूछने आए थे, कि हमारे आटा दालादि प्रस्तुत करने का प्रबन्ध केवल हिन्दुओं के वास्ते है, या मुसलमानों के वास्ते भी है। मैंने उन से कहा कि हिकमत में मज़हब का कोई सवाल नहीं है, जहां दुःख है उस जगह के वास्ते है, आप निःसन्देह जहां आवश्यकता हो मंगवाया करें ॥

मेरा इतना लिखने का यह मतलब है, कि हमारे मुसलमान भाइयों को भी ऐसे अवसरों पर अपने भाइयों के वास्ते अवश्य तैयार होना चाहिए, ऐसे कोप ईश्वर की ओर से आया करते हैं। ऐसे अवसरों पर हमारी परीक्षा भी हो जाती है, कौन अपने भाइयों की सेवा के वास्ते तन, मन, धन में से कुछ भी दे सकता है, तन वाले को तन और धन वाले को धन से कभी नहीं चूकना चाहिए, और मन तो सब का ही ग़रीब भाइयों की दुःख निवृत्ति में लगा होना चाहिए, आओ! हम सब मिलकर सर्वशक्तिमान दयामय ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह अपनी दया से हम लोगों को सद्मार्ग पर चलावे, और ऐसे कोपों से हम को बचावे ॥

परिशिष्ट ॥

विचित्र बात—एक विचित्र बात है, कि ख्वाजा हसन निज़ामी जैसे माननीय व प्रतिष्ठित पुरुष की ओर से यह नोट निकला है:—

" जिस ने कहा पुरइसरार बीमारी या अंग्री बुखार संसर्गिक है, छूत से होता है. उस ने प्राच्य धर्म्म और वीरता को आघात पहुंचाया, और सत्य के विरुद्ध कहा, मैं एक मास तक काठियावाड़ गुजरात में रहा रात दिन रोगियों की सेवा में रहा, परन्तु अब तक रोग से सुरक्षित हूं । जो डरते हैं, बचते हैं, वह मरते हैं ॥ जो रोगियों की सेवा करते हैं, वह जीवन और स्वास्थ्य पाते हैं, देहली आकर हकीम हाज़कुलमुल्क साहिब को जनता की सेवा में लगा पाया, उन से पूछा यह रोग संसर्गिक है, उत्तर मिला नहीं अपने तजरुबा से कहता हूं, कि संसर्गिक नहीं है, क्योंकि हर समय रोगियों में रहता हूं और सुरक्षित हूं । मैंने कहा आप कोई प्रतिबन्धक औषधि सेवन करते होंगे । कहा कदापि नहीं, वरन रोगियों को देखकर हाथ भी नहीं धोता । जब तक स्वास्थ्य रहे न डरो-रोगियों की सेवा करो, उनको असहाय न छोड़ो, उन के सहायक बनो ॥ "

यह तो हम मानते हैं कि ईश्वर सृष्टि की सेवा करने से जिन के हृदय प्रसन्न हैं उन पर वबाई रोग प्रभाव नहीं किया करते, इस वास्ते ख्वाजा साहिब पर प्रभाव न हुआ, और सैंकड़ों लोगों का यह तजरुबा है, कि ऐसे लोगों पर बहुत कम प्रभाव हुआ है, परन्तु इस के संसर्गिक होने में कोई सन्देह नहीं, जो विचित्र बात है, वह यह है कि हाज़कुल मुल्क साहिब की सम्मति भी आप दे रहे हैं । आशा है, कि जनाब हाज़कुल मुल्क साहिब स्वयम् इस पर प्रकाश डालेंगे ॥

नोट—आज कल वैद्यों की यह सम्मति होती जाती है, कि इनफ्लूएनज़ा वात कफ ज्वर नहीं है, वरन् फलगूसन्निपात है, और इस में कुछ सन्देह नहीं है, कि फल्गूसान्निपात के बहुत कुछ लक्षण भी इस से मिलते हैं । फल्गूसान्निपात पित्त कफ से होता है, लिखा है कि:—

" पित्त और कफ इस सन्निपात में अधिक होता है । इस लिए नाभि, छाती, और शिर में पीड़ा अधिक होने लगती है, शरीर में भीतर गरमी बाहिर सरदी मालूम होती है । निद्रावत मूर्च्छा हो जाती है । और दक्षिण ओर सूचीवेदना प्रतीत होती

है, गलापक जाता है, और रुक जाता है, कफ और पित्त बाहिर निकलता है। तृषा भी सताती है। और गले में पीड़ा होती है, कोष्ट-बद्धता रहती है, हिक्का और कास दुःख देती है। नेत्र मिंच रहते हैं"॥

वात कफ ज्वर के लक्षण तो आप देख चुके हैं, कि सारे मिलते हैं; और वात कफ सन्निपात में लिखा है; कि इस से प्रायः एक दिन में रोगी मर जाता है, जिस के अर्थ यह हुए कि वात कफ ज्वर में जब निमोनिया हुआ, मानो सन्निपात होगया, तो रोगी मर जावेगा. परन्तु यदि इसको फलगू या पित्त कफ का सन्निपात समझ लें, तो इस में अधिक तर मृत्यु होनी चाहियें, और बहुत अधिक मृत्यु होती, परन्तु सब मानते हैं; कि मृत्यु असल रोग के कारण नहीं हुई। वरन् उसकी उपाधियों के कारण हुई। और नाभि शूल और केवल दक्षिण ओर सूचीवेदना इस के लक्षण भी विचारणीय हैं। इस दशा में इस को सन्निपात न जान कर वात कफ का वबाई ज्वर ही समझना ठीक मालूम होता है। तथापि और भी इस पर अनुसन्धान होना चाहिए, और भली भांति लक्षणों को मिलाना चाहिए॥

देशी चिकित्सा विधि की कृतकार्य्यता ॥

निम्न लिखित नोट अखबारों में पढ़ कर हमारे हर्ष की सीमा न रही. यही हाल प्रत्येक शहर में हुआ है, यद्यपि विधिवत इसका नोट नहीं रक्खा जा सकता, देशी चिकित्सकों के इलाज से अधिक रोगी अच्छे हुए हैं. इसी वास्ते तो समझदार लोग कहते हैं, कि देशीय चिकित्सा विधि हमारी प्रकृति के अधिक अनुकूल है॥

"हाल में पूना म्यूनासिपिलटी के प्रधान के अनुरोध पर गवर्नर साहिब बम्बई ने पूना के उस हस्पताल का निरीक्षण किया जो विशेष रूप से युद्ध ज्वर के लिए स्थापित किया गया था, इस हस्पताल में आयुर्वैदिक और डाक्टरी चिकित्सा दोनों होती थी, गवरनर साहिब यह देख कर हैरान हुए कि इनफ्लूएनज़ा के अधिक तर वह रोगी स्वस्थ हुए जिनका आयुर्वैदिक विधि से इलाज किया गया था। यदि इसी प्रकार और स्थानों में भी आयुर्वैदिक चिकित्सा विधि से काम लिया जाता तो बहुत आनन्द दायक फल प्रगट होते"॥

ग्रामों की दशा ॥

मुझे दो दिन के वास्ते बाहिर जाना पड़ा, ग्रामों की दशा देख कर कितना शोक होता था, ग्रामीण चिकित्सक जो बेचारे अखबारों को भी नहीं पढ़ते हैं, इस रोग से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। एक रोगी को मैं देखने गया, १२ दिन से वह बीमार था, पढ़ा लिखा तबीब इलाज कर रहा था, मैं ने जब दूध पथ्य बतलाया तो उस ने प्रतिवाद किया कि इस में कफ है इस वास्ते दूध हानि करेगा, मैंने समझाया कि इस में विष है, अतः दूध का कफ होने पर भी अच्छा है। जब दूध दिया गया तो रोगी की दशा अच्छी होने लगी॥

बहुत से रोगी जो स्वस्थ हो चुके थे, उन के वृतान्त सुन कर हैरानी आती थी, यद्यपि उन्हों ने कष्ट पाए, परन्तु जब आयु शेष है, तो कौन मार सकता है, यथा एक रोगी ने वर्णन किया कि उसका ज्वर उतरता नहीं था, एक दिन उस का जी बहुत घबराया, वह उठकर बाहिर कूप पर चला गया, वहां उस को खांसी आई, साथ ही खून आने लगा, पाव सवापाव खून निकलता था, कि उस को चैन आगई, और उस समय से वह दिन प्रति दिन अच्छा होता गया ॥

ग्रामों में खांसी के साथ रक्त आने की बहुत घटनाएं सुनीं और प्रायः यही मालूम हुआ कि जिन को रक्त आया था, उन में से अधिकांश बचे हुए हैं ॥

ग्रामीणों को निमोनिया आदि की कुछ खबर नहीं है। रोगी भीतर बाहिर नग्न या ढका हुआ जैसा हो पड़ा रहता है, हां लोग इतना कहते थे कि जिन की छाती में बहुत पीड़ा होती थी, श्वास घुटता था, वह बहुत अधिक बीमार रहे, या मर गए ॥

जब चिकित्सकों को वहां कुछ मालूम नहीं है, तो साधारण जनों का क्या हाल होगा! शहरों में पबलिक सेवार्थ समितियां और सरविंग कलबें बनाने वाले अपने २ समीप के ग्रामों का भी ध्यान रक्खा करें तो यह बड़ा पुण्य कार्य्य हो। पैम्फलिट, अखबारें, पुस्तकें उनके वास्ते बेकार हैं। उनको तो साधारण बातें समझाने के वास्ते मनुष्य जबानी ही जाकर समझा दें, तो काम चल सकता है। आशा है कि परोपकारी जन आगामी ध्यान रक्खेंगे ॥

इनफ्लूएनज़ा का प्रभाव ॥

जो भारतवर्ष में पड़ा है, वह किसी से गुप्त नहीं है. कुछ आश्चर्य्य नहीं यदि युद्ध में जितनी नई भरती हुई हो, उस से अधिक इनफ्लूएनज़ा भरती करके ले गया हो। पंजाब की जन्म मरण संख्या अक्तूबर मास सम्बन्धी जो प्रकाशित हुई है, उस से पाया जाता है, कि मृत्यु प्रति सहस्र २६८ और जन्म प्रति सहस्र केवल ७३ है, उस से अगले सप्ताह की मृत्यु ३५२ प्रति सैकड़ा है ॥

एक मनुष्य ने अपने तौर पर हिसाब लगाया है, कि केवल लाहौर व अमृतसर में ऐसी हिन्दू लड़कियां जिन के विवाहों को बहुत थोड़ा समय हुआ है, लगभग (४५०) विधवा होगई हैं। युवाओं की मृत्यु ग्रामों व शहरों दोनों जगह अधिक सुनने में आई है। यद्यपि लिखा है कि बूढ़ों पर इसका अधिक प्रभाव होता है। हिन्दू सोसाइटी को विचार करना चाहिए कि सहस्रों की संख्या में विधवाएं समस्त भारतवर्ष में हो गई होंगी उन के विषय में क्या करना चाहिए ॥

आओ !

हम सब मिल कर अपने ईश से प्रार्थना करें, कि वह दयालु अपनी दया से संसार में शान्ति स्थिर रक्खे, इस प्रकार की वबाओं को दूर करे, और हम सब को भलाई में प्रवृत्त करे, हृदयेश्वर वही अन्तर्य्यामी है ॥

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्ति सामा शान्तिरेधि ॥

इति शम् ॥

द्वारा एजुकेशनल प्रेस लाहौर में समग्र पुस्तक छपी।

देशोपकारक औषधालय की

किञ्चित आवश्यक औषधियों के नाम संक्षिप्त गुण और मूल्य ॥

अमृतधारा ॥

इसकी प्रशंसा पृथक् 'अमृत' नामक पुस्तक में अङ्कित है। और यह इतना प्रसिद्ध है, कि सब जानते हैं, कि अमृतधारा न केवल लग भग सर्व मानुषी रोगों की जो साधारणतः घरों में बूढ़ों, बच्चों, जवानों, पुरुषों और स्त्रियों को होते रहते हैं अचूक इलाज है, प्रत्युत पशु पक्षी आदि के रोगों को भी दूर करता है। विचित्र प्रभाव ईश्वर ने भर रक्खा है। रोग नाम का शत्रु है। जहां रोग हो वहां ही जा पहुंचती है। हर ऋतु में, हर देश में, इसको अपने पास रखकर रोगों के भय से निर्भय रह सकते हैं ॥

सब प्रकार का शिर दर्द, कबज, खांसी, पार्श्वशूल (न्योमोनिया), नज़ला जुकाम, विशूचिका, मन्दाग्नि, अरुचि, अफारा, गुड़गुड़ाहट, मरोड़ परिणामशूल, (दर्द कोलञ), अतिसार, आमातिसार, वमन, मृगी, दन्तपीड़ा व दाढ़पीड़ा दांतों से रक्त जाना, व पानी लगना, कर्णपीड़ा, कर्णघाव, कर्णखाज, कर्णशोथ, कर्णकृमि, नासिकार्श, नाक में फुन्सियां, नासिका में दुर्गन्ध, छींक नेत्रपीड़ा, फोड़ा, फुन्सी, सब प्रकार के घाव, कान का पकना, रान का लासना, दाद, चम्बल, गला बैठना, मुखशोथ, भिड़ का डंक, खील का डङ्क, बिच्छू का डङ्क, सर्प का डङ्क, बावले कुत्ते का विष, गले में दर्द, सर्व प्रकार के ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, उपदंश गिलटियां, वद्ध, संधिवात, सर्व प्रकार का शोथ, आन्तरिक व बाह्यिक पीड़ायें, चोट से दर्द, बवासीर, मस्तिष्क की निर्बलता, प्लेग, रक्तवमन, राजयक्ष्मा,

प्रसूत, हृद्रोग, कामला, वायगोला, आर्तव सम्बन्धी सर्व रोग, कण्ठमाला (हजारों), स्त्रियों का शिर दर्द, गुदभ्रंश, बालरोग, डब्बा रोग, बच्चा का दूध न पीना,, सन्निपात, शिर घूमना, सन्न्यास, कम्प रोग, लकवा, अर्द्धाङ्गवात, शिर की खाज, नेत्ररोग, फोला, बह्मनी, नाखूना, कुकरे, पड़वाल, घ्राणनाश, नकसीर, जिह्वाशोथ, मुख में फुन्सियां, मुख का पकना, ओष्ठशोथ, ओष्ठफुन्सी, दन्तकृमि, मसूढ़ा शोथ, गले पड़ना, स्वरभंग रक्त थूकना, पीब थूकना, छाती का शोथ, फुफ्फुस शोथ, स्तन शोथ, स्तन पीड़ा, आमाशयवात, मतली, यकृत पीड़ा, यकृत बात, जलोदर, कठोदर, पाण्डुरोग, आमातिसार, प्लीहोदर, वृक्कोदर, वायगोला, उदरकृमि भगन्दर, वृकद्वपीड़ा, वृक्कद्व शोथ, मूत्राशय पीड़ा, मूत्राघात मूत्राशय, की शोथ, अण्डवृद्धि, प्रदररोग, गर्भाशय की शोथ, गर्भाशय की पीड़ा, योगि से पानी निकलना कटिपीड़ा, गंधनवाय, घुटने का दर्द, एड़ी, पिंडुली, का फूलना, नितम्ब पीड़ा, पित्ती, सर्व प्रकार के रोग, नासूर, सर्व प्रकार की खाज, छपाकी, गुली अर्थात् ओष्ठ का सूजना, बहु स्वेद, अग्नि से जलना, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि दूर होते हैं ॥

आन्तरिक व बाह्यक दोनों प्रकार से सेवन की जाती है ॥ मात्रा २—३ बूंद है ॥

मूल्य २॥) की शीशी दवाई ४ ड्राम। नमूना की छोटी शीशी ॥), २ औंस की शीशी मानो असल से चार गुणा ९), बूंद गिराने वाली शीशी जिससे जितने बूंद चाहो गिरा लो ४ ड्राम २॥।) मिलने का पताः—कारखाना 'अमृतधारा' लाहौर ॥

आबेहयात—"अमृतधारा" की नक़ल है। प्रायः विज्ञापनबाज़ों ने नक़लें आरम्भ करदी है, और लोग अल्प मूल्य देख कर मंगवाते हैं। इस लिए यह नक़ल बनाकर रक्खी है, जो इन नक़ालों से फिर भी अच्छी होगी। असल व नक़ल का फ़र्क़ दिखा देगी ॥

मूल्य फी शीशी ॥।)   नमूना की छोटी शीशी ।)

पुरुषों के विशेष रोगों की औषधियां

अकसीर नं १ महत् वाजीकरण औषधि—बहुतसा वीर्य्य वर्द्धक, उत्तेजक औषधियों का संग्रह है। नपुंसकता की सम्पूर्ण अवस्थाओं में हितकर है, यह पुरुषों के गुप्त रोगों के वास्ते जनरल औषधि है। नपुंसकता के अतिरिक्त वातज रोग, कफज रोग, खांसी, नज़ला, जुकाम, कटि पीड़ा, सन्धिवात को हितकर है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्न दोष को बहुत लाभदायक है। प्रभाव किञ्चित उष्ण है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥), मात्रा १ गोली सायम् प्रातः ॥

अकसीर नं. १०—बलवर्द्धक है, प्रत्येक जाड़े में एक मास खा छोड़ने से कभी बल कम न होगा। नामर्द भी मर्द होजाते हैं। बूढ़ों को युवा बनाती है। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः। मूल्य जिसमें कस्तूरी पड़ी हुई है। ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥), जिसमें कस्तूरी नहीं पड़ी परन्तु धातुपुष्ट शेष सब औषधियां वही हैं ६४ गोली २), ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं ११—हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय, को पुष्टिदायक है। आनन्दवर्द्धक है। शीघ्रपतन, शुक्रमेह स्वप्न दोष को हितकर है। याकूती का भी काम देती है। ताऊन के दिनों में खाने से मानसिक बल स्थिर रहता है। और बड़ा गुण करती है। उत्तेजक है, अमीरों के खाने योग्य, प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल, इसका प्रधानांश स्वर्ण है, मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥), नमूना ४ गोली ॥=)

अकसीर नं. १५ मकरध्वज—वैद्यक औषधियों का यह राजा माना जाता है। इसका प्रधान अंश चन्द्रोदय है। जिसका बनाना नितान्त कठिन है। इसके खाने से ही असली जवानी आती है। वीर्य्य को सन्तानोत्पत्ति के योग्य बना देता है। वीर्य्यसम्बन्धी सर्व रोग पूर्णतयः दूर होजाते हैं। राजे

महाराजे सदैव इसको अपने पास रखते हैं, और प्रायः खाते हैं, जिसको खरीदने की सामर्थ्य है, उसको अन्य औषधि की आवश्यकता ही क्या है । मूल्य ५०) फी तोला, है । फी माशा ४।), मात्रा ४ रत्ती है । प्रतिवर्ष १ तोला खा छोड़ें तो पूर्ण आयु बढावे और बली रखे ॥

अकसीर नं० १६ बृहद्‌बंगेश्वर रस—इसमें स्वर्ण भस्म, चांदी भस्म, मोतीभस्म, कस्तूरी, बंग भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, भीम सेनी कपूर, आदि सम्मिलित हैं । आनन्ददायक, पौष्टिक, और उत्तेजक है । शुक्रमेह तुरन्त दूर होता है । स्वप्रदोष, शीघ्रपतन को गुणकारी है । वीर्य्य गाढ़ा होता और उत्पन्न होता है । २० बीस प्रकार का प्रमेह और बारम्बार मूत्र आना, दूर होता है । जठराग्नि दीपन होती है । अग्नि, बर्ण, बल, वीर्य्य और तेज बढ़ता है । पुराने ज्वरों पर भी देते हैं । हृदय, मस्तिष्क, यकृत को बलदायक है । मूल्य ३२ गोली ४) नमूना ८ गोली १)

अकसीर नं. २० मनमथ रस—बूढ़ों को युवा, और युवा को मल्ल बनाने के वास्ते यह योग शिव जी महाराज का निर्म्माण कृत है । उत्तमता यह है, कि तीव्र नहीं है । चिरस्थाई लाभ धीरे २ करता है । सदैव खाने में कोई हानि नहीं है । शीघ्रपतन, स्वप्रदोष, शुक्रमेह को दूर करता है, और उत्तेजक है। बम्बई के एक ७० वर्ष के वृद्ध २२ बच्चों के पिता ने मुझे लिखा था, कि युवावस्था के प्रारम्भ से प्रत्येक जाड़े में २ सप्ताह इसको सेवन करता है, और वह अब तक भी पूरी शक्ति रखता है । सन्तानोत्पत्ति के योग्य है । खांसी नज़ला, जुक़ाम, श्वास, पांडु, कामला, अपाचन को हितकर है । रक्त उत्पन्न करता है, पौष्टिक, उत्तेजिक, व स्तम्भक है । मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं०२३ दूध घृत पाचक—इसे १ चावल से १ रत्ती तक प्रकृति अनुकुल नित्य खाने से दूध घृत पचाने की शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती है। सेरों तक नौबत पहुंचती है। १४ दिन के भीतर पूरा प्रभाव प्रतीत होता है।

४० दिन के भीतर सेरों दूध पचने लगता है । ७० दिन के सेवन से सम्पूर्ण कफज व बातज रोगों को दूर करती है। घी दूध पचाने की शक्ति सदा के लिये बढ़ा देती है। मूल्य ५) रुपये तोला, नमूना ३ माशा १।)

अकसीर नं० २४, सुखकारक—स्तम्भक है, शीघ्रपतन रोग वालों को जब तक रोग दूर न हो, कभी २ आवश्यकता पड़ती है । तीसरे पहर दूध के साथ खावें पश्चात् कोई खट्टा, लवणयुक्त वस्तु न खावें, चौगुणा स्तम्भन होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

अकसीर नं. २७ (अब निर्बल न होंगे)—रति पश्चात् एक दो गोलियां खालीजिये, उदासी दूर, सुस्ती चकनाचूर, बल ज्यों का त्यों ॥ तीसरे पहर खावें तो स्तम्भन हो, नित्य दूध के साथ सायम् प्रात खावें, तो शुक्रमेह शीघ्रपतन को हितकर है। मूल्य ६० गोली १), नमूना ≈)

अकसीर नं. २८ तैल मालकंगिनी—कफज वातज रोग नाशक, नपुसकता, मस्तिष्क की निर्बलता, अस्मृति, शीघ्रपतन, कटिपीड़ा, सर्वांगपीड़ आदि को दूर करता है ॥ करतल पर मलें तो दृष्टिशक्ति को बल देता है । स्तम्भन के वास्ते भी वर्तते हैं। हस्त मथुन निर्बलों को तिला का काम देता है। नसें और पट्ठे दृढ़ होते हैं । मूल्य १) शीशी ४ डराम, नमूना ≈।

अकसीर नं. ३१, चन्द्रप्रभा वटी—यह एक वैद्यक योग है, जो विविध नामों से बड़े २ वैद्य बेच रहे हैं। यह मूत्र के साथ शुक्र (मनी आदि) जाने को रोकती है । २० प्रकार के प्रमेह, पथरी, अफारा, शूल, मदाग्नि, अण्डवृद्धि, पाण्डु, कामला, बवासीर, भगन्दर, नासूर, कटिपीड़ा, कास, श्वास, हिक्का, डकार, नजलादि को हितकर है । रज वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है । मात्रा २ गोली सायम् प्रातः । मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं. ३३ आयुर्वेदिक टानिक—रज वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है । जब कोइ विशेष कारण प्रतिबन्धक न

हो तो स्त्री पुरुष दोनों को गाय के दूध के साथ खिलाना आरम्भ करें। एक दो मास खावें, और प्रत्येक रजोधर्म्म के पश्चात् गर्भाधान करें तो ईश्वर कामना पूरी करे। कह गोलियां उत्तेजक, शुक्रमेह स्वप्नदोष, शीघ्रपात नाशक, शुद्धरक्तोत्पादक स्नायुबल वर्द्धक, सन्धिवात नाशक है, और कटि पीड़ा, गुल्फपीड़, पार्श्वशूल, रानपीड़ा, रींघनबाय, आदि सर्व वातज कफजरोग, प्रमेह, कामला, रक्तक्षीणता, शोथरोग, जलोदर, कठोदर, मूसे का विष, स्त्रियों के मासिक रज की कमी व अधिकता, अन्त्रवृद्धि को हितकर है। मधु व पानी के साथ स्थूलता को दूर करती है। अंग्रेजी टानिक औषधियों का इस का मुकाबला करो अव्वल दर्जे रहेगी। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः प्रकृति अनुकूल न्यूनाधिक कर सकते हैं। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमुना ८ गोली ॥)

अकसीर नं. ३४ (क)—शुक्रमेह (धात जाना) के वास्ते यह अद्वितीय औषधि है, स्वप्रदोष को बहुत शीघ्र दूर करता है। शीघ्रपतन को भी हितकर है। वीर्य्य को गाढ़ा करने में अनुपमेय है। प्राकृत स्तम्भन को बढ़ाती है। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः। मूल्य ३२ गोली २), नमुना ८ गोली ॥)

अकसीर नं. ३४ (ख)—उपर्युक्त औषधि के भीतर केशर, कस्तूरी, अम्बर, मोती, शिलाजीत, स्वर्ण, चांदी अभ्रकादि भस्में और संयुक्त की जाती हैं, तो यह उपर्युक्त लिखित गुणों के अतिरिक्त हृदय मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय को बल देती है! उत्तेजना बहुत करती है। अमीरों के खाने योग्य है। मूल्य ३२ गोली ५), १६ गोली २॥) नमूना ८ गोली १)

अकसीर नं. ३६ (क)—सुस्त पट्ठों को पुष्ट करने में अद्वितीय है। जिनको केवल उत्तेजना की कमी हो, वह इसका सेवन करें। खाने और लगाने दोनों के काम आता है। उसे पट्ठे पुनर्जीवित होजाते हैं। एक तिनका से लगाकर मक्खन के साथ खाते हैं। जिनको केवल कभी उत्तेजना हो उनको दीजाती है। सुस्त इससे चुश्त होजाते हैं। प्रभाव उष्ण है। वातज कफज रोग, सन्धिवात, गुल्फ पीड़ा, रींघनवाय, श्वास, कफज, कास, स्नायु की निर्बलतादि को हितकर है। मूल्य ५) शीशी ४ डराम, आधी २॥), नमूना ॥।)

अकसीर नं. ३९—शुक्र जनक है, शीघ्रपतन व वीर्य्यस्राव को दूर करती है। मस्तिष्क के लिये अति लाभदायक है। वीर्य्य को खूब बढाती है, और गाढा करती है। शारीरिक बल अधिक करती है। शीघ्रपतन के लिये विशेष रूप से हितकर है। शुक्रमेह को दूर करती है। लेसदार औषधि होने पर भी काबिज़ नहीं है। इसके खाने से प्राकृत स्तम्भन बढता है। मूल्य फी पाव २), आधपाव १), छटांक ॥)

अकसीर नं. ४० स्वप्नदोष नाशक—यह औषधि विशेष कर स्वप्नदोष ग्रस्तों के वास्ते है। शुक्रमेह व शीघ्रपतन नाशक है। स्तम्भक भी है। स्वप्नदोषाधिक्य १ मास के भीतरही नष्ट होता है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली।)

अकसीर नं. ४१ कामिनी वशीकरण—जो लोग कहते हैं, कि स्तम्भन की कोई औषधि उनको गुण नहीं करती, इसका सेवन करें। ६ गुणा बन्धेज होता है। यदि दैनिक यह गोलियां खाई जावें तो शीघ्रपतन दूर होकर सदैवी स्तम्भन उत्पन्न होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष का मूलच्छेद होता है। पट्ठों को पुष्ट और दृढ करती है। कस्तूरी, सोना, चांदी, मोती, केशरादि इसके प्रधान अंश हैं। ३० गोली २५), ६ गोली ५), १ गोली १)

अकसीर नं. १८, शिंगरफ भस्म—वाजीकरण में अनुपम मानी गई है। पट्ठों को असाधारण बल प्रदान करती है। नपुंसकता दूर करने की बलवान् औषधि है। बूढ़ों की लाठी है। वातज व कफज रोग यथा अर्द्धाङ्ग वात, आर्दितवात, सन्धिवात, शून्यवात, कफजखांसी, मन्दाग्नि आदि को रामबाण है। शुद्धरक्तोत्पन्न करके चेहरे को लाल करती है। मूल्य १ तोला १०), ३ माशा २॥), नमूना १ माशा १), शीतऋतु में अवश्य सेवन करें। दर्जा खास १००) तोला है॥

अकसीर नं. १९ वंगभस्म दर्जा अव्वल—यह सवासौ पुट से पहिले शुद्ध की जाती है, फिर भस्म की जाती है। चांदी भस्म भी इसके सामने

कुछ नहीं । शुक्रमेह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र सोज़ाक, करंह को हितकर है, उत्तजक है। 'मर्द को बंग और घोड़े को तंग' की उक्ति इसी पर ठीक आती है । मूल्य १ तोला १०), ६ माशा ५), नमूना १॥ माशा १।), मात्रा १ रत्ती ॥

बङ्गभस्म सामान्य—कलई को साधारण शुद्ध करके बनाया जाता है, गुण लगभग वही हैं जो ऊपर वर्णन किए गए हैं, परन्तु प्रभाव किञ्चित देर से होता है । मूल्य १ तोला २), ३ माशा ॥) मात्रा ३ रत्ती ॥

अकसीर नं. २५, त्रिधातु भस्म—यह कलई, सीसा व जस्त की मिश्रित अत्युत्तम पीत रंग की भस्म है । जो प्रदर सोम, शुक्रमेह, आदि को दूर करने, वीर्य्य को गाढा करके प्राकृत बन्धेज (स्तम्भन) उत्पन्न करने में विचित्र औषधि है । मूल्य केवल १ तोला ४), ६ माशा २), नमूना १॥ माशा ॥)

अकसीर नं. २६, स्वर्ण भस्म अव्वल दर्जा—पट्ठों को पुष्टि देती है, हृदय, मस्तिष्क, यकृत, वकद्वै, मूत्राशय, जननेन्द्रिय सब को बल प्रदान करती है । वीर्य्यवर्द्धक और उत्तेजक है । घृत दूध पाचनकारी, अग्निरक्षक है । ३ माशा भी यदि एक बार खा लो, तो वर्षों की गई हुई शक्ति पुनः आजाय शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्रदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता, नपुंसकता, स्मरणशक्ति, तथा हृदय की निर्बलता सब दूर हों । मूल्य १ तोला ८०), ३ माशा २०), १॥ माशा १०), ४ रत्ती ४)

स्वर्णभस्म दर्जा दोयम—गुण वही हैं, परन्तु किञ्चित् देर में प्रभाव होता है । मूल्य १ तोला ४०), ६ माशा २०), १॥ माशा ५), ४ रत्ती २

मूंगाभस्म—पित्त प्रकृति वाले, धातु विकार में ग्रस्तों को दीजाती है । सस्ती किन्तु बड़ी उत्तम औषधि है पुरानी शिर पीड़ा, मस्तिष्क की निर्बलता, नज़ला, प्रतिश्याय, रक्तवमन, रक्तपित्त को हितकारक है । वीर्य्यकोष, मूत्राशय की गरमी को दूर करती है । मूत्रदाह को भी हितकर है । मूल्य १ तोला, ॥) छ माशा ।)

संखियाभस्म (दर्जा खास)—यह भस्म विशेष रूप से बल और उत्तेजना के लिए तैयार की गई है । १४ दिन के भीतर पर्य्याप्त बल आता है।

और ४० दिन के भीतर तो रुकना कठिन होता है, इस के अतिरिक्त सम्पूर्ण वातज कफज रोगों को रामबाण है। बूढ़ों की सहायक है, उनको युवा बनाती है। मूल्य ३ माशा १२), १ माशा ४), नमूना २ रत्ती १), मात्रा खशखाश से १ चावल तक॥

संखियाभस्म—वातज, कफज, सन्धिवात, अर्दितवात, अर्द्धांगवात, कफज कास, श्वास, कटिपीड़ादि को हितकर है, उत्तेजक है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥≈)

चांदीभस्म—धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हृदय व मस्तिष्क आमाशय की निर्बलता, नपुंसकता, को हितकर है। प्रमेह, हृदय की धड़कन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ८), ३ माशा २), नमूना १॥ माशा १)

फौलादभस्म शिङ्गरफी—यह भस्म फौलाद की शिंगरफ के द्वारा की जाती है। धातुरोग यथा शीघ्रपतन, वीर्य्यस्राव, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढ़ाता है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत को बल देती है, रंग की श्वेतता को दूर करता है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

फौलादभस्म, (दर्जा) खास—यह भस्म असली फौलाद की बड़े परिश्रम से २ वर्ष के भीतर तैयार होती है। सातही मात्रा में नामर्द को मर्द बनाने की शक्ति रखती है। बूढ़े और नपुन्सक भी इस के खाने से सन्तानोत्पत्ति के योग्य हुए हैं। ७ दिन खाकर रोकना कठिन होता है। सदैव तैयार नहीं रहती, क्योंकि एक बार बिक जाने से फिर देर में तैयार होती है। मूल्य ३ माशा १९२), रत्ती १६)

फौलादभस्म, (दर्जा अव्वल)—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों में तैयार होती है। बड़ी बाजीकरण है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को थोड़े ही दिनों में लाल करती है। पट्ठों को बल देती है, वीर्य्य सम्बन्धी रोगों को दूर करके नामर्द को मर्द बनाती है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥≈)

फौलाद भस्म—धातु क्षीणता, नताकर्ता, शीघ्रपतनादि को हितकर है, यकृत को बलदायक है, रंग को लाल करती है। मूल्य २॥) तोला, ३ माशा ॥≈)

मण्डूर भस्म—यकृत रोग, कामला, पाण्डु रोग, शोथ, जलोदर, मूत्राशय की निर्बलता का हितकर है, और शीघ्रपतन को भी जब कि रोकने वाली शक्ति की निर्बलता के कारण से हो बहुत गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

सीसाभस्म—मूत्रकृच्छ्र के वास्ते हितकर है। कुर्रह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

अनविधि मोतीभस्म, (मुरवारीद नासुफ़ता)—हृद, यकृत, मस्तिष्क को बलदायक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि निवारक हैं। मूल्य ३०) रु० तोला ३ माशा ७॥), ४ रत्ती १।)

रस सिन्धूर—वैद्यक की प्रसिद्ध औषध है। यह रसायन है, उत्तेजक है, इस की वैद्यक ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा लिखी है। विभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य २०) तोला है। और शुद्ध पारद से तैयार कृत का मूल्य १०) तोला, शिंगरफ से निकाला हुआ पारा से तैयार कृत ५) रु० तोला है॥

चन्द्रोदय—यह एक प्रकार का रस सिन्धूर सोना मिश्रित होता है। सर्व औषधियों का राजा है। न केवल धातु सम्बन्धी सर्व रोगों की सर्वोत्तम औषधि है। बरञ्च उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में वर्ता जाता है। कई घर इस से बस गए हैं। विभुक्षित पारा से तैयार कृत मूल्य १००) रु० तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत २०) रु० तोला है॥

कौड़ीभस्म—कान के बहने, मन्दाग्नि, प्लीहा, कफज रोगों को हितकर है। उत्तेजक है, मूल्य ॥) आना तोला॥

कृष्णाभ्रकभस्म—सर्व प्रकार के ज्वरों के लिये रामबाण है। लाल रंग का मूल्य ५) रु० तोला, ३ माशा १।)

श्वेताभ्रकभस्म--ज्वरों के लिये गुणकारी है। मूल्य १ तोला १),

गोदन्तीहड़ताल भस्म--सर्व ज्वरों को हितकर है। बालक से लेकर वृद्ध तक सेवन कर सकते हैं। मूल्य ॥) आना तोला ॥

श्वेत सुरमा भस्म--पैत्तिक रोगों में हितकर है। मूल्य ॥) तोला ॥

संगजराहत भस्म--कास, राजयक्ष्मा, रक्तवमन, तप, मूत्रकृच्छ्र, और पित्तज रोगों को हितकर है। मूल्य ॥) तोला ॥

संगयश्बभस्म--हृद रोग, मदात्यय: उन्माद, और धड़कन को दूर करती है मूल्य १॥) रु० तोला, ६ माशा ॥।)

जस्तभस्म--सुरमा की न्याईं लगाने से पानी जाना, धुन्ध, तिमिर, और खाने से सन्धिवात, शीघ्रपतन कामादि को हितकर है। मूल्य १) रु० तोला ॥

मोतीसीपभस्म--सोजाक के लिये अनुपम है पुंसत्व वर्द्धक है। कास श्वास को दूर करती है। मूल्य १॥) तोला, ६ माशा ॥।)

बारहसिंहाभस्म--सर्व प्रकार की पीडाओं, वातवेदना, पार्श्वशूल, गुल्फ पीडा, संधिवात, वातज शूल को हितकर है। मूल्य १॥) ६ माशा ॥।)

संगयहूदभस्म--वृक्क व मूत्राशय के रोगों को हितकर है। पथरी को दूर करती है। वृक्क पीडा को नाश करती है। मूत्रकृच्छ्र को भी हितकर है। मूल्य १॥) तोला ॥

जहरमोहरा खताई भस्म--विषों को दूर करती है। पैत्तिक रोगों में वर्ती जाती है। हृदय को बल देती है, और बहुत से रोगों को हितकर है। मूल्य आठ आना तोला ॥

अकीक भस्म--जीर्णज्वर, यकृत व हृदय की ऊष्णता, धड़कन, पट्ठों की दर्द, हृदय, मस्तिष्क, वृक्क, मूत्राशय की निर्बलता, मधुमेह और धातुक्षीणता को हितकर है। मूल्य २) रु० तोला, दर्जा अव्वल १०) रु० तोला,

[अब पुरुषों के विशेष रोग सम्बन्धी तिला (लिङ्ग तैल) अंकित होते हैं।]

तिला नं० १—कुछ सुगन्धी युक्त है। बूढ़ों को भी प्रबल बना देता है। उनको विशेष रूप से लाभकारी है। हस्तकारों को और जो शौकिया बल बढाना चाहें, यह तैल हितकर है। नसों और पट्ठों को बल देता है। मूल्य ४ डराम ५) रुपये। एक डराम १।)

तिला नं० २—यह वही है जो अकसीर नं० ३६ (ख) में पीछे अंकित होचुका है। जोडों पर मर्दन करने से पीडा बन्द करता है। हस्तकारों (अर्थात् हस्त मैथुन से जिन की नसें कमजोर होगई हैं) को बिना उपाड (फुंसी को पूरा लाभ देता है। मूल्य २ डराम १), नमूना ।)

तिला नं० ३, तिलाय महत्—हस्तकारों को विशेष रूप से हितकर है। साधारण अवस्थाओं में बहुत गुण करता है। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना ≈)

तिला नं० ४, तिलाय मायूसीन—यह बड़ा प्रचण्ड है। चर्म का एक परत उतार देता है। परन्तु हस्तकारों की नसों पट्टों को बहुत शीघ्र ठीक करता है। ४ दिन सेवन से पर्य्याप्त बल आता है। किन्तु खाने की अच्छी औषधि भी साथ हो। क्योंकि तिलाओं के साथ पौष्टिक औषधि का सेवन होना आवश्यक है। निरास रोगियों को इस से लाभ हुआ है। शिथिलता, ध्वजभंग, नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है। मूल्य २ डराम ३), नमूना ॥।)

तिला नं० ८, आनन्द वर्द्धक शाही—इस की प्रशंसा क्या करें, जिस ने एक बार आजमाया इस पर मोहित हुआ। नितान्त आनन्ददायक नितान्त सुगन्धियुक्त, जहां हो महक जावे, एक चावल पर्य्याप्त है, पुरुष स्त्री के आनन्द की कोई सीमा नहीं। मूल्य १२) रु० तोला, ३ माशा ४), नमूना १ माशा १≈)

तिला नं० ११, (कामनी द्रावक)—नं० ८ के गुण हैं, वह अमीरों को है तो यह गरीबों को। एक आध माशा नं० ८ की तरह लेप करके कार्य्य में प्रवृत हों बहुत ही शीघ्र स्त्री...होगी। मूल्य १) है

सिंहवसा, (चरबी शेर)—पीड़ित अंगों पर और सुस्त स्थान पर मलते हैं। इस की मालिश......पर करने से नसें व पट्टे सबल होते हैं। और मधु मिलाकर इस की मालिश १ घण्टा प्रथम करें, पौष्टिक व अनन्ददायक है। मूल्य १) तोला, ६ माशा ॥)

अब स्त्रियों के रोगों की औषधियां वर्णन करते हैं ॥

प्रदरान्तक लोह—किसी प्रकार का प्रदर हो, लाल, पीत, श्वेत, इस से दूर होता है। कटिपीड़ा, सोम रोग आदि को हितकर है। मासिक धर्म्म की अधिकता, पीड़ा, बेकायदगी सब दूर करता है। मूल्य ३२ गोली २) रुपया, नमूना ।)

आर्तव प्रवर्तक (अर्क मुदर्र हैज़)—ऋतुस्राव का कम होना, या न आना, वेदना सहित आना, और तत्सम्बन्धी सर्व रोगों को दूर करके ऋतु को खोलता है। और बल प्रदान करता है। स्त्रियों के लिए टॉनिक औषधि है। मूल्य ४ औंस २), नमूना १ औंस ॥)

श्वेत प्रदरौषधि—स्त्रियों को जो श्वेतपानी जाता है, जिस को ल्यूकोरिया, श्वेतप्रदर, जिरयानुलरहम, सैलानेरतूबतज़नां, सोमरोगादि भी कहते है। चाहे किसी प्रकार का और किसी दर्जा का हो, इस से आराम आजाता है। मूल्य २४ मात्रा २), नमूना ८ मात्रा ॥।), साधारणावस्थाओं में ८ मात्रा ही पर्य्याप्त है ॥

कुक्कटाण्डछिलका भस्म—शुक्रमेह, श्वेतप्रदर दोनों को हितकर है। बाज़ी स्त्रियों को विशेष समय पर पानी बहुत आता है, उस के वास्ते

विशेष रूप से हितकारी है ॥ थोड़े दिन स्त्री को खिलावें, तो अक्षत योनि के तुल्य करता है । मूल्य ३) रुपये तोले । ६ माशा १॥), नमूना १॥ माशा ।=)

गर्भ चिन्तामणि—गर्भिणी के सर्व रोग, ज्वर, कास, अजीर्ण, शोथ, जी मचलाना, वमन, अतिसार, उदरशूल, शीतादि को लाभ करती है । गर्भिणी की कोई भी व्याधि हो इस से लाभ होता है । स्मरण रहे, कि गर्भ की वमन के वास्ते अमृतधारा भी अति हितकर है । मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

मोतीपाक (माजून मुरवारीद)—जिन स्त्रियों को गर्भपात होजाता है, उन को जब गर्भ का पता लगे तो उसी समय इसे आरम्भ करके प्रथम तो पूरे दिनों तक अन्यथा उस मास के अन्त तक जिस में गर्भ गिरता है इस औषधि को खाना चाहिये । अकसीर है, न केवल गर्भ रक्षा करती है, अपितु बालक व प्रसूतः को कई रोगों से सुरक्षित रखती है । मूल्य १ पाव १०) रुपया, आधपाव ५), इस से कम मगाने का लाभ नहीं है ॥

मीठा फल, (चमत्कारिक निर्म्माण)—यह एक विचित्र, ससार को अचम्भे में डालने वाली औषधि है । जब गर्भ होजावे तो २ मास के पश्चात् तीसरे मास जबकि अंग बनते हैं । इस की केवल ३ दिन २ गोली दूध से खिलाई जाती हैं । अचिंत्य प्रभाव से यह ऐसा करती है, कि पुत्र ही उत्पन्न होता है । चाहे गर्भ के भीतर पुत्र हो वा पुत्री । जिन के पुत्रियां ही उत्पन्न होती हैं, उन के वास्ते विशेष रूप से ईश्वरीय दान है । इस के साथ यह प्रतिज्ञा होती है, कि यदि कन्या उत्पन्न हो तो मूल्य वापस कर दिया जाएगा । यह प्रतिज्ञा इस लिए है, कि नई बात होने से कई लोग बिश्वास नहीं करते, और १०) व्यय करने से झिझकते है । मूल्य १०)

अठरा की औषधि, (ब्रह्मपुत्र रस)—कतिपय स्त्रियों के सन्तान होकर मर जाती है । जिस को अठरा वा सूखिया मसान कहते हैं ।

गर्भाधान से लेकर पूरे दिनों तक और कुछ मास पश्चात् तक इन गोलियों को सायम् प्रातः खिलाया करें और ईश्वर की कृपा से बालक जीता रहता है। मूल्य ७०० गोली १०) रुपया।

शिक्षित धातृ—यह औषधि प्रसूत समय देने से स्त्री सुगमता से बालक जनती है। रक्त कम यथावश्यक जाता है। प्रसूत के पश्चात् होने वाले रोग दूर होते हैं। मूल्य १॥), नमूना ॥)

सुखजनाई—इस औषधि के केवल कटि पर बांधने से बालक सुगमता से उत्पन्न होता है। मूल्य १) रुपया, जो एक बार को पर्य्याप्त है॥

गर्भकारकवटी, (हबूबहमल)—जबकि पुरुष का वीर्य्य ठीक हो, यह गोलियां स्त्री को ऋतु स्नान पश्चात् खिलाई जावें, तो प्रथम ही मास अन्यथा अधिक से अधिक चौथे मास के भीतर ईश्वर की कृपा से गर्भ स्थित होजाता है। मूल्य २८ गोली जो ४ मास को पर्य्याप्त हैं ५) रुपया॥

अब बालकों के रोगों की औषधियों का वर्णन करते हैं॥

बालरोग चूर्ण—बालकों के प्रायः रोग यथा अजीर्ण, अतिसार, ज्वर, खांसी आदि को हितकर है। प्रत्येक बालकों वाले गृह म रखना चाहिए मूल्य १ औन्स ॥), नमूना ≤),

बालकों के डब्बा रोग की औषधि—बालकों के डब्बा अर्थात् पसली रोग के वास्ते यह औषधि रसायन अर्थात् अतीव गुणकारी है। मूल्य १ तोला ५) रुपये, नमूना २ माशा १)

शिशुरक्षक. (अकसीर बचगान)—यह बालकों के वास्ते टानिक औषधि है। मन्दाग्नि, कोष्टबद्धता, हरे, पीले, दस्तों का आना, ज्वर, तृषा कृशता, बालक का सूखत जाना, और सदैव रुग्ण रहना, पित्ताधिकता सब दूर होते हैं। ६४ गोली १), नमूना ८ गोली ≤)

फूलो फलो—यह सूखिया मसान की औषधि है। इस को केवल कोट पर मला जाता है, और वहां से महीन २ कृमि निकलते है, वही रोग का कारण होते है। तीन दिन के भीतर सब कृमि निकल जाते हैं, और वह बालक जो दिन प्रति दिन सूख रहा था, हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देती थी, अब प्रफुल्लित होता है। मूल्य धनवानों से १००), साधारण से ५), निर्धनों से १) रुपया ॥

अव बिवधि रोगों की औषधियों का वर्णन करते हैं ॥

उपदंश की औषधि—उपदंश कठिन रोग है! यदि वेपरवाही की जाय तो पीढियों तक पीछा नहीं छोडता। उपदंश नर तथा मादीन के भेद से दो प्रकार का होता है। नर में गहरे घाव केवल लिंग पर होते है। मादीन का विष रक्त में प्रविष्ट होजाता और शरीर फूट पड़ता है। इसका पहला घाव साधारण होता है। इस के तीन दर्जे होते हैं। पहले दर्जे में घाव केवल लिंग पर होता है। दूसरे में शरीर पर काले दाग, ताम्र रंग की फुन्सियां, और छोटे २ घाव आदि निकलते हैं। तीसरे दर्जे में हड्डी तक प्रभाव चला जाता है। बड़े २ घाव कुष्ठवत होते हैं। उपदंश के वास्ते कई औषधियां तयार रहती हैं। साधारण रूप से यह हैं, अपनी अवस्थानुसार मंगवालें, या हम वृतान्त आने पर स्वयम् निश्चत करके भेज देते हैः-

उपदंश औषधि नं० २—यह उपदंश के तीनों दर्जों नर व मदीन के वास्ते हितकर है। पैतृक उपदंश के वास्ते भी हितकर है। मूल्य ४) रुपया, अर्द्ध औषधि २) रुपया।

उपदंशौषधि नं० ४—नर उपदंश के वास्ते और नवीन मादीन के वास्ते अकसीर हैं। सर्वथा हानि रहित गोलियां हैं, साधारण काष्ठिक वस्तुओं से वनी हैं। दो गोली वासी पानी से खाई जाती हैं। मूल्य १२८ गोली ४), ६४ गोली २ रुपया ॥

उपदंशौषधि नं० ५—प्रायः १५ दिन में आराम आता है। दोनों प्रकार के उपदंश दर्जा अव्वल में अद्वितीयगुणकारी है। मूल्य २८ गोली ४) रुपया, १४ गोली २) रुपया ॥

उपदंशौषधि नं ८—यह औषधि भी सब प्रकार के उपदंश को विशेष कर प्रथम व तृतीय दर्जे को अकसीर है। मूल्य २८ गोली ४) रुपया, १४ गोली २) रुपया ॥

उपदंशौषधि नं० १३—उपदंश नर तथा मादीन को १४ दिन में आराम करती है। अव्वल दर्जे को अकसीर और दूसरे दर्जे में भी गुणकारी है। मूल्य ४) रु०, आधी २) रु० ॥

उपदंशौषधि नं० १४—इस से २० या अधिक से अधिक ४० दिन के भीतर आराम आता है। केवल एक बूटी है, दर्जा अव्वल में अद्वितीय है। मूल्य ४० गोली ४) रु०

उपदंशौषधि नं० १५, (धूम्रपान)—यह टिकिया है, दिन में तीन बार चिलम में रखकर हुक्का की तरह पीने से उपदंश नर, मादीन प्रथमावस्था के घाव चाहे कैसे ही गहरे हो अच्छे होजाते हैं। कण्ठमाला को भी हितकर है। आन्तरिक घाव किसी प्रकार का हो इस के पीने से अच्छा होजाता है। तीक्षण अवश्य है, परन्तु अद्भुत् औषधि है। कोमल स्वभाव वालों को सेवन नहीं करना चाहिये। ३ दिन में ही आराम आता है। मूल्य ९ टिकिया २)

उपदंशौषधि नं० १६, (उपदंश रेचन)—जब कि रोग जीर्ण हो चुका हो, या ऐसा दुःसाध्य हो, कि आराम न आता हो, तो पहिले जुलाब लेना उचित होता है। यह औषधि ३ माशा या अधिक से अधिक ६ माशा खिलाई जाती है। इस से उचित रेचन होकर उपदंश का विष निकल जाता है। जिस का आसौज, कार्तिक, या चैत्र फाल्गुण में उपदंश के फूटने का भय हो, वह ऋतु के आरम्भ में यह रेचन ले लें। मूल्य ६ माशा १) रुपया।

तथाच, (उपदंशौषधि नं० १७)—(द्वितीय तृतीय दर्जा उपदंश के लिये), यह औषधि दुःसाध्य जीर्णोपदंश के घाव, द्वितीय, तृतीय दर्जे के घाव फोडा, फुन्सा, व्रणादि को हितकर है। तालूछिद्र को गुणकारा है। नासूर को दूर करती है। मूल्य ६४ गोली ४) रुपये, ३२ गोली २) रुपया॥

सारशारिष्ट—बहुत सी वैद्यक औषधियों का संग्रह है। उपदंश द्वितीय, तृतीय दर्जे में हितकर है। फोडा फुन्सी, दाग, चम्बल, दाद, कृष्णदाग, ताम्र वर्ण धप्पड, खुजली आदि को दूर करके शरीर को कुन्दनवत करता है। उन सब रोगों में जिन में वलायती सारसपरीला वर्ता जाता है, यह अधिक गुणकारी प्रमाणित होगा। मधुमेह, प्रमेह को हितकर है। प्रमेह के पश्चात जो कारबङ्कल भयंकर फोडे (मेह पिडिका) निकलते हैं, उन को भी हितकर है। बात, रक्त भगन्दर को गुणकारी है। उत्तेजक और सुखदायक है। मूल्य १ बोतल २) रुपये॥

सारशारिष्ट मिश्रित—उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त उपदंश द्वितीय व तृतीय दर्जे में विशेष लाभदायक बनाने के लिये इस को मिश्रित किया जाता है। उपदंश का विष बैठ जाने से जब कोई न कोई रोग होता रहता है, फोडा, फुन्सी आदि निकलते रहते हैं, तो इस को सेवन करना चाहिये। कण्ठमाला, सन्धिवात, और उपदंश की पीडाओं को भी हितकर है। मूल्य फी शीशी ३ औन्स २) रुपया, नमूना ।=)

रक्तशोधक—यह केवल उश्बा (सारसपरीला) का सत्व है। प्रभाव लग भग वही है, जो सारशारिष्ट मिश्रित के हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना ।=) .

हबूब हयात—सर्व शरीर ही क्यों न गल गया हो, इस औषधि के सेवन से कांचन बन जाता है, कुष्ट तक को हितकर है। शरीर के घाव, आतशक के घाव इस से अच्छे होजाते हैं। जिन के शरीर बहुत खराब होगए हैं उन को दीजाती है। ४० दिन खानी चाहिये। मूल्य ४० गोली ४), रुपया नमूना ८ गोली ।॥)

सोज़ाक की औषधि—सोजाक में पहिले जलन व पीड़ा होती है। नितान्त कष्ट होता है। दूसरे दर्जे में पांव आनी आरम्भ होती है। कुरेह होजाता है, जलन धीरे २ बन्द होजाती है और केवल पीब जाती है वा तार से निकलते हैं, इस से भी बढ़ जावे तो तीसरे दर्जे में अवरोध होजाता है। मूत्र की नाली संकीर्ण होजाती है। कभी २ मूत्र रुक जाता है। तीसरे दर्जे में पहुंचा हुआ सोजाक बड़ी मुशकिल से दूर होसकता है। और जीर्ण होजावे तो जाता ही नहीं। सोजाक के वास्ते भी बहुत सी औषधियां तैयार रहती हैं। अवस्थानुसार दी जाती हैं, साधारणतया निम्न लिखित हैं:—

सोज़ाक औषधि नं० १—प्रथम दर्जे में अकसीर का काम देती है। २४ घण्टे के भीतर जलन दूर होती है। कष्ट कम होता है, थोड़े दिनों में पूर्ण लाभ होता है। यदि पीब भी हो और जलन भी साथ हो, तो इस को खाकर पहिले जलन दूर करनी चाहिए। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना ≈)

सोज़ाक औषधि नं० २—बड़े ही तजुर्बों के पश्चात् हमारा स्वयम् निर्माण कृत योग अकसीर सोजाक व कुरेह को है, जो कि प्रत्येक अवस्था में गुणकारी है। दाह, जलन हो, पीब हो, दोनों मिले हुए हो, सब की अकसीर अचूक औषधि है। शुक्रमेहादि को हितकर है। मूल्य ६० गोली ४), नमूना १५ गोली (५ दिन के वास्ते) १) रुपया॥

अकसीर दमाकुरेह—यह औषधि केवल कुरेह अर्थात् पीब जाने पर दी जाती है। एक ही दिन के भीतर पीब बन्द होनी आरम्भ होती है। इस के अतिरिक्त उपदंश को हितकर है। इस वास्ते जब सोजाक व उपदंश एक साथ हों तब भी हितकर है। दमा, खांसी आदि रोगों को दूर करती हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना ।)

नोट—भस्मों में से सीपभस्म, संगजराहतभस्म, फिटकड़ीभस्म, मोतीभस्म और पारदादि हितकर हैं॥

बवासीर की औषधि—यू तो बवासीर ६ प्रकार की होती है। परन्तु बडे दो ही भेद हैं। रक्तार्श व वातार्श। कभी पैतृक भी होती है, जो कष्ट साध्य है। साधारणतया निम्न लिखित औषधियां हैः—

अर्शौषधि नं० ३—यह खूनी व बादी दोनों को हितकारी है। और साधारणतः इस से आराम आजाता है। मूल्य ४० गोली २) रु०, नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ७—यह विशेष कर रक्तार्श को लाभदायक है। ७ दिन के भीतर रक्त बन्द होता है। और २-३ सप्ताह में पूरा आराम आता है। मूल्य ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ५—जब कि अर्श के कारण नितान्त कष्ट हो पीडा, दाह, जलनादि से मनुष्य व्याकुल हो, उस समय यह औषधि ऐसी शान्ति देती है, जैसे अग्नि पर पानी डालदें। मूल्य १), नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ८—इस गोली को घिस कर मस्सों पर लगाने से खाज, जलन, शोथ सब बन्द होता हैं, और मस्से मुरदा होजाते हैं। मूल्य ३२ गोली २) रुपया, मूना ।)

अर्शौषधि नं० ९, (अकसीर बवासीर व शीघ्रपतन)—औषधि बलवर्द्धक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि को लाभदायक है। विशेष कर रक्तार्श के लिए मूल्य ३० गोली ५), ६ गोली १) रुपया ॥

अर्शौषधि नं० १०—बवासीर खूनी बादी को विशेष कर जब कि कोष्ठबद्धता साथ बहुत हो अद्वितीय है। मूल्य २), नमूना ।)

अर्शकुठाररस—जब अर्श के साथ इतनी कोष्ठबद्धता हो कि मल कभी ठीक उतारता ही न हो, तो पहिले एक रेचन देनी बहुत हितकर होती है। यह एक अर्शविरेचन है। खूब दस्त होते हैं और अगले दिन से ही बवासीर को आराम मालूम होता है। मूल्य १६ गोली १) रुपया ॥

प्लीहोदरौषधि—म्लेरिया ज्वर अधिक देर रहने से तिल्ली बढ़ जाती है। और म्लेरिया चिर काल तक बना रहता है। फिर ज्वर हट जाने पर भी तिल्ली बनी रहती है। कभी उदर की अन्य खराबियों से तिल्ली बढ़ती है निम्न लिखित औषधियां प्रायः देते हैं :—

दवाई प्लीहा नं० २—यह औषधि उस समय दी जाती है, जब कि आमाशय निर्बल हो तिल्ली साधारणतः बड़ी हो, क्षुधा कम लगती हो, मात्रा ६ गोली नित्य। मूल्य २४ गोली २), नमूना ।)

प्लीहोदरौषधि नं० ३—पौष्टिक है, चेहरे के रंग को शीघ्र लाल करती है। बल को बढ़ाती है। अग्नि सन्दीपन है, म्लेरिया के पुराने कीटाणु दूर होते हैं। सब प्रकार की तिल्ली दूर होती है। मात्रा २ रत्ती, मूल्य ६ माशा ४) रुपया, १॥ माशा १) रुपया ॥

प्लीहोदरौषधि नं० ४—सब प्रकार के प्लीहा के वास्ते हितकर है। प्रायः २० दिन में आराम आता है। साधारणतः यही दी जाती है। नमूना ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

प्लीहोदरौषधि नं० ५—जबकि प्लीहा के साथ कोष्टबद्धता हो, या तिल्ली बहुत ही पुरानी और बढ़ी हुई हो, तो यह औषधि गुणदायक है। उचित यह है, कि उपरोक्त किसी भी औषधि के खाते समय इस औषधि को जारी रक्खा जावे। रात्रि को सोते समय एक गोली खाने से प्रातः खुलकर शौच आवेगा और तिल्ली कम होती जावेगी। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना ।)

अकसीर हाज़मा—आमाशय सम्बन्धी सर्व रोगों की अचूक औषधि है। आहार पच कर पूरा बल प्रदान करता है। खाया पिया सब पच जाता है। क्षुधा बढ़ती है। आज कल के दिनों में जबकि पक्वाशय सम्बन्धी व्याधियां

बहुत बढ़ी हुई है लग भग सब अमीर मन्दाग्नि ग्रस्त दिखाई देते हैं। यह औषधि प्रसाद प्रमाणित होती है। मूल्य ६० गोली २) रुपया, ३० गोली १) रुपया, नमूना।)

पाचक चूर्ण—उदर पीड़ा गुड़गुड़ाहट, वमन, विशूचिका, अतिसार आदि रोगों को हितकर है। पाचन शक्ति खूब बढ़ती है। अन्य पाचक चूर्ण इस के सन्मुख तुच्छ हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना।)

पाचनवटी—शूल, पेट की वादी, गुड़गुड़ाहट, अफारादि को हितकर है। क्षुधा वर्द्धक है, कोष्टवद्धता को दूर करता है। प्रत्येक घर में वर्तमान रहनी चाहिये। मूल्य ६४ गोली १) रुपया, नमूना ८ गोली =)

प्राणदाता, (विशूचिका की अकसीर औषधि)—यू ता अमृत धारा भी विशूचिका के वास्ते अमृत है, तथापि ऐसे भयकर रोग के वास्ते किञ्चित् अन्य औषधियां भी हमेशा तैयार रखनी चाहिये। यह हमारी अनुभूत औषधि है। और ५ घण्टे के भीतर ही इस से प्रायः आराम आजाता है। वमन विरेचन बन्द होकर ज्वर होजाता है। मूल्य १५ गोली १), सदैव पास रक्खो, विशेष कर इस रोग के प्रकोप के दिनों में ॥

रेचक वटी (गोली जुलाब)—यह गोलियां जुलाब के लिए अनुपम है। एक दो गोली रात को सोते समय खाने से प्रातः समय खुलकर शौच हो जाता है। एक दस्त आता है। कोई कष्ट नहीं होता। शरीर सुखमय होजाता है। १०—१२ गोलियां खाने से ८ दस जुलाब खुलकर होजाते हैं, तीनों दोषों के वेग को दूर करती है। मूल्य १०० गोली १), नमूना =)

गन्धार रस—कठिन से कठिन और जीर्ण से जीर्ण अतिसार, मरोड़, संग्रहणी, आदि थोड़े दिनों में दूर। प्रायः एक ही मात्रा से अतिसार मरोड़ादि को आराम आता है। विशूचिका के वमन विरेचन को आराम होता है। अतिसार व मरोड़ के वास्ते ऐसी हितकर अन्य औषधि न होगी। मूल्य १ तोला १) रुपया, नमूना =)

हयातअफ़ज़ा—हृदय की निर्बलता और धड़कन के वास्ते अनुपम औषधि है। २८ दिन में आराम आता है। २८ दिन की मात्रा का मूल्य २) रुपया, नमूना ।≈)

मण्डूरवटिका—कामला, श्वेतवर्णता, पाण्डु रोग, यकृत की निर्बलता, के वास्ते रामबाण है, शुद्धरक्त उत्पन्न होकर रंग लाल होता है। वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। मूल्य १६ गोली १)

सुरमा नं० १—यह सुरमा दैनिक सेवन के वास्ते है। नेत्रों को प्रायः रोगों से सुरक्षित रखता है। दृष्टि शक्ति स्थिर रखता है। और शीतलता प्रदान करता है। मूल्य १ तोला ।।) नमूना केवल ‑)

सुरमा नं० २—नेत्र रोग यथा पानी जाना, नया फोला, जाला, कुकड़े, पुड़वाल, आदि को दूर करता है। मूल्य १ तोला ।।।) नमूना ‑)।।

सुरमा नं० ३—यह सुरमा फोला के वास्ते विशेष रूप से हितकर है। धुन्ध, जाला, कुकरों आदि को बहुत शीघ्र दूर करता है। मूल्य ८) रुपये, तोला, ६ माशा ४), नमूना १)

सुरमा नं० ४—पुड़वालों के लिए विशेष रूप से हितकर है। पुड़वालों को उखाड़ २ कर लगाया जाता है जो फिर नहीं उगते। मूल्य ४) रुपये तोला, ६ माशा २), नमूना ३ माशा १)

भीमसेनी कर्पूर—वैद्यक का प्रसिद्ध योग है। नेत्र के सर्व रोगों को दूर करता है। ढलका, शोथ, पीड़ा, गरमी, दाह, खुजली, धुन्ध, जाला, पानी बहना, ललाई सब दूर होती है। अव्वल दर्जे का दृष्टि शक्ति वर्द्धक है। इस के अतिरिक्त और बहुत से काम आता है। उत्तेजक और लकवर्द्धकादि औषधियों में पड़ता है। उचित तो यह है, कि जहां किसी योग में कपूर लिखा हो इस को डालें तभी वह योग पूरा लाभ देगा। मूल्य १५) रुपया तोला, ३ माशा ३।।।), १ माशा १।)

नूराञ्जन—यह सुरमा अत्यन्त दृष्टि शक्ति वर्द्धक है। विद्यार्थी, क्लर्कादि यदि इसका सेवन रक्खें तो कभी नेत्र निर्बल न होंगे, और न कभी ऐनक की आवश्यकता होगी। दृष्टि क्षीणता के वास्ते इसके समान कोई औषधि न होगी। २ सप्ताह के सेवन के पश्चात् ही ऐसा ज्ञात होता है, कि नई शक्ति आगई है। मूल्य २०) तोला, ३ माशा ५) रुपये, नमूना ६ रत्ती १।)

कर्ण तैल—कर्ण रोग यथा दर्द, पीब, घाव, कानों में साएं २ आदि शब्द आना, श्रवण शक्ति हीनता को हितकर है। मूल्य १) २ ड्राम, नमूना।)

अनुपम नस्य—यह निस्वार अद्वितीय है, जो सदैव पास रखने योग्य है। इस निस्वार के लेते ही शिखदना, आधा शीशी, दाढ़ दर्द, कर्ण पीड़ा, मुखशोथ, नेत्र पीड़ा, प्रतिश्यायादि दूर होते हैं, मृगी, सन्निपात तक को हितकर है। मूल्य १) तोला, नमूना।) इस से छींकें कभी आती हैं, कभी नहीं आतीं॥

मञ्जन नं० १—दन्त रोगों यथा रक्त स्राव, पानी निकलना, पानी लगना, दन्तपीड़ा, मुखदुर्गन्ध को हितकर है। दांतों को स्वच्छ करता है मूल्य।), नमूना ‑)

मञ्जन नं० २—विशेष कर दांतों की सफाई के लिए बनाया गया है। इस के मलते रहने से दांत मोतियों के समान चमकने लगते हैं। जिन के टारटर (मल) जम गया हो वह उसे उतार कर मलते रहें तो फिर न जमेगा मूल्य।) नमूना ‑)

नकसीर की औषधि—चाहे कितनी देर से नकसीर जाती हो, इस के कुछ दिन नाक में डालने से बन्द होजाती है। मूल्य॥)

बाल उड़ाने की अनुपम औषधि—**इस को पानी में घोल कर लगाने से एक मिण्ट के भीतर कठोर से कठोर और कोमल से कोमल स्थान के बाल जड़ से दूर होते हैं। जिस २ मंगवायी प्रशंसा की है। मूल्य फी डबिया।≈) नमूना ‑)॥**

बाल दूर करने की औषधि, (अर्थात् बाल आयु पर्यन्त न उगें)—बाल दूर करने की औषधि के मलने से फिर उमर भर बाल नहीं उगते। बालों को साफ करके इस को लगाया जाता है इस से आगामी बाल निकलने बन्द होते हैं। मूल्य १।।) फी० शीशी। नमूना नहीं।

बालों का सुगन्धित तैल—बालों को नरम व मुलायम करता है। बढ़ाता है, शिर को शीतल रखता है, बाल सुन्दर, स्याह, चमकीले और नरम रहते हैं। दैनिक लगाया करो, मूल्य २ औन्स १), नमूना ।)

बाल उगाने की औषधि—इस औषधि के लगाते रहने से जिस जगह चाहो बाल उत्पन्न कर सकते हो, जब बारीक बाल उत्पन्न होजावें तो मूछें बढ़ाने का तैल लगाते रहो बढ़ेंगे। मूल्य १) प्रति टिकिया।

मूछें बढ़ाने का तैल—यह तैल न केवल मूछों को वरंच प्रत्येक स्थान के बालों को बढाता है, उन की स्याही स्थिर रखता है। आहा! रोबदार मूछों वाला चेहरा कैसा भला मालूम होता है। मूल्य फी शीशी ३ औन्स २), नमूना ।)

उबटन—इस उबटन को स्नान समय मलने से चेहरे के बुरे दाग, कील छाइयांदि दूर होकर चेहरा साफ होता है। झुरियां नहीं पडतीं, चेहरे का रंग दिन प्रति दिन निरखता जाता है, सूरत मनमोहिनी होजाती है। विलायत की लेडियां इस को लगाकर विस्मित होती हैं, कि एक भारतीय औषधि उन की हज़ारों ऐसी औषधियों की तुलना में उतम है! मूल्य केवल १), नमूना ≈)

सौन्दर्य्य बर्द्धक—यह स्नान के पश्चात् सेवन किया जाता है। एक प्रकार का तैल है, जो चेहरे को चमकाता है, और दाग कीलादि को दूर करता है। यदि स्नान से पहिले उबटन और स्नान पश्चात् सौन्दर्य्य बर्द्धक का सेवन हो तो बस कहना ही क्या है। मूल्य फी शीशी ।।।≈) नमूना ≈)

सौन्दर्य्यमलाई—जिस स्त्री को एक बार दे दो सदैव इस की इच्छा करेगी। नरम मलाई हाथ पर रख कर चेहरे पर मली जाती है। चेहरे को नरम, कोमल, और सुन्दर करती है। छांई आदि दूर होती है। क्षौर के पश्चात् या किसी जगह के रोम दूर करके इस को लगादो तो भी रेशम की तरह नरम होजाती है। मूल्य २) नमूना ॥)

नोटः—सौन्दर्य्य विषयक एक पृथक सूची तैयार होने वाली है। यहां पर केवल किञ्चित् का वर्णन किया जाता है॥

मुख रक्षक—मुख के छालों के वास्ते हितकारी है। चाहे बालकों को हों वा बड़ों को, मूल्य ॥) नमूना ।)

पान मसालह—पान खाने वाले श्रीमानों को यात्रा में जहां पान नहीं मिलता नितान्त कष्ट होता है। इस के अतिरिक्त हम ने देखा है कि बाज़ारी पान विक्रेता प्रायः मलिन बर्तनों आदि में सामग्री रखते है, इस लिए यह मसाला बनाया गया है। एक पान पर चुटकी रख दीजिए पान तैयार है। वैसा ही रंग देगा, वैसा ही स्वाद देगा, इस के अतिरिक्त मुख दुर्गन्ध को दूर करेगा, स्तम्भन बढावेगा, दांतों को दृढ करेगा, कफादि को शुष्क करेगा, मूल्य १), रुपया नमूना ≶)

ताम्बूल वटी—वह लोग जो पान के बड़े २ पत्र मुख में डालने के बिना पान का आनन्द लेना चाहते हैं, या यात्रा मे जहां पान ले जाना भी कठिन है इन गोलियों को खावें, एक गोली मुख में रखने से पान का मज़ा भी आवेगा रंग भी होगा, शेष ऊपरि लिखित गुण है। मूल्य ६० गोली १) नमूना ≶)

स्वर वर्द्धक—वकीलों, बेरिस्टरों, लेकचरारों, उपदेशकों, पण्डितों, रागियों, स्कूलमास्टरों, आदिकों के वास्ते जिन को बोलने का काम हैं, यह गोलियां रखनी चाहिये। यथावश्यक गोली मुख में रखने से गला जल्दी नहीं

बैठता, बैठा हुआ जल्दी खुलता है। और कुछ दिन लगातार खाने से कण्ठ सुरीला होजाता है। मूल्य ३० गोली २), नमूना ।)

दद्रुघ्न औषधि—इस के कुछ दिन लगाने से दाद चाहे किसी जगह हो, आराम आजाता है चम्बल को भी हितकर है। बहुत नरम जगह पर जबकि खुजाया हुआ हो, थोड़ी देर लगती है। दूसरी जगहों पर नहीं लगती, दाग, धप्पड कुछ नहीं पडता, वस्त्र खराब नहीं होते। इस को लगाकर कोई काम बन्द नहीं करना पडता। मूल्य १) ४ डराम, नमूना १ डराम ।)

रोगन मसीहा—जीर्ण से जीर्ण नासूर को दूर करता है, भगन्दर को हितकर है। इस के लगाने से प्रथम सब पीब निकल कर भीतर से भरना आरम्भ होता है। अन्य सर्व प्रकार के घावों को भी बहुत गुणकारी है। इस के खाने से कुरह को लाभ होता है। आन्तरिक घावों को खाने से भरता है। मूल्य १ औन्स ३ रुपया, ४ डराम १॥), नमूना १ डराम ।≈)

सूर्य्य घृत—इस के शरीर पर मलने से सब प्रकार की खाज तर व खुष्क दूर होती है। फोडा फुन्सी जिन को कई प्रकार के निकलते रहते हैं उन को रसायन है। गलित शरीर भी सर्वथा स्वच्छ होजाते हैं। चर्मज रोगों को अत्यन्त लाभ दायक है। मूल्य २ औन्स १) रुपया, नमूना ४ डराम ।)

टिकिया छीब—इस को गोमूत्र में या अजा दूध में घिस कर लगाने से छिम्ब, छीब, श्वेत कुष्ट दूर होजाता है। मूल्य ॥) टिकिया ॥

प्लेग की औषधि—७ गोली तक खाने से प्लेग रोग जाता रहता है। यदि साथ अमृतधारा भी हो तो ९० प्रति सैकडा आराम आता है। यदि प्रति मास कुछ खा छोडा करें तो प्लेग का भय जाता रहता है। मूल्य ४० गोली केवल ॥) है ॥

खांसी की गोलियां—इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से नई खांसी रुक्ष हो वा स्निग्ध थोडे दिनों में लाभ होता है। मूल्य ६० गोली १), नमूना ≈)

जया गुटिका—यह गोलियां कफज, कास, श्वास के वास्ते अति गुणकारी है। पुरानी खांसी इन से दो तीन सप्ताह में जाती है। ज्वर साथ हो तो भी दी जा सकती है। विषमज्वर को भी हितकर है। मलभेदक है। उदर पीडादि को भी हितकर है। मूल्य ३२ गोली २) नमूना ।)

अकसीर वदन—गले व छाती के सर्व रोग, कास, श्वास, गले पड़ना आदि को हितकर है। जीर्णज्वर रक्तवमन राजयक्ष्मा की खांसी में, रक्त जाने मे, थोड़े दिनों में पूरा गुण करती है। इस लिये अन्य औषधियों के साथ दिक्, सिल, में इस को अवश्य सेवन करना चाहिये। निर्बल बालकों को बलवान बनाती है। दुर्बल शरीर वालों को स्थूल। मूल्य १॥) शीशी ॥

ज्वरारि अभ्रक—यह गोलियां विषमज्वर के वास्ते अनुपम व अद्वितीय है। पुराना ज्वर और विशेष कर वह ज्वर जो चढ़ता उतरता हो, प्रायः पहिले दिन छोड़ देता है। त्रितीयक, चौथिया, दैनिक आने वाला हो, जिस दिन खावे उसी दिन नहीं आते। मूल्य १६ गोली १), ८ गोली ॥) आना

ज्वरार्क—म्लेरिया, जूड़ी, या मौसमी किसी प्रकार का हो तीन दिन के भीतर जाता रहता है। म्लेरिया कृमि को नष्ट करने में रामबाण है। दैनिक आने वाला, नित्य दो बार आने वाला तीया, चौथिया, तिल्ली सब को दूर करता है। मूल्य ॥) शीशी, जिस में युवा की ३ दिनकी मात्रा होती है॥

त्रितीयक ज्वर तन्त्र—इस औषधि को ज्वर चढ़ने से १ घण्टा पहिले मध्यमा उंगली पर बांध देने से ज्वर नहीं चढ़ता मूल्य ॥)

नोटः—और बाकियों औषधियां ज्वर सम्बन्धी तैयार होती रहती है। वैद्यक में इस के सम्बन्धी सैकड़ो रस हैं ॥

पीडा नाशक—इस की एक ही पुड़िया के सेवन से चाहे किसी प्रकार की नसों व पट्ठों की पीडा हो जाती रहती है। शिर पीडा, कटिपीडा, गुल्फ, रान या किसी जगह की भी पीडा हो १५ मिनट में आराम। पुरानी

पीडा हो तो कुछं दिन सेवन करनी चाहिये। अन्यथा पहिली पुडिया से ही आराम होजाता है। जिन को दर्द शिर का रोग हो इस को अवश्य अपने पास रक्खा करें। एक पुड़िया ५ मिनट में पीड़ा बन्द कर देगी। मुल्य १, नमुना ।)

ब्राह्मी अरिष्ट—स्मरणशक्ति के वास्ते इस से बढ कर कोई औषधि न होगी। मस्तिष्क की निर्बलता, शिरपीड़ा, पुरुषों के वीर्य्यसम्बन्धी रोग, स्त्रियों के रजसम्बन्धी रोग, शुक्रमेहादि को हितकर है। मलभेदक है। थोड़े दिनों में मस्तिष्क दिव्य हो जाता है। वाणी मधुर हो जाती है। गान विद्या और काव्य इस से शाघ्र आती है। मुल्य २) रुपया शीशी ४ औन्स ॥

वृद्धिबाधिका बटिका—यह गोलियां सब प्रकार की अण्डवृद्धि को हितकर हैं, नल उतरने को एक दो दिन में आराम देती हैं। अण्डशोथ और अण्डपीड़ा को भी हितकर है, अंत्र वृद्धि (आंत उतरने) को हितकर है, किन्तु आराम दो चार मास में आता है। यह गोलियां श्लीपद को भी हितकर हैं। मूल्य ६० गोली २।), १५ गोली ॥=)

अफीम निवारक—इन गोलियों के खाने से अफीम छूट जाती है। सैकड़ों मनुष्य छोड चुके हैं। मूल्य ६० गोली १॥) जो रत्ती तक अफीम खाते है उन के वास्ते ६० गोली पर्य्याप्त हैं। अधिक खाने वाले २-३ डबिया यथा आवश्यक मंगालें ॥

मोटा होने की औषधि—कतिपय लोग कोई विषेश रोग न होने पर भी और अच्छा आहार खाने पर भी मोटे नहीं होते, वह इस को सेवन किया करें। मूल्य आध सेर ४), नमूना आध पाव १) रुपया ॥

वातकुलान्तकरस—यह गोलियां मृगी के वास्ते रामवाण हैं। प्रायः १ मास के भीतर आराम हो जाता है। इन गोगियों के साथ २ नाक में डालने के वास्ते अमृतधारा रखनी चाहिये। मूल्य ३० गोली ५), १२ गोली २) बालकों को ¼ से अर्द्ध गोली तक देना चाहिये ॥

दवाई गंठिया (संधिवात)—जोडों की पीडा, शोथ, सन्धिवात अर्द्धांगवात, आर्दवातादि को हितकर है। मूल्य ६० गोला २) नमूना ॥)

अमृत की गोलियां—कफज कास, श्वास, पेटदर्द, शीतज्वर, नेत्रपीडा, नेत्ररोग, नाखूना, सब प्रकार का विष, हड्डी का ज्वर, बात, सन्निपात, दन्तरोग, कोष्ठबद्धता, बवासीर, बन्ध्यापन, सर्पदंश, विच्छूदंश, हलका, उदरकृमि, मूत्रबद्ध, आमाशय की निर्बलता, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र सन्धिवात, उपदंश, शुक्रमेह, मधुमेह, मुखगन्ध, दर्द शिर, कामला, जलोदर, धातुक्षीणता मृगी, श्वेत कुष्ठ, नासूर, गजशिर, अतिसार, मरोड, कर्णपीडा, दन्तपीडा, अन्धराता, आर्तवबद्ध, भिडादि का दंश, शरीर की शिथिलता, गुदभ्रंश, शीतदोष, नाभिपीडा, तमक श्वास, अश्मरी, छब, प्रतिश्याय, मूत्रातिसार, बालकों का डब्बा रोग, तृषा की अधिकता इत्यादि रोग दूर होते है। और पांच सात गोलियां इकट्ठी देने से बढिया रेचन का काम भी देता है। मूल्य ६० गोली १) रुपया नमूना ≈)

हकीम !

दुनियां में अनूपम मेडीसन बक्स (औषधियों का डब्बा)

अनुपम इस वास्ते कि केवल ३ औषधियां है। जेब में रक्खा जासकता है और केवल ३ औषधियों से सर्व रोग दूर होने का ठेका मिलता है, इस वास्ते इस का नाम हकीम रक्खा गया है। अमृतधारा एक अनुपम औषधि है, इस के साथ इस में एक शीशी गन्धार रस और एक शीशी अमृत की गोलियां हैं। प्रशंसा इन की पीछे लिखी गई है। अमृतधारा ही पर्य्याप्त है। फिर जहां आवश्यकता पड़े इन को साथ मिला देने या पृथक सेवन करने से गजब ही तो होगा। मूल्य तीनों का ४॥) है, परन्तु इस को सर्व साधारण में प्रचलित करने के वास्ते केवल ४) रुपये मूल्य रक्खा है। बक्स मानो मुफ्त है॥

पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य
रचित
प्रत्येक पुरुष के पढ़ने योग्य
वैद्यक पुस्तकें

सोजाक का वर्णन—तत्स्वबंधी व्याख्या उस का कारण निदान और चिकित्सा बहुत उत्तम रीती से अंकित है मूल्य ।॥)

शीघ्रपतन—समस्त दुनियां में ९९ प्रति सेकड़ा से भी अधिक इस रोग में ग्रस्त हैं, कारण यह है कि बुरे व्यसन सम्पूर्ण जगत् पर अधिकार किये हुए हैं, इस पुस्तक में उन के पूर्ण व्याख्या की गई है, और पश्चात् सविस्तर चिकित्सा और सर्व प्रकार के योग भी दिए गए हैं, ताकि प्रत्येक धनी व निर्धन लाभ उठा सकें मूल्य ।=)॥

डाक्टर लूईकोहनी के चार स्नान—की पूरी विधि बड़ी योग्यता से संक्षिप्त करके लिखने के पश्चात् उन से प्लेग की चिकित्सा कैसे करनी चाहिये, इसका भी वर्णन किया गया है, मूल्य =॥

ब्रह्मी—आज कल ब्रह्मा के तन्द्रा नाशक, मस्तिष्क पैष्टिक, स्मरण शक्ति बर्द्धक प्रमेह नाशक आदि होने को सभी जानने लग गए हैं, और ब्रह्मी बहुत सेवन की जारही है । इस में ब्रह्मी का पूरा वर्णन करके सेवन करने के असंख्य उपाय लिखे गए हैं, मूल्य =)॥

प्रसूत काल—यह पुस्तक घर में मौजूद होनी चाहिये और प्रत्येक घर में पढकर या सुनाकर इस के सम्पूर्ण लेख हृदयस्थ करा देने चाहिये । प्रत्येक दाया को इस से अवगत होना आवश्यक है । इस में २३ लाभ दायक चित्र हैं । मूल्य ॥=)

विज्ञापन ॥

हमने विलायत से एक टिकिया बनाने की मशीन मंगवाई है । इसी कारण हमारे हां गोलियों के स्थान में टिकियां बनने लग गई हैं । सो यदि सूची में गोली लिखी देखें और पहुंचें टिकियां, तो इस का विचार न करें ॥

हिन्दी देशोपकारक पाक्षिक वैद्यक पत्र

जिस के कविविनोद वैद्यभूषण श्रीमान पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य मालिक अमृतधारा सम्पादक हैं, लाहौर नगर से प्रत्येक अंग्रेजी मास की १ व १५ तारीख को निकलता है, जिस को कुछ भी वैद्यक से प्रेम हो, जो स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों को जान सदा आरोग्य रहना चाहें, जो अपनी, अपने कुटम्ब और मित्रों की बिना फीस प्रश्न भेज कर और उत्तर लेकर चिकित्सा करनी चाहें, जो दिनचर्य्या, रात्रिचर्य्या, ऋतुचर्य्या के नियम जानना चाहें, जो रस, उपरस, धातु, उपधातु के ज्ञान को प्राप्त करना चाहें, शारीरिक व्याधियों और वाजीकरण के अनुभूतयोग लेना चाहते हैं वह देखते ही ग्राहक बन जाते हैं, यदि आप ने देशोपकारक को नहीं देखा तो एक कार्ड लिख कर अवश्य मंगावें। वार्षिक मूल्य २॥), षाणमासिक १।), और त्रिमासिक ॥=) है॥

वैद्यामृत ॥

वैद्यक सिद्धान्तों के जानने की रुचि उत्पन्न करने के वास्ते यह पत्र जारी किया गया है, इस वास्ते प्रति मास बहुत सा नमूना स्वरूप भी भेजा जाता है, जो लोग पक्के ग्राहक बनना चाहें वह ॥) वर्ष भर का मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेज दें, या ॥-) का वी. पी. करने की आज्ञा दें, इस से अधिक सस्ता और क्या हो सकता है ?

मिलने का पता:—

मैनेजर देशोपकारक, अमृतधारा भवन लाहौर ॥